ISSN (Print): 3048-6459

# IEARJ

## INTERNATIONAL EDUCATIONAL APPLIED RESEARCH JOURNAL

**Peer Reviewed International Journal**

**A Multi-Disciplinary Research Journal**

Volume : 02 | Issue : 05 | May 2025

iearjc.com

Editor,
INTERNATIONAL EDUCATIONAL APPLIED RESEARCH JOURNAL
Indore - 452020. (Madhya Pradesh, India)
Email Id : info@iearjc.com | Website : iearjc.com | Contact No : +91-7974455742

INTERNATIONAL EDUCATIONAL APPLIED RESEARCH JOURNAL
PEER REVIEWED JOURNAL- EQUIVENT TO UGC JOURNAL

**ISSN (Print) 3048-6459 & ISSN (Online) 2456-6713**

**Volume: 02 & Issue: 05**

**Month: May-2025**

**Starting Year of Publication: 2024**

**Frequency Year of Publication: Monthly**

**Format: Print Mode**

**Subject: Multidisciplinary**

**Language: Multiple Language (English & Hindi)**

**Published By:**

**International Educational applied Research Journal**

**Publisher's Address:**

**56, Sarthak vihar, Mirjapur, Indore-452020, and Madhya Pradesh**

**Printer:**

**International Educational applied Research Journal**

**Copyright:**

**International Educational applied Research Journal**

| Editor Board | | |
|---|---|---|
| **Editor in Chief** | | |
| **Name** | **Designation** | **Affiliation/Address** |
| Dr. Deependra Sharma | Associate Professor | GMERS Medical Collage, Valsad, Gujarat<br>Email Id: info@iearjc.com<br>Cont. No.8980038054 |
| **Emeritus Editor** | | |
| **Name** | **Designation** | **Affiliation/Address** |
| Dr. Prasanna Purohit | Associate Professor | Department of Microbiology and Botany,<br>Dr. A. P. J Abdul Kalam University Indore M.P<br>Email Id: purohit_prasann@yahoo.com<br>Conct. No.: 735401777 |

| Executive Editor | | |
|---|---|---|
| **Name** | **Designation** | **Affiliation/Address** |
| Dr. Rina Sharma | Prof & HOD Obs and Gynae | Principal<br>Autonomous state medical college,<br>Amethi, U.P<br>E-mail<br>ID: principalgmcamethi@gmail.com |
| Dr. Manish Mishra | Associate Professor Biochemistry | Rajarshi Dasharath Autonomous State Medical College, Ayodhya, U.P<br>Conct Number:9452005795,8887858880<br>Email Id: drmanishreena@gmail.com |
| Dr. Pawan Goyal | Professor and Head Department of Physiology | Kiran Medical College, Surat, Gujarat<br>E-mail Id:<br>pawan.goyal@kiranmedicalcpllege.com |
| **Asst. Editor** | | |
| **Name** | **Designation** | **Affiliation/Address** |
| Dr. Ashal Shah | Lecture | Department of Pharmacology, GMERS Medical college halarroad, nanakwada, valsad-396001<br>Gujarat<br>E-Mail Id: aashal_167@yahoo.co.in<br>Conct No. 7990955609 |
| Dr. Boski Gupta | Lecturer | Department of Dentistry<br>GMERS Medical college, Gandhinagar, Gujarat |

| Technical Editor (Language and Reference) | | |
|---|---|---|
| **Name** | **Designation** | **Affiliation/Address** |
| Mitasha Purohit | Technical Editor | Editor Office Indore M.P India |
| Vedant Sharma | Technical Editor | Editor Office Indore M.P India |

| National Editorial Board | | |
|---|---|---|
| **Name** | **Designation** | **Affiliation/Address** |
| Dr. Amit Jain | Head R&D | Veer pharmachemJhagadia Bharuch Gujarat<br>E-mail ID: amit.jain@veerpharmachem.com<br>Conct. No. 7020692540 |
| Dr. Jimi B. Hadvaid | Physician | Department of Homoeopathic (Enlisted) Physician, Ahmedabad-380001 |
| Dr. Deepak Saxena | Director | IIPHG Ga dhinager Gujarat Email ID: director@iiphg.org & ddeepak72@iphg.org |

| International Editorial Board | | |
|---|---|---|
| **Name** | **Designation** | **Affiliation/Address** |
| Dr. Sukhprit Purewal | Medical Laboratory Program Instructor | 1300 Central Parkway West, Suite 400, Mississauge, ON L5C 4G8 CDAANA<br>E-mail ID: s.purewal@oxfordeduca |
| Satya Dev Sharma | Director of Engineering | Address: Director of Engineering IVANTI Utah, USA.<br>E-mail ID: Satyadev.sharma@ivanti.com |
| Dr. Prabhjot Singh | Advisor | Advisor, Health Surveillance, Disease Prevention and Control<br>Pan American Health Organization/World Health Organization Office for Barbados, Eastern Caribbean Countries and the French Departments<br>E-mail ID singhpra@paho.org |

| Publisher | | |
|---|---|---|
| **Name** | **Designation** | **Affiliation/Address** |
| Mitasha Purohit | Technical Editor | Editor Office Indore M.P India |
| **Editor Office Address** | | |
| 56, SarthakVihar, Mirjapur, Indore M.P. PIN-452020 | | |
| **Conct. No.** | | |
| +91-7974455742, 91-8980038054 \| E-mail Id: info@iearjc.com | | |

# INDEX


| S. No. | PAPER TITLE AND AUTHOR NAME | PAGE No. |
|---|---|---|
| 1. | रघुवीर सहाय के काव्य में संवेदना की प्रासंगिकता | 1 |
| 2. | रघुवीर सहाय के काव्य की सामाजिक उपादेयता | 9 |
| 3. | शमशेर बहादुर सिंह के काव्य मे लोकोत्तर युगबोध का सामाजिक प्रभाव | 18 |
| 4. | शमशेर बहादुर सिंह के रचना संसार में युगबोध और शिल्प का समन्वय | 27 |
| 5. | जोधपुर और आसपास के क्षेत्रों में कला, संस्कृति और इतिहास का संगम | 35 |
| 6. | Dalit Feminist Voices in the Indo-Pacific: Intersections of Caste, Gender, and Regional Identity | 57 |
| 7. | The importance of machine learning in the computer application | 64 |
| 8. | Foreign Investment Policy and the Manufacturing Sector: A Case Study of India | 75 |
| 9. | भारत की साइबर सुरक्षा व रणनीति | 89 |
| 10. | रूस - यक्रेन युद्ध व भारतीय अर्थव्यवस्था पर प्रभाव | 95 |

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

# रघुवीर सहाय के काव्य में संवेदना की प्रासंगिकता

**अनुष्टुप चंसौलिया**

**शोधार्थी, विषयः हिंदी ,जीवाजी विश्वविद्यालय,ग्वालियर (मध्य प्रदेश)**

**Paper Rcevied date**

05/05/2025

**Paper date Publishing Date**

10/05/2025

**DOI**

https://doi.org/10.5281/zenodo.15384097

IMPACT FACTOR

5.924

## ABSTRACT

मूल-संवेदना ही कविता की आत्मा होती है। यह उन व्यक्तिगत या समष्टिगत अनुभूतियों की अभिव्यक्ति है, जिन्हें आज के कवि महसूस करते हैं। इसका संबंध जीवन की उन यथार्थ स्थितियों से है जिनके भीतर साधारण से साधारण मनुष्य भी साँस लेता और उससे उत्पन्न समस्याओं का साक्षात्कार ही नहीं करता बल्कि उनसे जूझने के लिए विवश भी है।

संवेदना का शाब्दिक अर्थ है हृदयानुभूति । अर्थात आंतरिक भाव को महसूस करना। इसी तरह मूल- संवेदना अर्थात संवेदना की गहराई को समझना उसे महसूस करते हुए अपने विचारों की अभिव्यक्ति देना । सभी कवि संवेदनशील होते हैं तभी तो वे उनकी गहराई को जानकर अपने शब्दों की अभिव्यक्ति देते हैं।

उन्होंने अपने साहित्य को भूमिकाओं पर अवस्थित किया है। पहली भूमिका सीधे संघर्ष की है। दूसरी भूमिका है अमूर्त प्रतिरोधी शक्तियों की, जिसमें वैज्ञानिक - विश्लेषण करते हुए रघुवीर सहाय कहते हैं कि जीने के लिए संघर्ष करने वाला संस्कारबद्ध या संस्कारों का शिकार आदमी खुद को मुक्त करता है। आज का कवि समग्र जीवन को उसकी सारी अच्छाइयों, बुराइयों सहित कविता में प्रस्तुत करता है। युग की आवश्यकता के अनुरूप उसे ढ़ालता है। आज की कविताओं में संवेदना नहीं, स्थितियाँ उभारी जा रही हैं, वर्णन, विश्लेषण, अवलोकन का स्पष्टीकरण नहीं बल्कि अनुभूति के अभिव्यक्तिकरण पर अतिरिक्त बल दिया जा रहा है। पूर्ववर्ती कविता की भाँति ही इसकी मूल संवेदना में वस्तुस्थित, घटना, 'चरित्र' या 'वातावरण' में से किसी एक में नहीं बल्कि इन सबकी मिली जुली गूंज में विद्यमान है जो हमारे संपूर्ण संघर्षो, संपूर्ण चेतना और साथ ही हमारी संपूर्ण बौध्दिकता को एकोन्मुख बना देती है ।

मुख्यबिन्दुः साधारण, यथार्थ, साक्षात्कार, अभिव्यक्ति, संवेदनशील, स्पष्टीकरण आदि ।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

भाषा एवं साहित्य का प्रश्न मानव इतिहास से गहराई के साथ जुड़ा हुआ है । भाषा अभिव्यक्ति का माध्यम है। भाषा मानव की महान उपलब्धि है। वह हमारे अनुभव और ज्ञान का पर्याय है। इसी भाषा ने अन्य प्राणियों से मनुष्य को श्रेष्ठ बनाया था। भाषा के साथ ही कविता का जन्म हुआ। साहित्य की सभी विधाओं में से सबसे पहले कविता का उद्भव हुआ था। मनुष्य के हृदय से सुख-दुख आदि भावातिरेक के क्षणों में कविता फूट निकली। कविता अपने आसपास के परिवेश से उत्पन्न होती है और वह उसी परिवेश की परिभाषा देने का प्रयास करती है। डॉ. नगेन्द्र कविता की परिभाषा देते हुए लिखते हैं- "रमणीय भाव, उक्ति- वैचित्र्य और वर्ण लय संगीत तीनों मिलकर कविता का रूप धारण करते हैं। कविता संवेदना और जीवन मूल्यों की अभिव्यक्ति का उत्तम साधन है।"

कवि पढ़िऐ गीता नामक कविता में संवेदना के महत्त्व को व्यक्त किया है-

पढ़िये गीता

बनिये सीता

फिर इनमें सबसे लगा पलीता

किसी मूर्ख की ही परिणिता ।

निज घरवार बसाईये ।।

स्वाधीनता की प्राप्ति के पश्चात् हिन्दी कविता की उपलब्धियाँ महत्वपूर्ण रही हैं। इस युग की कविता में वस्तुगत एवं शिल्पगत नवीनता दृष्टिगोचर होती है। इस युग के हिन्दी काव्यकारों की दर्शन, मूल्य - दृष्टि और विचारों में नवीनता लक्षित होती है। इस युग के बहुमुखी प्रतिभाशाली रचनाकार रघुवीर सहाय जी ने अपनी कविताओं में युगीन परिवेश का समग्र चित्रण किया। रघुवीर सहाय जी के आठ काव्य संकलन प्रकाशित हुए। इन संकलनों की कविताओं में विविध धरातलों पर समकालीन जीवन के विचार की अभिव्यक्त हुई है। मानव मूल्यों की प्रतिष्ठा का आग्रह किया गया है। व्यक्तिवादी एवं समाजवादी चिंतन प्रवृत्ति, समाज के नवनिर्माण का स्वर, युगीन अव्यवस्था के विरूद्ध व्यंग्यात्मक प्रहार, समत्व की कामना, अतीत की विरासत के प्रति श्रद्धा, भविष्य पर आस्था, लघुता एवं निरीहता का बोध और यथार्थ प्रियता रघुवीर सहाय जी

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

की कविता की प्रमुख प्रवृत्तियों रहीं है । संवेदना और मूल्य के व्यापक धरातल पर रघुवीर सहाय जी की कविता का समग्र अनुशीलन करना इस शोध प्रपत्र का उद्देश्य रहा है।

कवि समाज का एक संवेदनशील एवं चिंतनशील प्राणी है। समाज के प्रत्येक यथार्थ से कवि की संवेदना जुड़ी रहती है । कवि घटनाओं को देखकर निष्क्रिय नहीं रह जाता। कवि की प्रतिक्रिया कविता के माध्यम से अभिव्यंजित होती है। इसी अभिव्यंजना में कवि की संवेदनशीलता का अनुमान लगाया जा सकता है। कवि की संवेदना समाज को नूतन अनुभूतियाँ प्रदान करती है। कवि के विचार पाठक की चेतना का परिष्कार करती है। सामान्य व्यक्ति जैविक धरातल पर संवेदना व्यक्त करता है, परन्तु कवि मन, बुद्धि एवं भावात्मक जगत में विचार को व्यक्त करता है । सामाजिक घटनाएँ कवि की अंतश्चेतना के भीतर की यात्रा करके काव्य का रूप लेती हैं। संवेदनशीलता भी कवि को काव्य लेखन में प्रोत्साहन देती है। कविता आत्माभिव्यक्ति है। इस कारण कवि की आत्मा जिस विषय से संवेदनशील हो जाती हैं, उस विषय को भाषा, शिल्प, लय, छंदों, प्रतीकों और बिबों के माध्यम से बाह्य जगत में प्रकट करती है। कविता में संवेदना का स्वरूप विवेचन करने से पहले संवेदना का अर्थ और उसके विभिन्न प्रकारों को जानना आवश्यक है।

संवेदना का कोशगत अर्थ है अनुभूति, सहानुभूति ज्ञात या विदित होना या शरीर में किसी प्रकार का वेदन होना । शारीरिक या मानसिक रूप से सुख-दुःख का अनुभव करना ही संवेदना है। संवेदना, इंद्रिय ज्ञान है। संवेदना के अभाव में किसी भी प्रकार के ज्ञान को प्राप्त नहीं किया जा सकता। यह एक प्रत्यक्ष अनुभव, चेतना बोध है।

संवेदना ज्ञान का द्वार है। मानव शरीर में ज्ञानवाही तथा गतिवाही तन्तुओं का जाल फैला रहता है। ज्ञानवाही तंतुओं में एक सिरा ग्राहक होता है। दूसरे का संबंध बोध केन्द्र से होता है। कोई सूचना ग्राहक के द्वारा तंतुओं से होती हुई बोध केन्द्र में पहुँचती है। बोध केन्द्र, मस्तिष्क को सूचना देता है। मस्तिष्क गतिवाही

तंतुओं को सूचित करता है और प्राप्त सूचना की प्रतिक्रिया होने लगती है। इसी ज्ञान को संवेदना अथवा इंद्रिय जन्य ज्ञान कहते हैं। जब बालक का जन्म होता है. तब वह अपने वातावरण के बारे

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

में कुछ भी नहीं जानता है। कुछ समय बीतने के पश्चात उसकी ज्ञानेंद्रियाँ काम करना आरंभ कर देती हैं।

कवि ने 'बौर' नामक कविता में संवेदना को व्यक्त किया है।

नीचे में बौर आया

इसकी एक सहज गंध होती है

मन को खोल देती है गंध वह

जब मति मन्द होती है।

जिसके कारण उसे विभिन्न प्रकार का ज्ञान प्राप्त होता है। यही ज्ञान संवेदना है। संवेदना सभी प्रकार के ज्ञान के लिए उत्तरदायी है। बाहरी संसार-संबंधी वस्तुओं का ज्ञान ज्ञानेन्द्रियों से होता है। संवेदना को ज्ञान प्राप्ति की पहली सीढ़ी माना जाता है। विभिन्न विद्वानों ने इसकी परिभाषा निम्नानुसार दी है-

जलोटा- संवेदना एक साधारण ज्ञानात्मक अनुभव है।

जेम्स- संवेदनाएँ ज्ञान के मार्ग में पहली वस्तुएँ हैं।

डगलस और हालैण्ड- संवेदना शब्द प्रयोग सब चेतना- अनुभवों में सबसे सरलतम का वर्णन करने के लिए किया जाता है।

ज्ञानेन्द्रियों के अतिरिक्त शरीर की माँसपेशियों, शरीर के विभिन्न अंग भी संवेदना के जनक हैं। प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिकों डगलस और हालैण्ड ने संवेदना के निम्न लिखित प्रकार बताये हैं।

.

- दृष्टि संवेदना- सभी प्रकार के दृश्य, रंग, रूप, आकार आदि ।
- ध्वनि संवेदना सभी प्रकार की आवाजें ध्वनियाँ आदि ।
- घ्राण संवेदना सभी प्रकार के गंध ।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

- स्वाद संवेदना सभी प्रकार के स्वाद ।
- स्पर्श संवेदना सब प्रकार के स्पर्श, दबाव आदि ।
- मॉस पेशी-संवेदना सभी प्रकार मॉस पेशियों की गतियों से संबंधित ।
- शरीरिक संवेदना शरीर के अंदर के अंगों द्वारा प्राप्त होने वाले सब प्रकार के अनुभव।

संवेदना के गुण या विशेषताएँ इस प्रकार है-

1. गुण - प्रत्येक संवेदना में एक विशेष प्रकार का गुण पाया जाता है। एक ज्ञानेन्द्रिय द्वारा अनुभव की जाने वाली दो संवेदनाओं में भी समानता नहीं होती । उदाहरण के लिए दो फूलों की सुगंध और दो मनुष्यों की आवाज में भिन्नता होती है। गुण संवेदना की ऐसी विशेषता है जो किसी एक प्रकार की संवेदना को दूसरे प्रकार की संवेदना से भिन्न बताती है।

2. तीव्रता - प्रत्येक संवेदना में तीव्रता की विशेषता होती है। दो संवेदनाएँ समान रूप से तीव्र नहीं रहतीं। कोई संवेदना अधिक तीव्र या प्रबल रहती है. कोई संवेदना कम तीव्र या निर्बल रहती है। उदाहरण के लिए लाल और सफेद रंगों की तीव्रता में अंतर होता है।

3. अवधि प्रत्येक संवेदना की निश्चित अवधि होती है। उसके बाद व्यक्ति उसका अनुभव नहीं करता। कुछ संवेदनाएँ अल्पकालीन होती हैं और कुछ दीर्घकालीन । ज्ञानेन्द्रियाँ जितनी देर सक्रिय और उत्तेजित रहती हैं, संवेदना की अवधि भी उतनी देर विद्यमान रहती है। उदाहरण के लिए एक मिनट तक सुनी जाने वाली आवाज की संवेदना अल्पकालीन और एक घंटे तक सुनी जाने वाली आवाज की संवेदना दीर्घ कालीन होती है।

4. स्पष्टता प्रत्येक संवेदना में स्पष्टता की विशेषता पायी जाती है। अल्पकालीन संवेदना की तुलना में दीर्घकालीन संवेदना अधिक स्पष्ट होती है। इसके अतिरिक्त जिस संवेदना पर हमारा ध्यान जितना अधिक केन्द्रित होता है. उतनी ही अधिक उसमें स्पष्टता होती है।

5. स्थानीय चिह्न प्रत्येक संवेदना में स्थानीय चिह्न की विशेषता होती है, किसी भी संवेदना की अनुभूति होने पर अपने शरीर के किसी अंग में हम उसका स्थानीय चिह्न बतलाते हैं। उदाहरण

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

के लिए यदि हमारे हाथ को किसी स्थान पर दबाया जाय, तो हम बता सकते हैं कि इस स्पर्श संवेदना का स्थान कौन सा है।

6. विस्तार यह विशेषता प्रत्येक संवेदना में नहीं पायी जाती। ज्ञानेन्द्रिय -सीमित क्षेत्र को प्रभावित करने वाली संवेदना का विस्तार कम और अधिक क्षेत्र

को प्रभावित करने वाली संवेदना का विस्तार अधिक होता है। उदाहरण के लिए सुई की नोंक से होने वाली संवेदना की तुलना में तकुए की नोंक से होने वाली संवेदना का विस्तार अधिक होता है।

संवेदना से वस्तु की सत्ता का आभास होता है। संवेदना अर्थ ज्ञान के लिए पृष्ठभूमि तैयार करता है सबसे विशेष बात यह है कि संवेदना मानसिक विकास में सहायक होती है।

संवेदना का व्युत्पत्ति मूलक अर्थ है किसी व्यक्ति के दुःख-दर्द को अपने हृदय में उसी रूप में उतारना, समान अनुभूति का संचार करना। सत्ता कवि सहृदय और संवेदनशील होता है। वह मानव समाज एवं किसी भी प्राणी पर पड़ने वाले दुःख, दर्द को बड़ी आसानी से ग्रेल लेता है। संवेदनशील कवि अपनी भाषा के माध्यम से सार्थक अभिव्यक्ति देता है। यही प्रसंग जब काव्य भाषा में किसी प्राणी के करूण प्रसंग को लेकर दुहराया जाता है तो संवेदना का जन्म होता है।

कवि किसी एक विषय के मूल तक जाकर उसकी जड़ को समझकर अपनी अभिव्यक्ति के माध्यम से उसे जीवन से परिचित करवाता है। यही मूल संवेदना कहलाती है। मूल-संवेदना कवि के द्वारा प्रत्यक्ष अनुभवों का एक डिस्टिल फार्म है। कवि अपनी भोगी हुई अनुभूतियों को उसी रूप में सम्प्रेषित करना चाहता है जिस रूप में उसने भोगा है। जो अनुभव व्यक्तित्व में घुलते हुए अनुभूति के रूप में छनकर आते हैं यही मूल संवेदना के रूप में उभरते हैं।

प्रत्येक कवि स्वभाव से ही सामान्य व्यक्ति की अपेक्षा अधिक भावुक होता

है। सामान्य पाठक की संवेदनशीलता के स्तर से उत्त स्तर पर अवस्थित कवि अपनी संवेदनशीलता को सम्प्रेषणीय बनाकर पाठक को एक उत्त स्तर पर संवेदनशीलता का आस्वाद कराता है।

जिस प्रकार पानी में कंकड़ फेंकने से वृत्ताकार रूप में छोटी-छोटी लहरियाँ बड़ी बनती चली जाती है. उसी प्रकार किसी प्राणी के दुख-दर्द को देखकर उसके भी हृदय में आघात लगता है, और उसके भी करूण हृदय में लहरें हिलोर लेने लगती हैं। लहरों का विस्तार जितना बड़ा होगा, कवि उतना ही प्रतिभाशाली सिद्ध होगा।

रघुवीर सहायजी एक संवेदनशील कवि हैं। नए काव्य के संदर्भ में उनकी मुख्य भूमिका रही है। उनकी कविता परिस्थिति की जड़ की व्यंजना करती हैं। किसी परिस्थिति को समझना और उसके मूल तक जाना यह रघुवीर सहायजी की कविता की विशेषता रही है।

साहित्य का मूल संबंध मनुष्य की संवेदना से है। संवेदना के बिना साहित्य का निर्माण नहीं हो सकता चाहे उसमें बुद्धिवाद का कितना भी ऊहापोह क्यों न हो, दर्शन की नई-नई भंगिमा क्यों न हो । बुद्धि, दर्शन, चिंतन, ज्ञान, विज्ञान सभी को पहले जीवन में आत्मसात् होना पड़ता है, आत्मसात् होने के बाद मनुष्य की संवेदना का अंग बनना पड़ता है, तभी शक्तिशाली साहित्य का निर्माण होता है। संवेदना के बिना साहित्य अधूरा है। साहित्य की पूर्णता तभी संभव है जब युग के साय बदलते नए मूल्यों के प्रति मनुष्य की संवेदना का योग साहित्य में हो। रघुवीर सहाय स्वयं एक संवेदनशील व्यक्ति रहे हैं।

अतः उनका साहित्य संवेदनाओं की नींव पर ही खड़ा हुआ है। उन्होंने सामान्यजन की संवेदनाओं को स्वयं अनुभव किया है, इसीलिए उनके गद्य साहित्य में मानवीय संवेदनाओं का पदार्थ बोध होता है। रघुवीर सहाय के गद्य साहित्य में संवेदना के स्वरूप को खोजा जाए इससे पूर्व संवेदना की अवधारणा पर एक दृष्टि डालना समीचीन होगा।

मानक हिंदी कोश में 'संवेदना' शब्द का अर्थ दिया है- मन में होने वाले अनुभव या बोधः अनुभूति । किसी को देखकर मन में होने वाला दुःखः किसी की वेदना देखकर स्वयं भी बहुत कुछ उसी प्रकार की वेदना का अनुभव करना। यहाँ पर संवेदना का एक अर्थ सहानुभूति (सिम्पेयी) भी दिया है। इसी कोश में संवेदना शब्द को और भी परिभाषित किया है। संवेदना मन में सुख-दुःख आदि की होने वाली अनुभूति या प्रतीति है। यह किसी प्रकार के प्रभाव, स्पर्श आदि के कारण शरीर के

अंगों या स्नायुओं में प्राकृतिक रूप से होने वाला स्पंदन है जिससे मन को उसकी अनुभूति होती है। किसी की किसी बात का ज्ञान या बोध होने को भी संवेदना कहा गया है।

रघुवीर सहाय के काव्य में संवेदनाओं का बाहुल्य है समाज की कोई भी संवेदना उनसे छूटी नहीं है। 'रामदास' कविता की संवेदना सभ्य समाज को ग्रकशोर कर रख देती है। अतः उनके काव्य की संवेदनाएँ हर युग में प्रासंगिक रहेगी।

**संदर्भ सूनी**

1. पारीक अनिल, नागार्जुन का गद्य साहित्य, नेशलन पब्लिशिंग हाउस जयपुर, संस्करण 2007. पू. 94
2. 2 पारीक अनिल, नागार्जुन का गद्य साहित्य, नेशलन पब्लिशिंग हाउस जयपुर, संस्करण 2007. पू. 95
3. 3 पारीक अनिल, नागार्जुन का गय साहित्य, नेशलन पब्लिशिंग हाउस जयपुर संस्करण 2007. पू. 96
4. मैलारे दीप हावगीराज साठोत्तरी हिन्दी कहानियों में पुरुष चरित्र, विकास प्रकाशन कानपुर, संस्करण 2001 पू. 10
5. बालपेजी शुभा, गिरजा कुमार माथुर के काव्य का शिल्प विधान, निखिल पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, आगरा, संस्करण 2015. पू. 61
6. राउत शारदा, गिरिजा कुमार माथुर का काव्यानुशीलन, विद्या प्रकाशन कानपुर, संस्करण 2000. पू. 11

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

# रघुवीर सहाय के काव्य की सामाजिक उपादेयता

**अनुष्टुप चंसौलिया**

**शोधार्थी, विषयः हिंदी ,जीवाजी विश्वविद्यालय,ग्वालियर (मध्य प्रदेश)**

**Paper Rcevied date**
05/05/2025
**Paper date Publishing Date**
10/05/2025
**DOI**
https://doi.org/10.5281/zenodo.15384139

IMPACT FACTOR
5.924

## ABSTRACT

रघुवीर सहाय जी ने देखा है कि समाज में ऐसे बहुत से लोग हैं जो आधुनिक बनने का ढोंग करते हैं, परन्तु आधुनिक नहीं होते। समाज को सही मार्गदर्शन देने की योग्यता रखने वाले लेखक भी लिखते समय मात्र आधुनिक बने रहते हैं, अन्यथा वे अपनी-अपनी जाति के दायरे में सिमट कर रह जाते हैं-

"मधुर यौवन का मधुर अभिशाप मुझको मिल चुका था
फूल मुरझाया छिपा काँटा निकलकर चुभ चुका था
पुण्य की पहचान लेने, तोड़ बन्धन वासना के
जब तुम्हारी शरण आ, सार्थक हुआ था जन्म मेरा
क्या समझकर कौन जाने, किया तुमने त्याग मेरा
नीड़ में मेरी उमंगों के किया अपना बसेरा
हो गया गृहहीन सहज प्रफुल्ल यौवन प्राण मेरा ।। "

कवि को ऐसे दोगियों से नफरत है जिनकी कथनी-करनी में अंतर होता है। लेखक प्रयत्न करके देखता है कि उसके समाज से बाम्हन - कायथ ठाकुर जैसी विषमताएँ मिट जायें, परन्तु वह सफल नहीं होता। आजादी के बीस वर्षों के बाद रघुवीर सहाय ने देखा कि कोई लेखक अपना उद्देश्य पूरा करके महान नहीं बन सकता है। भारत संघ बनने के पहले ही बाम्हनों और ठाकुरों में बँटा हुआ है-

मुख्यबिन्दुः आधुनिक, जन्म, त्याग, धर्मात्मा, ज्ञान, यौवन, कथनी-करनी आदि ।

रघुवीर सहाय समाज की इस दयनीय दशा को देखकर संवेदनशील हो जाते हैं। वे देखना चाहते हैं कि जातिवाद को समाप्त करने का नारा लगाने वाले नेताओं ने कौन से नेक कार्य किए हैं। इस

आधुनिक युग में भी ऐसी परिस्थितियाँ आती हैं जब कोई निम्न वर्ग का व्यक्ति प्यास बुझाने के लिए पानी माँगता है उसकी अवहेलना की जाती है। (1) कवि इसके बारे में जानना चाहते हैं-

बसन्त आया

जैसे बहन दा कहती है

ऐसे किसी बँगले के किसी तरु (अशोक ?) पर कोई चिड़िया कुऊकी

चलती सड़क के किनारे लाल बजरी पर चुरमुराये पाँव तले

ऊँचे तरुवर से गिरे

बड़े-बड़े पियराये पत्ते । (2)

कवि के अनुसार राष्ट्रीय एकता जैसे उन्नत विचारों को लेकर कोई एक व्यक्ति भी नहीं हैं। जब जातिगत विषमता को बनाये रखने की बात आती है सब एक हो जाते हैं। यह विषमता ऐसी हो गई है कि अब ये राष्ट्रीय आदेश सा लगने लगा है-

प्रभु की दया

बिल्ली रास्ता काट जाया करती है

प्यारी-प्यारी औरतें हरदम बक-बक करती रहती हैं।

चाँदनी रात को मैदान में खुले मवेशी

आकर चरते रहते हैं

और प्रभु यह तुम्हारी दया नहीं तो और क्या है

कि इनमें आपस में कोई सम्बन्ध नहीं । (3)

जब महासंघ के अध्यक्षों से समाजवाद के बारे में प्रश्न किया जाता है तो वे भी इस प्रश्न को टालने के लिए हँसकर अपनी तस्वीरें खिंचवाकर चुप हो जाते हैं- हम विचार करेगे, कहने के अतिरिक्त उनके पास कोई उत्तर नहीं होता-

धूप

देख रहा हूँ

लम्बी खिड़की पर रक्खे पौधे

धूप की ओर बाहर झुके जा रहे हैं

हर साल की तरह गौरैया

अबकी भी कार्निस पर ला लाके घरने लगी है तिनके

हालाँकि यह वह गौरैया नहीं

यह वह मकान भी नहीं

ये वे गमले भी नहीं, यह वह खिड़की भी नहीं

कितनी सही है मेरी पहचान इस धूप की ।

जन प्रतिनिधि या नेता और पत्रकार भी जनता की जातिगत विसंगतियों को दूर करने का प्रयास नहीं करते। समाज में ऐसे लोगों की भरमार है, जिसकी कथनी-करनी में अंतर होता है। ऐसे लोग निरीह जनता को धोखा देते हैं। रघुवीर सहाय जी ऐसे लोगों से सचेत रहने की सलाह देते हैं। ये जब शासक बन जाते हैं तो जनता को संकट कालीन परिस्थिति का सामना करना पड़ता है। ये शासक दिखने में निर्भीक लगते हैं, परन्तु वर्षों तक अपने पाखंड द्वारा जनता को धोखा देते रहते हैं।

"पसीने से गन्धाती जाये घर का माल मैके पहुँचाती जाये

पड़ोसिनों से जले

कचरा फेंकने को लेकर लड़े

घर से तो खैर निकलने का सवाल ही नहीं उठता

औरतों को जो चाहिए घर ही में है ।। (4)

सबसे बड़ी विडंबना यह है कि गाँधी जी के शिष्य बनने की बात करने वाले कुछ लोग अहिंसा का मार्ग छोड़कर हिंसा का प्रचार करने लगे हैं-

लाखों का दर्द

लखूखा आदमी दुनिया में रहता है

मेरे उस दर्द से अनजान जो कि हर वक्त

मुझे रहता है हिन्दी में दर्द की सैकड़ों

कविताओं के बावजूद

और लाखों आदमियों का जो दर्द में जानता हूँ

उससे अनजान

लखूखा आदमी दुनिया में रहे जाता है। ।। (5)

समाज की बागडोर ऐसे शासकों के हाथ में है, जो दोहरा व्यवहार कर रहे हैं। जनता इनको देखकर सोचती है कि ये लोग जनता की भलाई करते हैं, वास्तव में ये भलाई का मुखौटा पहनकर अपना क्रूर रूप छुपाकर अपना स्वार्थ पूरा करते हैं। इनके पास चापलूसी खुशामदी करने की कला होती है, जिससे वे अयोग्य होकर भी ऊँचे-ऊँचे पदों पर आसीन होकर जनता के रक्षक बनने का ढोग करते हैं। यह प्रवृत्ति निचले दर्जे के कर्मचारी से लेकर ऊँचे दर्जे के कर्मचारी में मिलती है -

दे दिया जाता हूँ

शाम को सूरज डूबेगा

दूर मकानों की कतार सुनहरी बुन्दियों की झालर बन जायेगी

और आकाश रंगारंग होकर हवाई अड्डे के विस्तार पर उतर आयेगा

एक खुले मैदान में हवा फिर से मुझे गढ़ देगी

जिस तरह मौके की माँग हो

और मैं दे दिया जाऊँगा ।।

रघुवीर सहाय के अनुसार व्यक्ति समझता है कि वह किसी के सामने अपने कार्यों का आदर्श प्रस्तुत कर रहा है, परन्तु वह आदर्शात्मक कार्य किये बिना आदर्श प्रस्तुत करना चाहता है। यहाँ एक पुरोहित है जो चाहता है कि उसके प्रार्थना घर में कोई विज्ञापन न चिपकाये परन्तु सबसे पहले वही विज्ञापन चिपकाता है।

रचता वृक्ष

"देखो वृक्ष को देखो वह कुछ कर रहा है

किताबी होगा कवि जो कहेगा कि हाय पत्ता झर रहा है।

रूखे मुँह से रचता है वृक्ष जब वह सूखे पत्ते गिराता है

ऐसे कि ठीक जगह जाकर गिरे धूप में छाँह में

ठीक-ठीक जानता है वह उस अल्पना का रूप

चलती सड़क के किनारे जिसे आँकेगा

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

और जो परिवर्तन उसमें हवा करे उससे उदासीन है ।।" (6)

छद्म व्यवहार करने वाले नन्हीं सी लडकी को धोखा देने से भी नहीं कतराते। जब वह हाथ पसारकर कुछ माँगती है तो आश्वासन देते हैं कि आज के दिन को याद रखना। हम अवश्य कुछ न कुछ देंगे। उस समय मसीहा बनते हैं। परन्तु घर पहुँचकर अपनी दैनंदिनी के पन्ने पलटते ही सुबह के सारे वादे भूल जाते हैं-

आज फिर शुरू हुआ

आज फिर शुरू हुआ जीवन

आज मैंने एक छोटी-सी सरल-सी कविता पढ़ी

आज मैंने सूरज को डूबते देर तक देखा

जी भर आज मैने शीतल जल से स्नान किया

आज एक छोटी सी बच्ची आयी, किलक मेरे कन्धे चढ़ी ।।

आधुनिक युग में अपने आपको आधुनिक बताने का ढोंग करने वाले बहुत सारे लोग हैं। इस के लिए भले वे अपनी पैतृक भूमि को भूल भी जायें तो कोई फरक नहीं पड़ता। गाँवों में रहने वाले आधुनिकता के मोह में स्वयं को महानगर से जोड़कर छद्म व्यवहार करते हैं-

नारी

नारी बिचारी है।

पुरुष की मारी है

तन से क्षुधित है

मन से मुदित है

लपककर झपककर

अन्त में चित है ।।

कला भी इस छद्म व्यवहार से अछूती नहीं रह गई, बड़े-बड़े उपन्यासकार मानव जीवन को समग्रता से जानने का ढोग करते हैं परन्तु भूखे बालक की खाली कटोरी को समझ नहीं पाते-

हमने यह देखा

यह क्या है जो इस जूते में गड़ता है।

यह कील कहाँ से रोज़ निकल आती है

इस दुःख को रोज़ समझना क्यों पड़ता है ।।

ऐसे ही चित्रकार अपनी तस्वीर को ऊँचे दामों में बेचने के लिए अकाल की रंगीन तस्वीर बनाकर बेचते हैं इसलिए रंग बनाने और बेचनेवाले अपने चित्रकार लेकर आते हैं।

इसी प्रकार रंगीन टी वी की दुनिया में बंजर भूमि भी हरी और सुनहली दिखती है। रामसूरत जैसे निरीह लोग इस प्रकार की नकली दुनिया को देखकर भौच्चके रह जाते हैं-

नयी हँसी

महासंघ का मोटा अध्यक्ष

घरा हुआ गद्दी पर खुजलाता है उपस्थ

सर नहीं,

हर सवाल का उत्तर देने से पेश्तर

बीस बड़े अख़बारों के प्रतिनिधि पूछे पचीस बार ।।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

इस प्रकार रघुवीर सहाय जी ने देखा कि समाज के कोने-कोने में छद्म व्यवहार करने वाले लोग समाज का शोषण कर रहे हैं। स्वतंत्रता के पश्चात समाज को तीव्र रूप से क्षुब्ध करने वाली समस्या है- पारिवारिक विघटन | रघुवीर सहाय ने इस समस्या को महसूस किया। उन्होंने पारिवारिक विघटन के कई उदाहरण बताये हैं। रोजगार, पारंपरिक मूल्यों के प्रति अनिच्छा, एकल परिवार का मोह, संपत्ति को निवेश करके रखने की लालसा, प्रतिस्पर्द्धा आदि अनेक कारण है जिससे पारिवारिक विघटन विकराल समस्या बनी हुई है। रघुवीर सहाय जी ने व्यक्ति के जीवन में परिवार को विशेष महत्व दिया है, ऐसे में पारिवारिक विघटन की विसंगति से विचलित हुए विना वे कैसे रह सकते थे।

रघुवीर सहाय ने देखा कि युवा पीढ़ी अपने पूर्वजों के सामर्थ्य से समृद्ध और शक्तिवान बनती है, परन्तु अपने पूर्वजों का सम्मान नहीं करती। उनके पूर्वज किन कठिनाइयों का सामना करके आगे बढ़े हैं, उसके प्रति ध्यान नहीं देते। अपने पूर्वजों को असहाय छोड़ देते हैं। उन्हें अपनी तरह उच्च श्रेणी का न मानकर दुत्कारते हैं।

जब युवा पीढ़ी अपने माता पिता की उपेक्षा करती है तो उनकी दशा दयनीय हो जाती है। परन्तु माता पिता को हर क्षण ये आभास होते रहता है कि उनके बच्चे उनके आस पास रहकर उनका ख्याल रख रहे हैं। परदेस चले जाने वालों को भी अपने आस-पास खोजते रहते हैं। उनके संवाद सुनने की इच्छा रखते हैं। हर आहट से उन्हें लगता है कि उनके पुत्र ही हैं लेकिन ऐसा कुछ नहीं होने वाला है, जीवन का खेल खत्म हो जाएगा, परन्तु उनकी संतान बुलाने पर नहीं अपनी मर्जी से आएगी।

वास्तव में बच्चों के मन में माता-पिता से मिलने की इच्छा ही नहीं होती, अतः वे समय निकालना ही नहीं चाहते। माता छिप छिप कर रोती रहती है और पिता उसे सांत्वना देते रहते हैं। परदेस जाने वाले लडके लौटकर आते ही नहीं हैं और उनके पिता का स्वप्निल परिवार बिखर जाता है। रघुवीर सहाय के काव्य में आधुनिक समाज का सत्य पाठक को सोचने के लिए मजबूर कर देता है। यही उनके काव्य की सार्थकता है।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

**संदर्भ सूची**

1. शर्मा सुरेश, प्रतिनिधि कविताएँ रघुवीर सहाय (आओ, जल भरे बरतन में), राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण 2023, पृ. 20
2. शर्मा सुरेश, प्रतिनिधि कविताएँ रघुवीर सहाय (बसंत आया), राजकमल, प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण 2023, पृ. 24
3. शर्मा सुरेश, प्रतिनिधि कविताएँ रघुवीर सहाय ( प्रभु की दया), प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण 2023, पृ. 28
4. शर्मा सुरेश, प्रतिनिधि कविताएँ रघुवीर सहाय (हमारी हिन्दी), राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण 2023, पृ. 40
5. शर्मा सुरेश, प्रतिनिधि कविताएँ रघुवीर सहाय ( लाखों का दर्द), राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण 2023, पृ. 44
6. शर्मा सुरेश, प्रतिनिधि कविताएँ रघुवीर सहाय ( रचता वृक्ष), राजकमल प्रकाशन प्रकाशन दिल्ली, संस्करण 2023, पृ. 42

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

# शमशेर बहादुर सिंह के काव्य मे लोकोत्तर युगबोध का सामाजिक प्रभाव

**त्रिष्टुप चंसौलिया**

**शोधार्थी, विषयः हिंदी ,जीवाजी विश्वविद्यालय,ग्वालियर (मध्य प्रदेश)**

**Paper Rcevied date**
05/05/2025
**Paper date Publishing Date**
10/05/2025
**DOI**
https://doi.org/10.5281/zenodo.15384170

IMPACT FACTOR
5.924

## ABSTRACT

शमशेर बहादुर सिंह विशुद्ध सौन्दर्य के कवि हैं। शमशेर की कविताओं को किसी खास तरह की प्रवृत्तियों में बांधकर नहीं देखा जा सकता। उनकी कविता के भीतर कई प्रकार के स्वर हैं। वह शिल्प और शैली की दृष्टि से भी अनूठी हैं। उनकी कविताओं में सामाजिक चिंता के स्वर भी बहुत गहरे हैं। मानवद्रोही समाज को बदलने की तीव्र आकांक्षा भी उसमें उपस्थित है। महावीर अग्रवाल को दिए एक साक्षात्कार में उनका कहना है कि "सच्ची कविता हमारी भावनाओं का संस्कार और परिष्कार करती है। वह मानवीय संवेदना को गहरा करती है।..... कविता जीवन के सजीव संदर्भों से संयुक्त होगी। उसमें धर्म, राजनीति, दर्शन, प्रेम, क्रांति सब कुछ आ जाता है वह बदलाव में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करती है।.... अब लोग इस बात को समझने लगे हैं कि समस्याओं को उनके सामाजिक यथार्थ के परिप्रेक्ष्य में ही समझा और सुलझाया जा सकता है, अन्य किसी प्रकार नहीं ।"

कहीं सर्द खूँ में तड़पती है बिजली
जमाने के रहो-बदल कोई लाए। 1

शमशेर जन-मन के कवि हैं वे जनता के हित में बदलाव के पक्षधर हैं। कुछ और कविताएँ की भूमिका में उन्होंने इस बात को स्वीकार किया है कि वे जोशीली पत्रकारिता के कायल हैं। उनका कहना है- "सामाजिक दायित्व के पक्ष से मैं उस उत्कृष्ट रहेटारिक या महान छन्दोबद्ध जोशीली 'पत्रकारिता' का भी कायल हूँ जो मिल्टन और वर्ड्सवर्थ के कुछ प्रसिद्ध सानेटों में बायरन और शैली में कबीर, रवीन्द्रनाथ, इकबाल और निराला में सहज ही श्रेष्ठ काव्य का रूप ले सकी है। बहुत कायल हूँ। मगर यह जिम्मेदारी उठाने की क्षमता कवि के असाधारण शिल्प में ही नहीं उसकी आत्मा में भी होनी चाहिए।

मुख्यबिन्दुः स्वर, शैली, दृष्टि, साक्षात्कार, संस्कार, परिष्कार, संवेदना आदि ।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

सामान्यतया होता क्या है कि इस क्षेत्र के गहरे दायित्व से जब हम भली प्रकार परिचित नहीं होते तभी ताल और सुर को लेकर इस अखाड़े में उतरते हैं, या नहीं तो शायद हमें सामाजिक वाहवाही दरकार होती है। और यह प्रकाशन- प्रदर्शन औसत अक्षम कलाकार को तो खा जाता है। इसका मतलब यह नहीं कि हम अपने दायित्व से गाफिल हो, कोशिश न करे समाज में नयी चेतना फेंकने की। अगर कविता के माध्यम से ही ऐसा करने की हमें प्रेरणा मिलती है। मगर ऐसी 'चेतना' रचना और उसे फूँकना अभिमन्त्रित शक्ति की तरह समाज के प्राणों में उसे भरना...... इसका अर्थ क्या है, यह ध्यान में रखना आवश्यक होगा । मामूली सामर्थ्य का काम नहीं है। बेशक ऐसी चीजों के सद्य, प्रकाशन, और प्रचार, पर मेरा प्रबल आग्रह है आवश्यक नहीं कि हर दिशा में ऐसी उपादेय चीजें सच्ची

कविता ही मानी जायें। कविता में सामाजिक अनुभूति काव्यपक्ष के अंतर्गत ही महत्वपूर्ण हो सकती है।

जो बना-बनाया फ्रेम है उसको तोड़ते हुए से वे नजर आते हैं। सामाजिक चेतना से इन सब बातों के बावजूद शमशेर, प्रगतिवादी कवियों का जो लैस होते मानवीया करुणा

हुए भी उनकी कविता का महत्वपूर्ण उद्देश्य है जन पक्षधरता, और पर दुःख कातरता। ये सब बातें एक-दूसरे से घुली मिली है, गुथी हुई हैं।

शमशेर की शुरुआती कविताओं में छायावादी शैली की छाप दिखाई देती हैं। छायावादी कविताओं का एक स्वर चूँकि भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन से प्रभावित है, लेकिन उस दौर का काव्य समूचे नवजागरण से प्रभावित है इसलिए शमशेर की कविता भी इससे अछूती नहीं है। में भारत गुण गौरव गाता' उनकी इसी तरह की कविता है जिसमें राष्ट्रीय आहवाहन का स्वर सुनाई पड़ता है जिसे हम 'जयशंकर प्रसाद' की कविताओं से जोड़कर देख सकते हैं-

"मैं भारत गुण गौरव गाता ।

श्रद्धा से उसके कण-कण को उन्नत माथ नवाता ।

वह भविष्य का प्रेम सूत है, इतिहासों का मर्म पूत है,

अखिल राष्ट्र का श्रम, संयम, तपः कर्मजयी, युग त्राता !

मैं भारत गुण-गौरव गाता । 2

यह सन् 1933 में लिखी गई कविता है जिसमे आजाद भारत का स्वप्न है। नई आशा-आकांक्षा का स्वर इसमें दिखलाई पड़ता है। चूँकि शमशेर ने अधिकांश कविताएँ प्रेम और सौन्दर्य को लेकर लिखी हैं। इसलिए यह देखना जरूरी हो जाता है कि उनकी सामाजिक चेतना कितनी स्पष्टता के साथ कविता में उपस्थित होती है क्योंकि गाहे-बगाहे उन पर यह आरोप लगता रहा है कि उन्होंने -

मुझे शमशेर

जो वक्तव्य दिए वे सभी प्रगतिवाद के पक्ष में लेकिन उन्होंने जो कविताएँ लिखीं हैं। वे सभी प्रयोगवादी ढंग की हैं। इस भ्रम को दूर करने के लिए भी की बहिर्जगत को संबोधित कविताओं से होकर गुजरना पड़ेगा।

आइए देखते हैं उनकी एक कविता 'एक प्रभातफेरी' (स्वतंत्रता दिवस की एक प्रभातफेरी, इलाहाबाद) यह कविता 'दूसरा सप्तक' में 'स्वतंत्रता दिवस पर 1940' शीर्षक से और 'बात बोलेगी' संग्रह में फिर वह एक हिलोर उठी' शीर्षक से छपी

थी ।

"फिर वह एक हिलोर उठी-

वह मजदूर किसानों के स्वर कठिन हठी !

कवि है, उनमें अपना हृदय मिलाओ !

उनके मिट्टी के तन में है अधिक आग, है अधिक तापः

उसमें कवि है अपने विरह-मिलन के पाप जलाओ !

काट बुर्जुआ भावों की गुमठी को- गाओ !

अति उन्मुक्त नवीन प्राण स्वर कठिन हठी !

कवि है, उनमें अपना हृदय मिलाओ !...

यह है शमशेर की अपनी प्रतिबद्धता । एक स्पष्ट समाज दर्शन, तीव्र प्रतिरोध से भरा हुआ। इसमें कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ / जिससे उथल-पुथल मच जाए, जैसा स्वर सुनाई पड़ता है। कवियों से यह आहवान किया गया है कि मजदूरों

और किसानों के स्वर में स्वर मिलाओ राष्ट्रीय आंदोलन का यह वह दौर था जब साहित्य लिखना और राष्ट्रीय आंदोलन में भाग लेना दो अलग-अलग बातें नहीं थी।

राहुल सांकृत्यायन, यशपाल, गणेश शंकर विद्यार्थी इस बात के उदाहरण हैं। शमशेर इस कविता में सुमित्रानंदन पंत की तर्ज 'दुत झरो जगत के जीर्ण पत्र ! / हे स्त्रस्त ध्वस्त ! हे शुष्क-शीर्ण ! / हिम-ताप- पीत, मधुवात- भीतः तुम वीतराग, जड़, पुराचीन !! पर ही सड़े पुराने अन्य कूप गीतों के / अर्थहीन है भाव, मूक मीतों के कहकर उन्हें भुलाने की बात कह रहे हैं तथा ऐसे गीत गाने को कह रहे हैं। जिससे 'नूतन प्राण हिलोर उठे और उस हिलोर से कवि अपना हृदय मिलाए । शमशेर ने कुछ कविताएँ स्टेट्समेंट की तरह लिखी हैं लगभग नारे की शक्ल में। उनकी राजनीतिक कविताओं पर इस तरह की छाप दिखाई पड़ती है। एक साक्षात्कार में उन्होंने इस बात को खुद स्वीकार किया कि "मेरी राजनीतिक कविताएँ इसीलिए अभिधा में होती है क्योंकि मैं उस समस्या को खुद पहचानना चाहता हूँ। इस तरह की उनकी एक कविता जिसमें कवि की वैचारिक प्रतिबद्धता की भी छाप है- 'लेकर सीधा नारा' जो 1941 में प्रकाशित हुई थी को देख सकते हैं-

"लेकर सीधा नारा, कौन पुकारा

अंतिम आशाओं की संध्याओं से ?

पलकें डूबी ही-सी थीं -

पर अभी नहीं कोई सुनता सा था मुझे

कहीं फिर किसने यह, सातों सागर पार

एकाकीपन से ही मानो-हार

एकाकी उठ मुझे पुकारा कई बार ?

मैं समाज तो नहीं, न मैं कुल जीवन

कण-समूह में हूँ मैं केवल एक कण ।

कौन सहारा मेरा कौन सहारा!..

इस कविता में शमशेर की वर्गीय चेतना उभरकर सामने आती है। जाहिर सी बात है सन् 1941 में लिखी गई इस कविता में वे मार्क्सवादी विचारधारा के मार्ग के अनुसरण की बात करते हुए अपने एकाकीपन, अकेलेपन को भूलते हुए अपने आप को उस समाज को समर्पित कर देने को कहते हैं जिसे फासिस्ट ताकतों से लड़ना है उससे लोहा लेना है। 'कण समूह में एक कण होने के बावजूद उनकी प्रतिबद्धता उस समूह, उस समाज के लिए है जो अभावग्रस्त है, बेसहारा है जो जीवन के सुख से कोसों दूर है।

किसान-मजदूर और अभावग्रस्त भारतीय जनता के सुख-दुःख और उनके दर्द में शामिल होते शमशेर ने ऐसी अनेक कविताएं लिखी हैं जो उद्वेलित करती है तथा उन शक्तियों पर करारा प्रहार भी, जो शक्तियाँ जनता को अपने सुख के लिए दुहती हैं। शमशेर की यह कविता जीवन संघर्ष में अकेले पड़े निराश, हताश व्यक्ति में आशा और विश्वास का भी संचार करती है।

शमशेर की कविताओं में आजाद भारत के स्वप्न के साथ-साथ उसकी एक रूपरेखा भी मौजूद दिखाई देती है जिसका स्वर बहुत मद्धिम होते हुए भी गुलामी की जंजीरे तोड़कर ब्रिटिश राज से मुठभेड़ की एक शक्ति उसमें दिखाई पड़ती हैं।

सन् 1942 में लिखी गई उनकी कविता 'जब वह क्षण आयेगा' को हम उदाहरण के रूप में देख सकते हैं-

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

"जब वह क्षण आयेगा हरने मेरी सब निधि

करने मुझको सब विधि

अक्षम, मैं सब कुछ हरूँगा नहीं:

आने वह क्षण पायेगा नहीं

विषधर सम धरा ग्रहण करेगी तप त्याग,

शान्ति, प्रेम, सत्य, अहिंसाः जन होंगे आश्वस्त !

सुखी हृदय होगा तब जन समाज का सब प्रकार !

कठिन कार्य है जो अब असंगत

अन्यायी राज का होगा तब पार!.5

यह पराधीन भारत में लिखी हुई कविता है। शमशेर इस बात को लेकर आश्वस्त है कि आजाद भारत में जनता का जीवन सुखमय होगा । जब समाज हर प्रकार से सुखी होगा शमशेर की तरह मुक्तिबोध के यहाँ भी इसी तरह का प्रश्न मौजूद है-

समस्या एक मेरे सभ्य नगरों और ग्रामों में सभी मानव

सुखी सुंदर व शोषण मुक्त कब होगे ?

अफसोस ! कि शमशेर और मुक्तिबोध का यह स्वप्न अब तक पूरा न हो पाया। यहीं कारण रहा होगा कि शमशेर का मन बार-बार एकान्त चाहता है। अपनी एक कविता बार-बार मन चाहता है में वे लिखते हैं-

बार-बार मन चाहता है एकान्त

बार-बार मन चाहता है इन

क्रूर, कठिन, श्रान्त परिस्थितियों में ले लूँ संन्यास।

करूँ मैं कठोर तप गहनतम आध्यात्म चिन्तन,

दीर्घ मौन व्रत आदि-आदि हुआ करे,

हो यदि वह, अंतरव्यापक-सी संकीर्णता !

कोई चाहे तो इस कविता पर पलायनवाद का आरोप लगा सकता है जैसा की प्रसाद की कविता, ले चल वहाँ भुलावा देकर के साथ हुआ। प्रसाद ने तो स्पष्ट लिखा कि-

“श्रम - विश्राम जहाँ मेले से सृजन, भोर नयनों से

अमर जागरण-बिखरा प्रकाश सघन !.."

इसी तरह शमशेर भी करूँ में कठोर तप से नवसृजन की ओर संकेत करते हैं। शमशेर के गुरु निराला भी 'शक्ति की मौलिक कल्पना' पर जोर देते हैं जिसके लिए विश्राम बहुत जरूरी है। उसी से कोई नया रास्ता निकल सकता है।

जिस तरह के एकांत की तलाश उन्हें है, उसका संकेत वे आगे की पंक्तियों में करते हैं-

नात्सी चिल्लाया-

एक महामानव की शक्ति ही

शान्ति चिह्न !

क्रांति ने फिर दोहराया-

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

इनकलाब !

जीवन का बीज है

इनकलाब ! '

शमशेर का समूचा जीवन दर्शन आखिर की पंक्तियों में उठ खड़ा हुआ है। यह क्रान्ति की अभिव्यक्ति है। मनुष्य का संघर्ष शोषणकारी शक्तियों के खिलाफ । जिसके लिए शक्ति के मौलिक कल्पना की जरूरत है। इस कविता में एक प्रकार की आक्रामकता दिखाई पड़ती है। जो शमशेर की अपनी खास पहचान नहीं है लेकिन बहिर्जगत को संबोधित कविताओं का स्वर कुछ इसी तरह का दिखाई पड़ता है उसका स्वर बहुत मद्धिम होते हुए भी उसमें ताप है उसके आंतरिक संवेदना में एक हलचल दिखाई पड़ती है कुछ कुछ प्रगतिवादियों के ढंग की कहीं-कहीं नारे के शक्ल में भी। शमशेर इस बात को लेकर गाहे-बगाहे अपनी राय जाहिर करते थे

कि वे नागार्जुन और केदार नाथ अग्रवाल की तरह कविताएँ नहीं लिख पाते हैं। हालांकि यह बात उतनी सच नहीं है। कविता कहने की शमशेर की अपनी एक खास शैली है इसी कारण उन्हें 'शमशेरियत' कहा गया जिसमें उन्हें काफी सफलता मिली और यहीं बात उन्हें औरों से अलग करती है। सन् 1943 में लिखी गई कविता 'जीवन की कमान' को इन्हीं संदर्भों में याद किया जाना चाहिए। कविता की शुरुआती पंक्तियाँ हैं-

"ढ़ीली इस जीवन की कमान

कसनी है,

छूटेंगे जिस पर कड़े प्राण

के तीर जो कि

भेदेगे सातो आसमान ।

शमशेर की कविताओं में मनुष्य मात्र की समानता के लिए गहरी छटपटाहट और बेचैनी का प्रबल भाव दिखाई पड़ता है। वे इसका इस्तेमाल अपनी कविताओं में प्रतीक रूप में करते हैं। शोषित, वंचित के पक्ष में खड़ा होने की प्रबलता उनमें दिखाई देती है। यहीं कारण रहा है कि उनकी कविताओं में जो मनुष्य रूपायित हुआ है वह अभिजात्य नहीं है। शमशेर का कवि मानस जिस व्यक्ति को रूपायित करता है वह वैभव-विलास, सुख समृद्धि से सर्वदा वंचित है।

**संदर्भ सूची**

1. शमशेर बहादुर सिंह रचनावली संपादक- रंजना अरगडे, भाग - 1. शिल्पायन प्रकाशन, दिल्ली-110032, संस्करण 2017, पृ. 112,
2. वहीं, भाग - 6, पृ.सं.- 429-430
3. प्रतिनिधि कविताएं, शमशेर बहादुर सिंह, सम्पादक नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, नौवा संस्करण 2018, पृ. 25
4. शमशेर बहादुर सिंह रचनावली, भाग-1, संपादक- रंजना अरगडे, अरगडे, शिल्पायन प्रकाशन, संस्करण 2018, पृ. 451
5. वही, पृ.सं. 31
6. वही, पृ.सं. 68
7. तारापथ - सुमित्रानंदन पंत, संपादक - दूधनाथ सिंह, लोकभारती प्रकाशन, संस्करण 2012, पृ. 109
8. शमशेर बहादुर सिंह रचनावली, भाग-6, संपादक - रंजना अरगडे, शिल्पायन प्रकाशन संस्करण 2017, पृ- 479

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

**International Educational Applied Research Journal**

**Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal**

**A Multi-Disciplinary Research Journal**

# शमशेर बहादुर सिंह के रचना संसार में युगबोध और शिल्प का समन्वय

**त्रिष्टुप चंसौलिया**

**शोधार्थी, विषयः हिंदी ,जीवाजी विश्वविद्यालय,ग्वालियर (मध्य प्रदेश)**

**Paper Rcevied date**
05/05/2025
**Paper date Publishing Date**
10/05/2025
**DOI**
https://doi.org/10.5281/zenodo.15384210

IMPACT FACTOR
5.924

**ABSTRACT**

युगबोध और शिल्प का गहरा अंतः संबंध हुआ करता है। इस बात से हम सभी परिचित हैं, कि युगबोध ही साहित्य और कलाओं विशेषकर कविता का उत्स होती है। साहित्य और युगबोध एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं, इसलिए युगबोध साहित्य का परिणाम भी होता है। कोई भी साहित्यिक रचना समाज में ही पल्लवित एवं पुष्पित होती है। समाज, संस्कृति और परिवेश से प्राप्त कच्चे माल की भाँति प्राप्त संपदा को एक सर्जक रचनाकार अपनी रचनात्मक प्रतिभा से आकृति प्रदान कर साहित्य के कोष की वृद्धि करने में अपना योगदान देता है। किसी रचनाकार की सृजन शक्ति, मानो जीवन का बीजभाव होती है, जो सृजनात्मकता की प्रक्रिया के कारण फलित होती है।

समकालीन कविता जीवन के यथार्थ का उद्घाटन करती है। इस युग की कविता की भाषा आम बोलचाल और जनजीवन की भाषा है। अपने समय की सचाई को अभिव्यक्ति प्रदान करने वाली भाषा में कहीं तल्खी और सपाट बयानी है, तो कहीं लोक मुहावरों की रसमयता भी मौजूद है। समकालीन कविता अपने कलात्मक सौंदर्य और शिल्प को कायम रखने में इस दृष्टि से कामयाब कही जा सकती है।

विचार और युगबोध, बिंब और प्रतिबिंब, अनुभव और अनुभूति लक्षण और व्यंजना के साथ मिलकर अपने युग, परिवेश और समय का चित्रांकन कर अभिव्यक्ति के विविध आयाम रचने में सक्षम है। युगबोधत्मक अनुभूति भी जब अभिव्यक्ति के धरातल पर उतरती है, तो भाषा की कारीगरी स्वयं कविता की अनुकूल शिल्पगढ़ कर चमत्कार उत्पन्न कर देती है। सन् 1950 से 1970 तक इन दो दशकों की कविता की यात्रा को साठोत्तरी कविता की यात्रा भी कह सकते हैं। इस दौर में कविता का स्वरूप कैसा रहा, उसका शिल्प कैसा रहा, इसका आंकलन समकालीन हिंदी कविता में युगबोध का स्वरूप के विश्लेषण के लिये आवश्यक प्रतीत होता है।

मुख्यबिन्दुः युगबोध, साहित्यिक, समाज, रचनात्मक, योगदान, सृजनात्मकता आदि ।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

छायावादी काव्य में निराशा, पीड़ा और संत्रास की अभिव्यंजना छायावादी काव्य एवं छायावादोत्तर व्यक्तिपरक काव्य में पर्याप्त मात्रा में हुई है। महादेवी वर्मा की दुखवादी चेतना और भावुकता के अतिरिक्त बाहर निकलने की आवश्यकता कुछ इस तरह अनुभव की गई, जैसे साँस लेने के लिये ताजा प्राण वायु जरूरी होती है। कल्पना लोक से कवियों का ध्यान जब यथार्थ की ओर गया, तब नई कविता की जमीन तैयार हुई। समसामयिकता के दायित्वबोध, समय सापेक्ष एवं चिंतन, आधुनिकता के परिप्रेक्ष्य में युगीन प्रवृत्तियों के अनुसार सम्यक यथार्थबोध के संस्पर्श से कवियों के मानस में एक आक्रोशमयी, विद्रोही, संघर्षमयी,क्रांतिकारी परिवर्तन की पक्षधर एक नयी जन-युगबोध का जन्म हुआ।

जुझारू और स्वतंत्रता के बाद मोहभंग की स्थिति के कारण ऐसे अनेक बिन्दु उभर आये, जिनसे समकालीन कविता की युगबोध का स्वरूप तैयार हुआ। प्रतिदिन जीवन की दैनन्दिन समस्याओं से रूबरू आम इंसान व्यवस्था के वर्तमान ढाँचे को देखकर सतर्क और सचेत हुआ, तो इन परिस्थितियों से लड़ते हुए बारबार आम जीवन से जुड़े कवियों ने भी अपनी युगबोध को नई ऊर्जा से नया स्वरूप प्रदान किया है।

काव्य की नवीनता से ही, कयन पद्धति अथवा शिल्प-विधान की अभिनवता स्वतः ही आ जाती है। नई कविता में छायावादी सौंदर्य के पालने में से उतारकर मानव-भावना को बलपूर्वक उठाकर जीवन रूपी समुद्र की उत्ताल तरंगों में छोड़ दिया है, जहाँ वह साहस पूर्वक सुख दुख और आशा निराशा का घात प्रतिघातों में युग जीवन के आँधी तूफानों का सामना कर रही है, जहाँ कविता अपनी वैयक्तिक अंतर्वेदना से मुक्त होकर सामाजिक व्यथा के अनुभव ग्रहण कर परिपक्व हो रही है ।

नई कविता विश्व वर्चस्व से प्रेरणा ग्रहण करके तथा तीव्र - मंद गति-लय में अभिव्यक्ति कर युग-बोध के लिये एक नवीन भावभूमि का निर्माण कर रही है। नई कविता एवं वैविध्यमय जीवन के प्रति आत्मचेतस व्यक्ति की युगबोधत्मक प्रतिक्रिया है। नई कविता का स्वर ही विविध है, जिसमें कवियों की विभिन्न प्रकार की युगबोधऐं एवं विचारधाराऐं है।

समकालीन कविता के अंतर्गत एक ओर शैली, शिल्प और माध्यमों के प्रयोग होते रहे हैं, तो दूसरी ओर समाजोन्मुखता पर बल दिया जाता रहा है। नई कविता सही अर्थों में वह है, जिसमें इन दोनों ही तत्त्वों का स्वरूप एवं संतुलित समन्वय है। कविता कहीं लयात्मक मुक्तछंद में है तो कहीं

प्रगतिशील होते हुए भी भावप्रधान अथवा भावात्मक है। कविता कभी सरल तो कभी जटिल और कभी-कभी उक्ति समान लगती हैं, कभी वह भग्नता एवं विषाद को व्यक्त करती है, तो कभी आस्था और निष्ठा को युगबोध भी देती है। प्रयोगधर्मी कविता कभी बौद्धिक व चेतना, तो कभी लोकरूचि में अनुकूल आस्वाद का अनुभव देती है।

शमशेर बहादुर सिंह ने 'हमारी जमीन' नामक कविता में विभिन्न युगबोधओ को व्यक्त किया है, जिससे मानव जीवन उत्थानयुक्त बनता है।

हमारी जमीन जो सिर्फ अपने चाँद

से पास है, सूरज से कितनी दूर है

यद्यपि उससे बँधी हुई और ग्रहों से भी

एक तरह से बँधी-सी ही हुई मगर सदैव

'नई कविता प्रयोगवाद से मार्क्सवाद के घरातल की ओर विस्तार पाकर कभी व्यंग्य प्रधान बौद्धिक कविता का स्वरूप ग्रहण करती है, तो कभी लोक साहित्य से प्रभावित होकर अंतर चेतना के लोकरंगों में रंगी प्रतीत होती है। समकालीन कविता के आविर्भाव में सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों का बड़ा हाथ रहा है। जीवन की विषमता, घुटन, संत्रास, कुंठा, वेदना, पीड़ा, संघर्ष, अन्याय, समय का चित्र, शोषण और आम इंसान के दर्द का लेखा-जोखा नई कविता की महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है।

सन् 1962 में भारत-चीन युद्ध के बाद जनमानस में उठे एक नये ज्वर के परिणाम स्वरूप कवियों का मानस भी प्रभावित हुआ और एक नये तेवर और मिजाज की कविता सामने आई है। इस कविता में सौंदर्यानुभूति और वस्तुतत्त्व दोनों ही स्तरों पर परिवर्तन देखा गया है। एक नया शिल्प इस नई युगबोध के साथ जोड़ा गया।

मुक्तिबोध ने टिप्पणी की है कि नया कवि केवल बाह्य के प्रति युगबोधघात करके, युगबोधत्मक प्रतिक्रिया करके उस शब्दों में बाँध देता है। यह इसलिये कि कवि कलाकार ययार्थ-बोध के प्रथम स्तर पर युगबोधत्मक आंकलन और युगबोधत्मक प्रतिक्रिया के स्तर पर ही रहना चाहते हैं। वे वास्तविक जीवन विश्लेषण को उसकी पूरी गहराई से आत्मसात करना नहीं चाहते। यही कारण है

कि जीवन के विस्तार चित्रण हमें नई कविता में कम दिखाई देते हैं क्योंकि उसमें केवल विशिष्ट का चित्रण ही नहीं, वरन् परस्पर संबंधित विशिष्टों का चित्रण और सामान्यीकरण इन दोनों की आवश्यकता है।

मुक्तिबोध ने नई कविता के संबंध में जो विचार किये उनका एक निष्कर्ष यह है, कि कलाकृति कोई भी हो, उसकी व्यक्त रचना प्रक्रिया में वास्तविक वृहद अंश हमें सजग और आत्मलीन क्षण बहुत कम होते हैं। प्रवृत्तियों के एक ज्ञानानुभव आदि अकाव्यात्मक अंशों से घिरा रहता है। ऐसी स्थिति में युगबोध के व्यापक विस्तार के निमित्त रचनाकार के लिये यह आवश्यक हो जाता है, कि वह सौंदर्यानुभूति के विशिष्ट क्षण द्वारा उपस्थिति अन्र्ततत्वों के क्षेत्रों का अतिक्रमण करे, और इस प्रकार अपनी आत्मकेन्द्रित अथवा अनुभूतियाँ महत्वपूर्ण होती है। अतः उनकी अभिव्यक्ति भी महत्त्वपूर्ण है। अपने परिवेश में यर्थाथबोध का साक्षात्कार करने के लिये हम विवश होते हैं। उसकी अभिव्यंजना के निमित्त हमें अपने अनुभवबोध में विश्लेषणात्मकता लम्बी होती है। इस विश्लेषणात्मकता की कमी के कारण नई कविता धीरे-धीरे और अवसाद की ओर बढ़ने लगी । यहाँ वस्तु की अपेक्षा शिल्प पर अधिक जोर था। शिल्प में भी उन्होंने भाषा को नया संस्कार दिया था। शब्द की आत्मा में छिपे अर्थ को पहचानने की कोशिश की थी।

कवि ने 'रोम सागर के बीचोबीच' नामक कविता में आधुनिक भावबोध को व्यक्त किया है।

रोम सागर के बीचो बीच

आधुनिक माल्टा के सुसंस्कृत टापू

में उत्तर भारत का हृदय और मस्तिष्क

कोई टटोल रहा है।

साठोत्तरी कविता आंदोलनों के दौर में कुण्ठा, संत्रास एवं क्लेष के साथ आधुनिक भावबोध की युगबोध का नगरीकरण हुआ । यथार्थता की अनुभूति हुई और निषेधात्मकता का स्वर सुनाई दिया। साठोत्तर वर्षों में देश की सामाजिक एवं राजनीतिक स्थिति में रचनाकार के लिये रचना कर्म को

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

महिमामंडित कर्म नहीं रहने दिया। अतः सभी कवि अपने अस्तितत्व की रक्षा हेतु सावधान हो गये। इससे रचनाकार के कर्म होने की भावना को ठेस पहुँची ।

सातवें दशक की कविता में सामाजिक परिवर्तन के साथ-साथ राजनीतिक क्षितिज पर हुए बदलाव ने भी जीवन मूल्यों तथा उससे संबद्ध स्थितियों को निरूपित करने की प्रेरणा प्रदान की थी। परिणामस्वरूप इस जो कविता में अनेक ऐसी प्रवृत्तियाँ उभरी मोहभंग, स्वप्नभंग, सपाट बयानी, आक्रोश, विद्रोह आंतरिक संघर्ष, निर्मम वास्तविकताओं की क्रूर व्यंजना, अनोखेपन अर्थहीनता, भूख, अकुलाहट, बैचेनी, असंतोष और अजनबियत के भावों से जुड़ी हुई है। युवा कविता में अपने परिवेश को यथार्थ शिल्प में प्रस्तुत कर दिया गया है। सातवें दशक की कविता में जो युगबोध व्यक्त हुई है, उसमें यह भी उल्लेखनीय संदर्भ है, कि रचनाकार की सौंदर्य दृष्टि में परिवर्तन आया है। वर्तमान की असंगतियों एवं स्थापित व्यवस्था के प्रति असहमति एवं विरोध स्पष्ट परिलक्षित होता है। प्रतिबद्ध

कविता, सहज कविता, सांप्रतिक कविता एवं दलित कविता अनेक नामों से व्यवस्था विरोध में कवियों के स्वर सुनाई देते हैं।

मुक्तिबोध, शमशेर, त्रिलोचन, वीरेन्द्र कुमार जैन, अज्ञेय, केदारनाथ अग्रवाल, सर्वेश्वर, रघुवीर सहाय, श्रीकांत वर्मा एवं दुष्यंत कुमार आदि के रचनाकर्म में वस्तु और शिल्प का सुन्दर समन्वय मिलता है। युगबोध के धरातल पर अपनी चित्रात्मक शैली, बिंब- प्रतिबिंब, प्रतीक और शैली, भाषा और व्यंजना की दृष्टि से शमशेर बहादुर सिंह एक समर्थ कवि होने के साथ-साथ एक महान शिल्पी भी हैं।

शमशेर अत्यंत जटिल काव्य-युगबोध और सूक्ष्म शिल्प संसार वाले श्रेष्ठ विशिष्ट कवि हैं। भाषा, युगबोध एवं संगीत सभी दृष्टियों से उनका रचना संसार अपूर्व है। उनका युगबोध गहरे अंतर्विरोधों से युक्त है। शायद इसी कारण उनके कृतित्व के समग्र मूल्यांकन के प्रयास कम ही हुए। जबकि वे चर्चा के केन्द्र में लगातार रहे हैं।

शमशेर की काव्य-युगबोध, उनके बिंबों का रचना संसार, उनकी भाषा, छंद, लय, गीति काव्य एवं स्वरूप आदि का विवेचन करते हुए अनेक काव्य आन्दोलनों तथा उनके समकालीन रचना धर्मियों के संदर्भ में उनके साहित्य का मूल्यांकन भी किया गया है। उनके काव्य वैशिष्ट्य, युगबोध और शिल्प पर अभी उनके

मूल्यांकन की दृष्टि से पर्याप्त विश्लेषण की शेष संभावनाएँ अब भी श्रेष्ठ हैं। शमशेर की काव्य के युगबोधत्मक तथा शिल्पगत पक्षों पर उनके काव्य को उनकी विचारधारा तथा कलात्मक रुझानों की रोशनी में प्रस्तुत करने के उद्देश्य को लेकर ही उनके कृतित्व एवं व्यक्तित्व के नये आयामों का उद्घाटन करते हुए, उनके साहित्य में अंतर्निहित युगबोध की पड़ताल की गई है।

शमशेर की कविता में प्रेम और दुख की तीव्रता का स्वर है। उनकी कविता संसार के चक्के पर है। कवि ने प्रेम, वेदना और दुख को व्यक्त किया है।

हृदय गूँगा नहीं। फेफड़े दोनों काम करते संग-संग, समान रूप ।

शमशेर की कविता में युगबोध के विविध आयाम है। उनकी युगबोध के केन्द्र में आदमी है। वे जीवन के यथार्थ और शोषित पीड़ित मानवता के संघर्षो को अपनी कविता में उठाते रहे हैं। उनके स्वरों में जीवन की मूलभूत समस्याओं का चित्रण है। वे जीवन और जगत् के संघर्ष को चित्रित करने वाले अनूठे चितेरे हैं। मानवता के मूल्यों की रक्षा के ध्येय से रची गई उनकी कविताएँ विश्व प्रेम का संदेश हैं। प्रकृति और पर्यावरण के प्रति वे सदा जागरूक रहे हैं।

आधुनिक युग के कवियों में वे युगबोध के सशक्त हस्ताक्षर हैं। उनकी काव्य युगबोध के और भी कई इंद्रधनुषी पक्ष हैं। वे न केवल एक कवि, शायर या विचारक हैं, बल्कि वे एक उत्कृष्ट स्तर के चित्रकार भी हैं। पिकासो से प्रभावित चित्र - शैली भी उनकी काव्य-युगबोध का एक अन्य आयाम हैं।

"जीवन की तुला में प्राणों का संयमन, सहजतम एक अद्भुत
व्यापार सरलता का हमारी ही तरह, कैसा दुरूस्तम स्पष्टतम।"

शमशेर की कविता हमारे वक्त की जतन सहेजकर रखा गयी ओढ़नी है। वह आदमीनामा जो व्यथा और हर्ष के साथ अनेक जीवन छवियों को लेकर अनेक रंगों में लिखा गया है। शमशेर जीवन की सच्चाई के साथ जमीन से जुड़े कवि हैं।

इसीलिये वे कवियों के कवित्व होकर भी अपनी अंतरात्मा से एक जनजीवन के जनवादी कवि हैं। शमशेर मूलतः सौंदर्यबोध और रोमानियत के कवि हैं, लेकिन उनकी युगबोध का फलक विस्तृत और बहु आयामी है। उनके काव्य में छायावाद, प्रयोगवाद और प्रगतिवाद तीनों विचारधाराओं के कथ्य और शिल्प का संगम

मिलता है। उनमें निराला का वैविध्य और मुक्तिबोध की बिंबधर्मिता का अद्भुत सम्मिश्रण मिलता है। वे किसी सीमा रेखा में बंधे नहीं हैं। यही कारण है कि शमशेर के काव्य में दुनिया समाज एवं सांसारिक, भौतिक एवं सांस्कृतिक जगत् के अनेक ययार्थपरक चित्र दृष्टिगत होते हैं। मार्क्सवाद से प्रभावित होने के कारण वे सर्वहारा के प्रति अधिक युगबोधशील रहे हैं। श्रमिकों के शोषण तथा उन पर हो रहे अत्याचारों को वे सहन नहीं कर पाते हैं। उनके दुख और बेबसी से वे बेचैन हो उठते हैं। सन् 1944 में ग्वालियर रियासत द्वारा मजदूरों पर किये गये अन्याय से द्रवित होकर लिखी उनकी यह कविता द्रष्टव्य है-

गरीब के हृदय

टंगे हुए कि रोटियों के लिये हुए

निशान जो रहे के चल रहा !

लहू भरे ग्वालियर के बाजार में जुलूस ।

यहाँ शमशेर गरीब मजदूरों के पक्षधर के रूप में आंदोलनरत है। सन् 1962 में जब चीन, हिंदी चीनी भाई-भाई कहकर भारत की पीठ में छुरा भोंकता है, तो वे मार्क्सवाद के प्रणेताओं को ललकारते हुए कहते है- मार्क्स को जला दो। लेनिन को उड़ा दो, माओ, क्यून-ल्यून को प्रशान्त महासागर में डुबो दो। देश में व्याप्त भ्रष्टाचार एवं साम्प्रदायिकता से वे सदा दुखी रहे । कर्त्तव्यमूल वाले नेताओं से वे कहते हैं कि, जो धर्मों के अखाड़े हैं, उन्हें लड़वा दिया जाए। जरूरत क्या है

कि हिंदुस्तान पर हमला किया जाए। सामाजिक विघटन पर वे कबीर की तरह प्रहार करते रहे हैं।

संदर्भ सूची

1. सिंह शमशेर बहादुर, इतने पास अपने हमारी जमीन, राजकमल प्रकाशन दिल्ली, संस्करण 2017, पृ. 21
2. सिंह शमशेर बहादुर, इतने पास अपने रोम सागर के बीचोबीच, राजकमल प्रकाशन दिल्ली, संस्करण 2017, पृ. 30
3. सिंह शमशेर बहादुर, इतने पास अपने, संसार के चक्के पर हैं, राजकमल प्रकाशन दिल्ली, संस्करण 2017, पृ. 37

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

4. **सिंह शमशेर बहादुर**, **इतने पास अपने पिकासोई कला**, **राजकमल प्रकाशन दिल्ली**, **संस्करण** 2017, **पृ**. 23

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

# जोधपुर और आसपास के क्षेत्रों में कला, संस्कृति और इतिहास का संगम

रामेश्वरी कुमारी

विद्यार्थी वीएमओयू कोटा.

परमेश्वरी

विद्यार्थी वीएमओयू कोटा.

**Paper Rcevied date**

05/05/2025

**Paper date Publishing Date**

10/05/2025

**DOI**

https://doi.org/10.5281/zenodo.15390151

IMPACT FACTOR

5.924

## ABSTRACT

यह समीक्षा पत्र जोधपुर, राजस्थान की समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर और कला परंपराओं की व्यापक चर्चा करता है। जोधपुर, जिसे 'ब्लू सिटी' के नाम से भी जाना जाता है, राजस्थान का एक प्रमुख ऐतिहासिक और सांस्कृतिक केंद्र है। इस शहर का इतिहास और वास्तुकला राजपूतों के गौरव और उनकी कला के अद्वितीय योगदान से भरा हुआ है। जोधपुर के शाही किलों, महलों, और हावेलियों की वास्तुकला ने न केवल राज्य की ऐतिहासिकता को परिभाषित किया है, बल्कि यह भारतीय और मुग़ल वास्तुकला के संगम का प्रतीक भी है। मेहरानगढ़ किला, उम्मेद भवन पैलेस, और जसवंत थड़ा जैसे स्थापत्य उदाहरण जोधपुर के ऐतिहासिक महत्व को दर्शाते हैं।

पत्र में जोधपुर की पारंपरिक कला रूपों जैसे पिचवाई चित्रकला, मिनिएचर आर्ट, जोधपुरी ब्लू पॉटरी और बॉक्स प्रिंटिंग का विश्लेषण किया गया है। इन कलाओं का समृद्ध इतिहास जोधपुर की सांस्कृतिक धरोहर का महत्वपूर्ण हिस्सा है। इसके अलावा, जोधपुर में कला कार्यशालाओं, सांस्कृतिक महोत्सवों, और स्थानीय संगीत तथा नृत्य शैलियों जैसे कच्छी घोड़ी और कालबेलिया का महत्व भी इस पत्र में उल्लेखित किया गया है।

इस समीक्षा में जोधपुर के कला, संस्कृति और इतिहास के संरक्षण के प्रयासों का भी विस्तार से वर्णन किया गया है, जिसमें पर्यटन के बढ़ते प्रभाव और स्थानीय कलाकारों की भूमिका पर भी चर्चा की गई है। अंत में, जोधपुर के सांस्कृतिक धरोहर और कला की भविष्यवाणी करते हुए, इस क्षेत्र में आगामी शोध और अध्ययन के अवसरों को भी परखा गया है।

**मुख्य शब्द:** जोधपुर सांस्कृतिक धरोहर, राजपूत कला और वास्तुकला, मेहरानगढ़ किला, पारंपरिक कला रूप, पर्यटन और सांस्कृतिक संरक्षण

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

**प्रस्तावना**

जोधपुर, राजस्थान का दूसरा सबसे बड़ा शहर है और यह थार मरुस्थल के पश्चिमी किनारे पर स्थित है। जोधपुर को 'ब्लू सिटी' के नाम से भी जाना जाता है, क्योंकि यहां की अधिकांश इमारतें नीले रंग से रंगी हुई हैं, जो इसे एक अद्वितीय दृश्य प्रभाव प्रदान करती हैं। इस शहर की स्थापना 1459 में राठौड़ वंश के शासक राव जोधा ने की थी, और यह मण्डोर की प्राचीन राजधानी के स्थान पर बसा। जोधपुर का ऐतिहासिक महत्व बहुत गहरा है क्योंकि यह शहर राजपूतों के गढ़ के रूप में जाना जाता है और यहां के किले, महल, मंदिर और हवेलियां इसकी ऐतिहासिक धरोहर का हिस्सा हैं। शहर का प्रमुख आकर्षण मेहरानगढ़ किला है, जो एक पहाड़ी पर स्थित है और इसे राव जोधा द्वारा बनवाया गया था।

सामाजिक संरचना के संदर्भ में जोधपुर में मारवाड़ी संस्कृति का प्रमुख प्रभाव है, जो व्यापार, उद्योग और कृषि में विशिष्ट है। यहां के लोग अपनी धार्मिक परंपराओं, जैसे कि गंगौर और मारवाड़ महोत्सव, को बड़े धूमधाम से मनाते हैं। साथ ही, जोधपुर के समाज में राजपूतों की प्रभावशाली उपस्थिति के साथ-साथ मारवाड़ी, माली, जाट, और अन्य जातियों का भी महत्वपूर्ण योगदान है। जोधपुर के सांस्कृतिक जीवन में मिश्रित तत्वों का सम्मिलन देखने को मिलता है, जो इस शहर को राजस्थान के सांस्कृतिक और ऐतिहासिक केंद्र के रूप में प्रतिष्ठित करता है।

जोधपुर और इसके आसपास के क्षेत्रों में कला, संस्कृति और इतिहास का संगम एक अद्वितीय और समृद्ध परिपेक्ष्य प्रस्तुत करता है, जो राजस्थान की विरासत को जीवित और समृद्ध बनाता है। इस विषय के चयन का प्रमुख कारण यह है कि जोधपुर ने अपने ऐतिहासिक विकास, स्थापत्य कला और सांस्कृतिक धरोहर के माध्यम से पूरे राजस्थान और भारत में अपनी विशिष्ट पहचान बनाई है। जोधपुर की ऐतिहासिक इमारतें जैसे मेहरानगढ़ किला और उम्मेद भवन पैलेस, राजस्थान की शाही संस्कृति और स्थापत्य कला के अद्भुत उदाहरण हैं, जो न केवल वास्तुकला के प्रेमियों को आकर्षित करते हैं, बल्कि इतिहास प्रेमियों के लिए भी एक अमूल्य धरोहर हैं।

इस विषय का उद्देश्य जोधपुर और आसपास के क्षेत्रों में समाहित कला, संस्कृति और इतिहास के संबंध को समझाना और उसका समग्र विश्लेषण करना है। यह समीक्षा जोधपुर के सांस्कृतिक धरोहरों, लोक कला, राजस्थानी संगीत और नृत्य के विविध रूपों को जोड़ने का प्रयास करेगी, जो शहर की पहचान और परंपराओं को पुनः उजागर करने में सहायक होगी। साथ ही, यह पर्यटन के दृष्टिकोण से भी महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह समग्र धरोहर पर्यटकों को आकर्षित करती है और स्थानीय सांस्कृतिक जीवन को प्रगति की दिशा में प्रेरित करती है।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

इस पेपर का उद्देश्य जोधपुर और इसके आसपास के क्षेत्रों में कला, संस्कृति और इतिहास के परस्पर संबंधों का गहन विश्लेषण करना है। जोधपुर का सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य कला के विभिन्न रूपों का संगम है, जिसमें स्थापत्य कला, चित्रकला, शिल्पकला और संगीत शामिल हैं। इस पेपर में हम जोधपुर के ऐतिहासिक महत्व के साथ-साथ कला की विविधता और उसकी सामाजिक-आर्थिक भूमिका पर भी ध्यान केंद्रित करेंगे। अनुसंधान की दिशा यह होगी कि किस प्रकार जोधपुर की सांस्कृतिक धरोहर, जैसे मेहरानगढ़ किला और उम्मेद भवन, न केवल स्थापत्य कला के महत्वपूर्ण उदाहरण हैं, बल्कि कला के अन्य रूपों के माध्यम से शहर की सामाजिक और राजनीतिक पहचान को भी दर्शाते हैं। इसके अलावा, यह अध्ययन जोधपुर के लोक कला, जैसे हस्तशिल्प और पारंपरिक संगीत, के समकालीन संदर्भ में पुनरावलोकन करेगा, जिससे संस्कृति और कला की भूमिका को समझा जा सके।

## 0. ऐतिहासिक संदर्भ

जोधपुर की स्थापना 1459 ईस्वी में राठौड़ वंश के शासक राव जोधा ने की थी। राव जोधा ने मण्डोर की प्राचीन राजधानी को छोड़कर इस शहर की स्थापना की, क्योंकि मण्डोर का स्थान सामरिक दृष्टि से उपयुक्त नहीं था। जोधपुर को शुरू में "मारवाड़" के नाम से जाना जाता था, जो बाद में राव जोधा के नाम पर जोधपुर के रूप में प्रसिद्ध हुआ। जोधपुर का ऐतिहासिक महत्व राठौड़ वंश के योगदान से गहरा जुड़ा हुआ है। राव जोधा और उनके उत्तराधिकारी शासकों ने इस क्षेत्र में कई महत्वपूर्ण संरचनाएं और किले बनवाए, जिनमें प्रमुख मेहरानगढ़ किला है। यह किला राव जोधा द्वारा बनवाया गया था और आज भी जोधपुर का प्रतीक माना जाता है। राठौड़ शासकों ने जोधपुर को एक समृद्ध और सशक्त राज्य बनाने के लिए युद्ध और शासन कला में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उन्होंने जोधपुर को व्यापार, संस्कृति और कला के केंद्र के रूप में स्थापित किया। इसके अलावा, उम्मेद भवन पैलेस जैसे भव्य महल और किले, जो जोधपुर की शाही धरोहर का हिस्सा हैं, शासकों की स्थापत्य कला और समृद्धि का प्रतीक हैं। जोधपुर के शासकों ने कला, संस्कृति और विज्ञान के क्षेत्र में भी अपनी पहचान बनाई, जिससे यह शहर भारतीय इतिहास में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

*तालिका 1: जोधपुर के शासक: 1459 से 1947 तक के शासकों का विवरण*

| नाम | राज्य आरंभ | समाप्त |
| --- | --- | --- |
| 1. **राव सिंहा** (1237-1273) | राव जोधा - जोधपुर के संस्थापक और राठौड़ गौत्र के 15वें मुखिया। | 12 मई 1459 |
| 2. **राव सातल** | अफ़ग़ान हमलावरों से 140 महिलाओं को बचाने में लगे घावों से मौत। | 6 अप्रैल 1489 |

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

| | | |
|---|---|---|
| 3. **राव सुजा** | | मार्च 1492 |
| 4. **राव बिरम सिंह** – बघा के पुत्र | | 2 अक्टूबर 1515 |
| 5. **राव गंगा** – राणा सांगा के भारत के सुलतान में सहयोग | | 8 नवम्बर 1515 |
| 6. **राव मालदेव** – शेरशाह सूरी के आक्रमण को सफलतापूर्वक पीछे धकेला | | 9 मई 1532 |
| 7. **राव चन्द्र सेन** | मुग़लों के साथ युद्ध में अपना अधिकतर क्षेत्र खो दिया | |
| 8. **राजा उदय सिंह मोटा राजा** | एक जागीरदार के रूप में मुग़लों ने 'राजा' पुनः स्थापित किया | 4 अगस्त 1583 |
| 9. **सवाई राजा सुरजमल** | | 11 जुलाई 1595 |
| 10. **महाराजा गज सिंह प्रथम** | अपने आप से 'महाराजा' उपनाम लेने वाले प्रथम | 7 सितम्बर 1619 |
| 11. **महाराजा जसवंत सिंह** – धर्मातपुर के युद्ध में औरंगजेब से लड़े। | | 6 मई 1638 |
| 12. **राजा राय सिंह** | राजा अमर सिंह के पुत्र | 1659 |
| 13. **महाराजा अजीत सिंह** – औरंगजेब के साथ 25 वर्षों के युद्ध के बाद मारवाड़ के महाराजा बने। दुर्गादास राठौड़ ने इस युद्ध में मुख्य भूमिका निभाई। | 19 फ़रवरी 1679 | 24 जून 1724 |
| 14. **राजा इन्द्र सिंह** | औरंगजेब द्वारा महाराजा अजीत सिंह के विरुद्ध घोषित किया गया लेकिन मारवाड़ में लोकप्रिय नहीं हुआ। | 9 जून 1679 |
| 15. **महाराजा अभय सिंह** | सरबुलंद खान को हराकर छोटे समय के लिए पूरे गुजरात पर कब्जा किया। | 24 जून 1724 |
| 16. **महाराज राम सिंह** | प्रथम राज्यकाल | 18 जून 1749 |

| | | |
|---|---|---|
| 17. **महाराजा बख्त सिंह** – एक महान योद्धा और जनरल, उन्होंने सारबुलंद खान के सामने मारवाड़ी सेना का नेतृत्व किया और उसे हराया। गंगवाना के युद्ध में उन्होंने मुग़लों और कच्छवाहों की संयुक्त सेना को हराया। | जुलाई 1751 | 21 सितम्बर 1752 |
| 18. **महाराजा विजय सिंह** – प्रथम राज्यकाल | 21 सितम्बर 1752 | 31 जनवरी 1753 |
| 19. **महाराजा राम सिंह** – दूसरा राज्यकाल | 31 जनवरी 1753 | सितम्बर 1772 |
| 20. **महाराजा विजय सिंह** – दूसरा राज्यकाल – महादजी सिंधिया से हारकर अजमेर नगर और दुर्ग को अभ्यर्पण करने को मजबूर हुये। | सितम्बर 1772 | 17 जुलाई 1793 |
| 21. **महाराजा भीम सिंह** | 17 जुलाई 1793 | 19 अक्टूबर 1803 |
| 22. **महाराजा मान सिंह** | 6 जनवरी 1818 को ब्रिटेन के साथ संधि की। | 19 अक्टूबर 1803 |
| 23. **महाराजा सर तख्त सिंह** | अहमदनगर के पूर्व शासक, अजीत सिंह का वंशज। | 4 सितम्बर 1843 |
| 24. **महाराजा सर जसवंत सिंह द्वितीय** | 13 फ़रवरी 1873 | 11 अक्टूबर 1895 |
| 25. **महाराजा सर सरदार सिंह** – ब्रिटानी भारतीय सेना में कर्नल | 11 अक्टूबर 1895 | 20 मार्च 1911 |
| 26. **महाराजा सर सुमैर सिंह** – ब्रिटानी भारतीय सेना में कर्नल | 20 मार्च 1911 | 3 अक्टूबर 1918 |
| 27. **महाराजा सर उमैद सिंह** – ब्रिटानी भारतीय सेना में लेफ्टिनेन्ट-जनरल | 3 अक्टूबर 1918 | 9 जून 1947 |

| | | |
|---|---|---|
| 28. **महाराजा हनवंत सिंह** – मारवाड़ के शासक (जोधपुर) | 9 जून 1947 | 15 अगस्त 1947 |
| 29. **महाराजा गज सिंह द्वितीय** – वर्तमान | | |

(*जोधपुर*, द्वारा प्रकाशित [एस.एल।], 1933)

2.1 राजपूताना साम्राज्य का प्रभाव

राजपूताना साम्राज्य का जोधपुर पर गहरा प्रभाव था, जो राठौड़ वंश के शासकों द्वारा स्थापित हुआ। राठौड़ शासकों ने 15वीं सदी में जोधपुर की नींव रखी और इसे एक शक्तिशाली राज्य के रूप में स्थापित किया। राव जोधा ने 1459 में जोधपुर शहर की स्थापना की और इस शहर को एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और राजनीतिक केंद्र के रूप में विकसित किया। राठौड़ शासकों के नेतृत्व में जोधपुर ने समृद्धि की ऊँचाइयाँ छुईं और कला, साहित्य, स्थापत्य और सैन्य कला में योगदान दिया। राजपूत शासकों का सबसे बड़ा योगदान उनकी शानदार किलों और महलों के निर्माण में था। मेहरानगढ़ किला, जो जोधपुर का प्रतीक है, राठौड़ शासकों के अद्वितीय स्थापत्य कौशल का उदाहरण है। इस किले का निर्माण राव जोधा ने किया था और यह राजस्थान की सांस्कृतिक धरोहर का महत्वपूर्ण हिस्सा बन गया। इसके अलावा, उम्मेद भवन महल और जसवंत थड़ा जैसे अन्य महल भी राजपूत संस्कृति और उनकी कला का प्रतीक हैं। राजपूत शासकों का योगदान न केवल सैन्य और प्रशासनिक क्षेत्र में था, बल्कि उन्होंने सांस्कृतिक और धार्मिक धरोहरों की भी महत्वपूर्ण रक्षा की। उनके द्वारा बनाए गए किले और महल आज भी भारतीय स्थापत्य कला और संस्कृति के अद्वितीय उदाहरण माने जाते हैं।

2.2 मुगल और मराठा प्रभाव

मुगल साम्राज्य का भारत के राजनीतिक, सांस्कृतिक और सामाजिक जीवन पर गहरा प्रभाव था। 16वीं और 17वीं सदी में मुगलों ने भारत के अधिकांश हिस्से पर अपनी पकड़ बनाई, विशेष रूप से दक्कन क्षेत्र में, जहां उन्होंने विभिन्न राज्यों को नियंत्रित किया और अपनी सत्ता स्थापित की। मुगलों ने एक केंद्रीकृत प्रशासनिक प्रणाली बनाई, जिससे सम्राटों का शक्ति केंद्र दिल्ली में था। उन्होंने अपनी कला, वास्तुकला और संस्कृति को फैलाया, जिससे भारत की सांस्कृतिक धरोहर में महत्वपूर्ण योगदान हुआ।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

हालाँकि, मुगलों का विस्तार मराठों के लिए एक चुनौती बन गया। मराठों ने स्वायत्तता के लिए संघर्ष किया और शिवाजी महाराज के नेतृत्व में एक शक्तिशाली साम्राज्य की स्थापना की। शिवाजी ने मुगलों के खिलाफ कई सफल युद्ध लड़े, जिनमें सूरत पर हमला और मुगलों के खिलाफ विद्रोह शामिल हैं। मराठों ने कई किलों और क्षेत्रों पर कब्जा किया, जिससे मुगलों को भारी नुकसान हुआ।

मुगल और मराठा संघर्षों ने भारतीय राजनीति में महत्वपूर्ण बदलाव लाए, और मराठों ने अंततः मुगलों को अपनी सत्ता से चुनौती दी। मराठों का साम्राज्य 18वीं सदी में एक प्रमुख शक्ति बनकर उभरा, जबकि मुगलों की शक्ति धीरे-धीरे कमजोर होती गई।

2.3 स्मारकों का ऐतिहासिक महत्व

जोधपुर के ऐतिहासिक स्मारक न केवल राजपूत शाही विरासत के प्रतीक हैं, बल्कि भारतीय इतिहास और संस्कृति का महत्वपूर्ण हिस्सा भी हैं। इनमें **मेहरानगढ़ किला**, **उम्मेद भवन पैलेस** और **जसवंत थड़ा** विशेष रूप से महत्वपूर्ण हैं।

**मेहरानगढ़ किला**, जो जोधपुर शहर के ऊपर स्थित है, राठौड़ शासकों द्वारा 15वीं शताब्दी में निर्मित किया गया था। यह किला भारतीय वास्तुकला का अद्वितीय उदाहरण प्रस्तुत करता है, जिसमें राजपूत और मुगल शैलियों का सम्मिलन है। किले की भव्य दीवारें, महल, मंदिर और संग्रहालय भारतीय सम्राटों की शक्ति, कला और संस्कृति का प्रमाण हैं। मेहरानगढ़ किला जोधपुर की ऐतिहासिक पहचान है, और यहां से शहर और आसपास के क्षेत्र का शानदार दृश्य देखा जा सकता है।

**उम्मेद भवन पैलेस**, जो जोधपुर के सबसे बड़े और भव्य महलों में से एक है, 20वीं शताबदी की वास्तुकला का उदाहरण है। यह महल राठौड़ शासक महाराजा उम्मेद सिंह द्वारा बनवाया गया था और इसकी वास्तुकला में इंडो-सरसेनिक और आर्ट डेको शैलियों का अद्भुत मिश्रण है। यह महल जोधपुर के शाही परिवार का निवास था और आज यह एक होटल और संग्रहालय के रूप में उपयोग किया जा रहा है, जो भारत की ऐतिहासिक समृद्धि को दर्शाता है।

**जसवंत थड़ा**, जिसे "मारवाड़ का ताजमहल" भी कहा जाता है, यह संगमरमर से बना एक सुंदर स्मारक है। यह महल महाराजा जसवंत सिंह द्वितीय की याद में 1899 में उनके पुत्र महाराजा सरदार सिंह द्वारा बनवाया गया था। जसवंत थड़ा जोधपुर की शाही संस्कृति और विरासत का प्रतीक है, और यह एक ऐतिहासिक स्थल के रूप में अपनी वास्तुकला और सांस्कृतिक महत्व के लिए प्रसिद्ध है।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

IEARJ International Educational Applied Research Journal

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

ये तीन स्मारक जोधपुर की शाही धरोहर को जीवित रखते हैं और पर्यटन के दृष्टिकोण से भी महत्वपूर्ण हैं, जो दर्शकों को भारतीय इतिहास और कला से जुड़ी गहरी समझ प्रदान करते हैं।

### 3. सांस्कृतिक मिश्रण

3.1 राजपूत और मुघल सांस्कृतिक मिश्रण

जोधपुर में राजपूत और मुग़ल संस्कृति का मिश्रण भारतीय वास्तुकला, कला और सांस्कृतिक जीवन में एक अद्वितीय उदाहरण प्रस्तुत करता है। इस मिश्रण की विशेषताएँ विशेष रूप से जोधपुर के प्रमुख स्मारकों और ऐतिहासिक स्थलों में देखने को मिलती हैं, जैसे **मेहरानगढ़ किला**, **जसवंत थड़ा**, और **उम्मेद भवन पैलेस**। इन स्मारकों में मुग़ल और राजपूत स्थापत्य कला की शैली और तकनीकों का सम्मिलन स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

राजपूतों की वास्तुकला में मजबूत किलों, महलों और मंदिरों का निर्माण हुआ, जबकि मुग़ल शैली में नक्काशीदार जालियाँ, गुंबद और बारीक विवरण शामिल हैं। **मेहरानगढ़ किला** में राजपूत स्थापत्य की सशक्त दीवारों और मुग़ल शैली के साज-सज्जा के तत्वों का अद्भुत मिश्रण देखा जा सकता है। वहीं, **जसवंत थड़ा** और **उम्मेद भवन** में मकराना संगमरमर का उपयोग और मुग़ल शैली के सुंदर गुंबद दर्शाते हैं।

यह सांस्कृतिक मिश्रण न केवल स्थापत्य कला में, बल्कि संगीत, कला और साहित्य में भी दिखता है, जहां राजपूत और मुग़ल तत्वों का संगम हुआ। जोधपुर में यह मिश्रण एक समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का रूप ले चुका है, जो भारतीय इतिहास का महत्वपूर्ण हिस्सा है।

*तालिका 1: राजपूत और मुग़ल सांस्कृतिक मिश्रण*

| विशेषता | राजपूत शैली | मुग़ल शैली | मिश्रण में विशेषताएँ |
|---|---|---|---|
| वास्तुकला | मजबूत किले, महल, मंदिर | नक्काशी, गुंबद, जालियाँ | राजपूत किलों में मुग़ल साज-सज्जा |
| सामग्री | बलुआ पत्थर, लकड़ी | संगमरमर, पत्थर | मकराना संगमरमर का उपयोग |

| | | | |
|---|---|---|---|
| सजावट | सरल, कठोरता, सामरिक विचार | बारीक नक्काशी, रंग-बिरंगे चित्र | दोनों शैलियों का सम्मिलन |

इस प्रकार, जोधपुर में राजपूत और मुग़ल संस्कृति का मिलन न केवल स्थापत्य कला, बल्कि सांस्कृतिक जीवन के हर क्षेत्र में गहरी छाप छोड़ता है।

3.2 मारवाड़ी संस्कृति

मारवाड़ी संस्कृति राजस्थान की एक समृद्ध, जीवंत और ऐतिहासिक सांस्कृतिक परंपरा है, जो मुख्यतः **मारवाड़ क्षेत्र** में विकसित हुई। इस संस्कृति की पहचान उसकी **भाषा, पारंपरिक पहनावे, खानपान, संगीत, नृत्य, लोककला**, तथा सामाजिक मूल्यों से होती है। मारवाड़ी भाषा, जो राजस्थानी की एक प्रमुख उपभाषा है, इस समुदाय की आत्मा मानी जाती है। मारवाड़ी समाज में **परिवार और समाज का सामूहिक जीवन** अत्यंत महत्वपूर्ण होता है। **व्यापारिक कुशलता**, **दूरदर्शिता**, और **सद्भावना** इस समाज की विशेषताएँ हैं, जिसने इस समुदाय को राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी प्रतिष्ठित किया है। पारंपरिक **त्योहारों** जैसे **गणगौर**, **तीज**, **दीपावली**, और **मारवाड़ उत्सव** में मारवाड़ी लोक जीवन की झलक स्पष्ट रूप से मिलती है।

इसके अलावा, **लोक संगीत (मांड), भजनों, और लोकनृत्य (गैर, कालबेलिया)** के माध्यम से मारवाड़ी संस्कृति में सांस्कृतिक अभिव्यक्ति का गहरा प्रभाव देखने को मिलता है। महिलाएं पारंपरिक घाघरा-ओढ़नी पहनती हैं, जबकि पुरुष साफा और धोती पहनते हैं जो उनकी सांस्कृतिक जड़ों को दर्शाते हैं।

मारवाड़ी समाज की विशेषता उसका **अतिथि-सत्कार**, **संस्कार**, और **सामाजिक सहयोग भावना** है। यह संस्कृति आज भी अपने मूल्यों और परंपराओं को जीवंत रखते हुए आधुनिकता के साथ संतुलन बनाए हुए है, जिससे यह भारतीय सांस्कृतिक विविधता का एक अमूल्य हिस्सा बन चुकी है।

3.3 स्थानीय त्योहार और परंपराएँ:

राजस्थान विशेषकर **जोधपुर और मारवाड़** क्षेत्र की सांस्कृतिक पहचान में **स्थानीय त्योहारों और परंपराओं** की अहम भूमिका है। ये उत्सव न केवल सामाजिक समरसता को बढ़ावा देते हैं, बल्कि क्षेत्र की समृद्ध विरासत और सांस्कृतिक विविधता को भी जीवंत बनाए रखते हैं।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

**गंगौर** त्योहार महिला केंद्रित पर्व है, जिसमें सुहागिन महिलाएं पारंपरिक वेशभूषा में ईश्वर शिव-पार्वती की पूजा कर सुख-समृद्धि की कामना करती हैं। **तीज** पर्व भी महिलाओं का प्रमुख उत्सव है, जिसमें लोकगीतों और झूलों की रचनात्मकता के साथ लोक जीवन की सुंदर झलक मिलती है।

**मारवाड़ महोत्सव** जोधपुर में प्रतिवर्ष आयोजित होने वाला उत्सव है, जिसमें मारवाड़ी संस्कृति के सभी आयाम जैसे—लोकगीत, नृत्य, शिल्प, व्यंजन, पारंपरिक खेल और रीति-रिवाज प्रस्तुत किए जाते हैं। इस उत्सव का उद्देश्य नई पीढ़ी और पर्यटकों को मारवाड़ की सांस्कृतिक आत्मा से परिचित कराना है।

इसके अलावा **मकर संक्रांति**, **डोल ग्यारस**, **होली**, और **दीपावली** जैसे त्योहार भी सामाजिक मेल-जोल, पारिवारिक एकता और धार्मिक आस्था के प्रतीक हैं।

इन त्योहारों और परंपराओं के माध्यम से जोधपुर न केवल अपनी सांस्कृतिक पहचान को संजोता है, बल्कि उसे वैश्विक पटल पर भी गर्व से प्रस्तुत करता है।

3.4 सांस्कृतिक संरक्षण के प्रयास

राजस्थान सरकार द्वारा सांस्कृतिक धरोहरों के संरक्षण हेतु निरंतर प्रयास किए जा रहे हैं, जिनमें **शेखावाटी की हवेलियों**, **प्राचीन स्मारकों**, और **हेरिटेज स्थलों** को केंद्र में रखा गया है। उपमुख्यमंत्री **दिया कुमारी** के नेतृत्व में आयोजित *द ग्रेट इंडियन ट्रैवल बाजार (GITB) 2025* जैसे आयोजनों से न केवल अंतरराष्ट्रीय पर्यटकों को आकर्षित किया जा रहा है, बल्कि सांस्कृतिक धरोहरों को वैश्विक मंच भी प्रदान किया जा रहा है। सरकार ने शेखावाटी क्षेत्र के *सीकर, झुंझुनूं और चूरू* में हवेलियों के **डिजिटल सर्वेक्षण** और संरक्षण की दिशा में नीतियाँ बनाना शुरू किया है। *रामगढ़* को एक *मॉडल हेरिटेज टाउन* के रूप में विकसित किया जा रहा है, ताकि वहां के अनुभवों को अन्य क्षेत्रों में दोहराया जा सके। साथ ही, स्थानीय समुदायों की भागीदारी सुनिश्चित कर संरक्षण कार्यों को *रोजगार-सृजन* से भी जोड़ा जा रहा है।

गैर-सरकारी संगठनों और *हेरिटेज ट्रस्ट्स* द्वारा भी जीर्णोद्धार, दस्तावेजीकरण और सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से ऐतिहासिक स्थलों को जीवंत रखा जा रहा है। इन सम्मिलित प्रयासों से राजस्थान न केवल पर्यटन का हब बन रहा है, बल्कि सांस्कृतिक विरासत को भावी पीढ़ियों के लिए संरक्षित भी कर रहा है।

## 4. कला की धरोहर

4.1 चित्रकला और शिल्पकला

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

जोधपुर, राजस्थान की सांस्कृतिक राजधानी, पारंपरिक चित्रकला और शिल्पकला का एक समृद्ध केंद्र है। यहाँ की "जोधपुर शैली" 18वीं शताब्दी में विकसित हुई, जो मोटी रेखाओं और लाल-पीले जैसे प्राथमिक रंगों के प्रयोग के लिए जानी जाती है। इस शैली में वेशभूषा पर मुगल प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है, और *खंजन* पक्षी जैसे स्थानीय प्रतीकों का उपयोग इसकी विशिष्टता को दर्शाता है। पिचवाई चित्रकला, विशेष रूप से नाथद्वारा में विकसित, भगवान कृष्ण के जीवन की घटनाओं को सूक्ष्म और रंगीन चित्रों के माध्यम से प्रदर्शित करती है। यह शैली धार्मिक भावनाओं और भक्ति रस से ओतप्रोत होती है। इसके अलावा, मिनिएचर आर्ट या लघु चित्रकला, जोधपुर सहित सम्पूर्ण राजस्थान में प्रचलित रही है, जिसमें धार्मिक कथाएँ और पौराणिक प्रसंगों को अत्यंत सूक्ष्मता से रंगों और बारीक रेखाओं के द्वारा दर्शाया जाता है।

जोधपुर की चित्रकला पर अजंता शैली का भी प्रभाव है, जो चित्रों में गहराई और भावनात्मक अभिव्यक्ति को बढ़ाता है। इन सभी शैलियों का अध्ययन भारतीय चित्रकला के विकास में जोधपुर की महत्वपूर्ण भूमिका को उजागर करता है।

4.2 जोधपुरी ब्लू पॉटरी

जोधपुरी ब्लू पॉटरी का इतिहास और विकास राजस्थान की सांस्कृतिक धरोहर में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इसका नाम "ब्लू पॉटरी" उस आकर्षक नीले रंग से आया है, जो इन बर्तनों पर इस्तेमाल किया जाता है। हालांकि यह पॉटरी पारंपरिक मिट्टी से नहीं, बल्कि क्वार्ट्ज और अन्य खनिजों से बनाई जाती है। यह कला रूप भारत में तुर्की और मंगोल कलाकारों द्वारा 14वीं शताब्दी में विकसित किया गया था और फिर चीनियों द्वारा इसे अपनाया गया। बाद में, फारसी वास्तुकला और कला से प्रभावित होकर यह मध्य एशिया के विभिन्न हिस्सों में फैल गई।
जब मुग़ल साम्राज्य भारत में आया, तो उन्होंने इस कला को भारतीय भूमि पर लाकर वास्तुकला में इस्तेमाल किया। 17वीं शताब्दी में, ब्लू पॉटरी को जयपुर के कारीगरों ने अपनाया, और यहाँ से जोधपुर में इसका प्रसार हुआ। जोधपुरी ब्लू पॉटरी ने अपनी विशिष्टता और रंग-बिरंगे डिज़ाइन के लिए पहचान बनाई। यह पॉटरी अब घरेलू उपयोग से लेकर सजावटी वस्तुओं तक विभिन्न रूपों में पाई जाती है। जोधपुर के कारीगर आज भी इस पारंपरिक कला को जीवित रखे हुए हैं, और यह स्थानीय सांस्कृतिक धरोहर का एक अभिन्न हिस्सा बन चुकी है।

बॉक्स प्रिंटिंग

बॉक्स प्रिंटिंग, जिसे ब्लॉक प्रिंटिंग भी कहा जाता है, जोधपुर और उसके आसपास के क्षेत्रों में एक प्रमुख हस्तशिल्प कला है। यह कला 16वीं शताब्दी के आसपास राजस्थान में प्रचलित हुई, विशेषकर मेवाड़ और

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

मारवाड़ क्षेत्रों में। जोधपुर में यह कला मुख्य रूप से कपड़ों और अन्य वस्त्रों पर सटीक और जटिल डिज़ाइनों को प्रिंट करने के लिए इस्तेमाल होती है। इस कला में लकड़ी के ब्लॉक्स का उपयोग किया जाता है, जिन पर विभिन्न पैटर्न और डिज़ाइन उकेरे जाते हैं। इन ब्लॉक्स को रंगों में डुबोकर, कपड़े पर दबाया जाता है, जिससे सुंदर प्रिंट तैयार होते हैं।

इस कला के विकास में जोधपुर के स्थानीय कारीगरों का योगदान अत्यधिक महत्वपूर्ण रहा है। 19वीं और 20वीं शताब्दी में, जोधपुर के आसपास के इलाकों में, जैसे कि पाली और बठिंडा, बॉक्स प्रिंटिंग के कला रूप को नया मोड़ दिया गया। इन क्षेत्रों में पारंपरिक डिज़ाइनों को अधिक आधुनिक रूप में ढालते हुए, बॉक्स प्रिंटिंग की कला ने अपनी पहचान बनाई। आजकल, जोधपुरी बॉक्स प्रिंटिंग की प्रसिद्धि वैश्विक स्तर पर है, और यह भारतीय हस्तशिल्प के महत्वपूर्ण हिस्से के रूप में उभर कर सामने आई है।

संगीत और नृत्य

राजस्थान की सांस्कृतिक धरोहर में संगीत और नृत्य की महत्वपूर्ण भूमिका रही है, जो राज्य की विविधता और समृद्ध इतिहास को दर्शाती है। जोधपुर और आसपास के क्षेत्रों में संगीत और नृत्य की परंपराएं न केवल सांस्कृतिक पहचान का हिस्सा हैं, बल्कि इनका सामाजिक और धार्मिक महत्व भी है। यहां की लोकप्रिय संगीत शैलियों और नृत्य रूपों में "कच्छी घोड़ी" और "कालबेलिया" जैसे प्रमुख नृत्य शामिल हैं, जो राज्य के लोक जीवन और उसकी सांस्कृतिक धारा को जीवित रखते हैं।

**कच्छी घोड़ी** एक पारंपरिक राजस्थानी नृत्य है, जो मुख्य रूप से राजस्थानी लोक संगीत के साथ किया जाता है। यह नृत्य खासतौर पर विवाह और अन्य धार्मिक अवसरों पर किया जाता है। इसमें नर्तकियों द्वारा कच्छी घोड़ी (एक प्रकार की पारंपरिक घोड़ी) पर चढ़कर प्रदर्शन किया जाता है, जो राजस्थान के वीरता और युद्ध कौशल की प्रतीक है। यह नृत्य घोड़ी की सवारी की तरह होता है, और इसमें कच्छी घोड़ी पर बैठकर नर्तक मस्ती और उत्साह के साथ विभिन्न शारीरिक मुद्राओं को प्रस्तुत करते हैं। यह नृत्य जोधपुर के ग्रामीण इलाकों में बहुत प्रचलित है और राजस्थान की सांस्कृतिक धरोहर का महत्वपूर्ण हिस्सा है।

**कालबेलिया** राजस्थान का एक और प्रसिद्ध लोक नृत्य है, जो विशेष रूप से राजस्थान के कालबेलिया जनजाति द्वारा किया जाता है। यह नृत्य पारंपरिक लोक गीतों के साथ किया जाता है, और इसमें नर्तक महिलाएं विशेष प्रकार के वस्त्र पहनकर अपने शरीर को लचकाकर लयबद्ध तरीके से नृत्य करती हैं। कालबेलिया नृत्य की खासियत इसकी तेज गति और विविध शारीरिक मुद्राओं में है, जो सांस्कृतिक और धार्मिक महत्व को दर्शाती है। यह नृत्य विशेष रूप से जोधपुर के आसपास के क्षेत्रों में लोकप्रिय है और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी इसे पहचान मिली है। 2010 में इस नृत्य को यूनेस्को द्वारा मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर के रूप में मान्यता प्राप्त हुई।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

इन दोनों नृत्य शैलियों के माध्यम से राजस्थान की लोक कला और संगीत की जीवंतता प्रदर्शित होती है। ये नृत्य केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि राज्य के पारंपरिक और सांस्कृतिक जीवन का हिस्सा भी हैं। जोधपुर में होने वाले प्रमुख सांस्कृतिक आयोजनों और उत्सवों में इन नृत्य शैलियों का प्रदर्शन राज्य की सांस्कृतिक विविधता को दर्शाता है।

आधुनिक कला और युवा कलाकार

जोधपुर, राजस्थान की सांस्कृतिक धरोहर के साथ-साथ समकालीन कला और युवा कलाकारों के लिए एक उभरता हुआ केंद्र बन चुका है। जोधपुर में आधुनिक कला की दिशा में महत्वपूर्ण बदलाव आ रहे हैं, जहां युवा कलाकार पारंपरिक कला रूपों को नई दृष्टि और तकनीकी पहलुओं से जोड़कर आधुनिक कला के क्षेत्र में अपने विचार प्रस्तुत कर रहे हैं।

जोधपुर के समकालीन कलाकार पारंपरिक कला शैलियों जैसे पिचवाई, ब्लू पॉटरी, और मिनिएचर आर्ट को न केवल संरक्षित कर रहे हैं, बल्कि इन्हें नयापन देने के लिए आधुनिक तकनीकों और शहरी विचारधाराओं का भी समावेश कर रहे हैं। इसके अतिरिक्त, जोधपुर में कई आर्ट गैलरी और कला प्रदर्शनी आयोजित होती हैं, जहां युवा कलाकार अपनी कला को वैश्विक स्तर पर प्रदर्शित कर रहे हैं।

स्थानीय कलाकारों के प्रयासों से जोधपुर ने कला की दुनिया में अपनी पहचान बनाई है। इन कलाकारों ने अपनी कृतियों में न केवल राजस्थान की समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर का सम्मान किया है, बल्कि उन्होंने वैश्विक कला मंच पर भी अपनी स्थिति मजबूत की है। जोधपुर में कला शिक्षा के नए केंद्र भी बन रहे हैं, जो आगामी कलाकारों के लिए एक बड़ा प्रोत्साहन प्रदान कर रहे हैं।

**5. स्थापत्य कला**

जोधपुर का मेहरानगढ़ किला न केवल राजस्थान के सबसे महत्वपूर्ण और ऐतिहासिक किलों में से एक है, बल्कि यह अपनी वास्तुकला की भव्यता, ऐतिहासिक महत्ता और सांस्कृतिक धरोहर के कारण जोधपुर का गौरव है। यह किला जोधपुर शहर के ऊपर 410 फीट ऊंची एक पहाड़ी पर स्थित है, और इसका निर्माण राव जोधा ने 1459 में शुरू करवाया था। मेहरानगढ़ किला जोधपुर शहर का संस्थापक राव जोधा द्वारा अपनी राजधानी को सुरक्षित रखने के लिए बनवाया गया था। किले की वास्तुकला में राजपूत स्थापत्य कला की अद्वितीय विशेषताएँ हैं, जो इसे ऐतिहासिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण बनाती हैं।

5.2 किले की वास्तुकला

मेहरानगढ़ किला अपनी वास्तुकला के लिए प्रसिद्ध है, जो 15वीं शताब्दी से लेकर 20वीं शताब्दी के अंत तक विभिन्न शासकों द्वारा लगातार सुधारी और विस्तारित की गई थी। किले का निर्माण विभिन्न स्थापत्य शैलियों

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

का सम्मिलन है, जिसमें राजपूत, मुग़ल और अन्य प्रभावों का मिश्रण देखने को मिलता है। किले में सात मुख्य द्वार हैं, जिनमें से प्रत्येक द्वार विभिन्न शासकों के समय में बनाई गई थी। इन द्वारों का उद्देश्य किले की सुरक्षा बढ़ाना था, और वे बीकानेर और जयपुर सेनाओं पर किले के शासकों द्वारा की गई विजय को दर्शाते हैं। किले की दीवारों की ऊंचाई 120 फीट तक जाती है, जो किले की विशालता और सुरक्षा को दर्शाता है।

किले में प्रवेश के लिए विभिन्न द्वारों के साथ-साथ किले के भीतर कई महल, मंदिर, हवेलियाँ और अन्य संरचनाएँ भी हैं, जो राजपूत काल की शाही जीवन शैली और संस्कृति को दर्शाती हैं। किले में स्थित चोखेलाव बाग, जिसे 1739 में महाराजा अभय सिंह द्वारा बनवाया गया था, किले के सबसे खूबसूरत हिस्सों में से एक है। किले का संग्रहालय भी काफी प्रसिद्ध है, जिसमें शाही वस्त्र, शस्त्रागार, चित्रकला, संगीत वाद्ययंत्र और अन्य शाही कलाकृतियाँ संग्रहित हैं।

5.3 ऐतिहासिक महत्ता

मेहरानगढ़ किला जोधपुर के इतिहास का महत्वपूर्ण हिस्सा है। इस किले ने विभिन्न युद्धों और आक्रमणों का सामना किया और कभी भी दुश्मनों के हाथ नहीं आया। राव जोधा ने इस किले की नींव रखी और इसे मजबूत बनाने के लिए कई सुधार किए। किले के भीतर सात द्वारों का निर्माण विभिन्न शासकों द्वारा उनकी विजय के प्रतीक के रूप में किया गया था। किले के भीतर महल, मंदिर और अन्य संरचनाओं में जोधपुर के इतिहास और संस्कृति की झलक मिलती है। किले का मुख्य उद्देश्य राज्य की सुरक्षा था, और यह समय के साथ जोधपुर के शाही परिवार का प्रमुख निवास स्थल बन गया।

5.4 सांस्कृतिक महत्ता

मेहरानगढ़ किला न केवल एक ऐतिहासिक स्थल है, बल्कि यह जोधपुर और राजस्थान की सांस्कृतिक धरोहर का भी प्रतीक है। किले के भीतर के विभिन्न महल, मंदिर और बगीचे राजपूत संस्कृति, कला और शाही जीवन शैली की अद्वितीय मिसालें हैं। किले में स्थित मेहरानगढ़ संग्रहालय में जोधपुर के शाही परिवार से संबंधित विभिन्न वस्तुएं प्रदर्शित की जाती हैं, जैसे कि शाही वस्त्र, चित्रकला, वाद्ययंत्र और अन्य सांस्कृतिक कलाएँ। किले के भीतर के स्थानों में दीवारों की सजावट, चित्रकला और स्थापत्य कला से यह स्थान जोधपुर की सांस्कृतिक धरोहर का अद्वितीय उदाहरण प्रस्तुत करता है।

5.5 उम्मेद भवन पैलेस

उम्मेद भवन पैलेस जोधपुर का एक और प्रसिद्ध स्थल है, जो अपने वास्तुशिल्प और सांस्कृतिक योगदान के लिए प्रसिद्ध है। इसका निर्माण 1929 में महाराजा उम्मेद सिंह द्वारा किया गया था और यह एक शानदार महल है जो 20वीं शताब्दी के वास्तुकला का उत्कृष्ट उदाहरण है। उम्मेद भवन का डिज़ाइन आर्किटेक्ट हेनरी वॉघन लैन्चेस्टर ने तैयार किया था, और इसे इंडो-सारासेनिक शैली में बनाया गया था। यह महल सफेद संगमरमर

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

से निर्मित है और इसमें अत्यधिक सजावटी डिजाइन, भव्य दीवारों, और विशाल उद्यान हैं। उम्मेद भवन का निर्माण अकाल राहत योजना के तहत किया गया था और यह राजस्थान के सबसे बड़े निजी निवासों में से एक है। वर्तमान में, उम्मेद भवन एक लक्ज़री होटल के रूप में कार्य करता है, जो पर्यटकों को राजस्थान की शाही जीवन शैली का अनुभव कराता है।

5.6 जसवंत थड़ा

जसवंत थड़ा, जो जोधपुर का एक अन्य महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्मारक है, महाराजा जसवंत सिंह द्वितीय की याद में 1906 में बनाया गया था। यह स्मारक सफेद संगमरमर से निर्मित है और इसकी वास्तुकला में राजपूत और मुग़ल प्रभावों का अद्वितीय मिश्रण देखा जाता है। यह स्मारक जोधपुर के ऐतिहासिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह जोधपुर के शाही परिवार की संस्कृति और इतिहास को प्रदर्शित करता है। जसवंत थड़ा के पास एक छोटी सी झील भी है, जो इस स्मारक की सुंदरता में और वृद्धि करती है।

5.7 प्रसिद्ध मंदिरों और हवेलियों का स्थापत्य

जोधपुर के प्रमुख मंदिरों और हवेलियों की वास्तुकला भी राजस्थान के स्थापत्य कला का महत्वपूर्ण हिस्सा है। इन मंदिरों और हवेलियों में राजपूत शैली की जटिल सजावट, सुंदर दीवार चित्रण और स्थापत्य की नाजुकता देखने को मिलती है। जोधपुर के मंदिरों में कृष्ण मंदिर, चामुंडा माता मंदिर, और महल मंदिर प्रमुख हैं, जिनकी वास्तुकला राजपूत शाही जीवन और संस्कृति का महत्वपूर्ण प्रतिनिधित्व करती है। हवेलियाँ, जैसे कि उम्मेद भवन, मंडोर की हवेली और जोधपुर की अन्य ऐतिहासिक हवेलियाँ, जोधपुर के समृद्ध सांस्कृतिक और वास्तुकला धरोहर का प्रतीक हैं।

मेहरानगढ़ किला, उम्मेद भवन पैलेस, जसवंत थड़ा और जोधपुर के मंदिर और हवेलियाँ, जोधपुर और राजस्थान की स्थापत्य कला, ऐतिहासिक महत्ता और सांस्कृतिक धरोहर को समर्पित हैं। इन संरचनाओं के माध्यम से राजस्थान के शाही जीवन, कला और संस्कृति का अद्वितीय उदाहरण देखने को मिलता है। इन ऐतिहासिक स्थलों की यात्रा न केवल जोधपुर के इतिहास और संस्कृति को जानने का एक अवसर प्रदान करती है, बल्कि यह राजस्थान की वास्तुकला की भव्यता और सांस्कृतिक धरोहर को भी संरक्षित करती है।

**6. साहित्य और लोककथा**

राजस्थानी साहित्य और लोककथाएँ राजस्थान की समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। जोधपुर और इसके आसपास के क्षेत्रों ने राजस्थानी साहित्य में गहरी छाप छोड़ी है, जिसमें लोककथाओं, वीर गाथाओं और मारवाड़ी भाषा का विशेष योगदान है।

6.1 राजस्थानी साहित्य

राजस्थानी साहित्य का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण और ऐतिहासिक है, खासकर जोधपुर और आसपास के क्षेत्रों में। राजस्थानी साहित्य में मुख्यतः हिंदी, गुजराती और अन्य भारतीय भाषाओं का मिश्रण देखा जाता है। जोधपुर, जो पहले मारवाड़ रियासत का हिस्सा था, ने साहित्य की विभिन्न शैलियों को अपनाया और उनका विकास किया। यहाँ के प्रमुख साहित्यकारों ने इस क्षेत्र की सांस्कृतिक और सामाजिक विरासत को अपनी रचनाओं में समाहित किया।

राजस्थानी कविता और गद्य लेखन में वीरता, धर्म, भक्ति और प्रकृति के विषयों का प्रमुख स्थान रहा है। रचनाकारों ने विशेष रूप से राजपूतों की वीर गाथाओं को अपनी कविताओं और कहानियों में उकेरा। पं. रामनिवास व्यास, जसवंत सिंह राठौड़ और रघुनाथजी शास्त्री जैसे साहित्यकारों ने राजस्थानी साहित्य में योगदान किया, जिनकी काव्य रचनाएँ राजस्थान की वीरता, धर्म और संस्कृति को प्रकट करती हैं। विशेषकर "बापूजी की गाथाएँ" और "पढारी ठाकुर की कहानी" जैसी काव्य रचनाएँ जोधपुर के राजपूतों की वीरता को जीवंत करती हैं।

6.2 लोककथाएँ और कहानियाँ

लोककथाएँ और राजपूतों की वीर गाथाएँ राजस्थान की संस्कृति का अभिन्न हिस्सा हैं। जोधपुर की लोककथाओं में जहां एक ओर वीरता की गाथाएँ हैं, वहीं दूसरी ओर प्रेम, त्याग और बलिदान की कहानियाँ भी शामिल हैं। जोधपुर में राजपूतों की वीर गाथाएँ बहुत प्रचलित हैं, जो न केवल युद्धों की जीत-हार को दर्शाती हैं, बल्कि सामाजिक नैतिकता, सम्मान और राजपूतों की शौर्य भावना को भी उजागर करती हैं।

"महाराणा प्रताप की गाथाएँ" और "रामसिंह की वीरता" जैसी कथाएँ जोधपुर के काव्य साहित्य में विशेष स्थान रखती हैं। इन गाथाओं में राजपूतों के संघर्ष, उनकी युद्ध नीतियाँ, और उनकी वीरता को काव्यात्मक रूप में प्रस्तुत किया गया है। "कालूजी की वीर गाथा" और "भीमसिंह की कथा" जैसी लोककथाएँ जोधपुर में आज भी सुनाई जाती हैं, जो प्राचीन राजपूत संस्कृति और युद्ध रणनीतियों को उजागर करती हैं।

इसके अलावा, जोधपुर में कई किंवदंतियाँ भी प्रचलित हैं जो धार्मिक स्थानों, किलों, महलों और ऐतिहासिक घटनाओं से जुड़ी हुई हैं। इनमें "मेहरानगढ़ किले की कथा" और "उम्मेद भवन का रहस्य" जैसी लोककथाएँ शामिल हैं, जो ऐतिहासिक घटनाओं को किंवदंतियों के रूप में प्रस्तुत करती हैं।

6.3 मारवाड़ी भाषा का महत्व

मारवाड़ी भाषा, जो राजस्थानी भाषा के अंतर्गत आती है, का साहित्यिक योगदान अत्यधिक महत्वपूर्ण है। जोधपुर और मारवाड़ क्षेत्र में मारवाड़ी भाषा का प्रचलन बहुत पुराना है और इसे राजस्थान की सांस्कृतिक पहचान के रूप में देखा जाता है। मारवाड़ी भाषा न केवल एक बोली है, बल्कि इसमें गहरी साहित्यिक धारा भी विकसित हुई है। मारवाड़ी साहित्य में कविताएँ, गद्य रचनाएँ, लोकगीत, भजनों और साहित्यिक संवादों का समावेश है, जो मारवाड़ी समाज की जीवनशैली और सांस्कृतिक धरोहर को दर्शाते हैं।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

मारवाड़ी भाषा का एक महत्वपूर्ण साहित्यिक योगदान उसके लोक गीतों और भजनों में देखा जा सकता है। इन गीतों में ग्रामीण जीवन, प्रेम, त्योहारों, और राजस्थानी संस्कृति के विभिन्न पहलुओं को दर्शाया जाता है। राजस्थान की संस्कृति और परंपराओं को लोक गीतों और कहानियों के माध्यम से संजोने का काम मारवाड़ी साहित्य ने किया है। विशेषकर "पिचवाई", "राजस्थानी भजन" और "लोककाव्य" की शैलियाँ मारवाड़ी साहित्य की पहचान बन चुकी हैं।

मारवाड़ी साहित्य के प्रमुख कवियों और लेखकों में जसवंत सिंह राठौड़, रघुनाथजी शास्त्री, और भैरुजी शंकर जी जैसे नाम आते हैं, जिन्होंने मारवाड़ी साहित्य में ऐतिहासिक और सांस्कृतिक योगदान दिया। मारवाड़ी भाषा में लेखन और संवाद शैली ने न केवल जोधपुर बल्कि पूरे राजस्थान की साहित्यिक धारा को प्रोत्साहित किया। इसके अलावा, मारवाड़ी साहित्य में धार्मिकता और भक्ति का भी महत्वपूर्ण स्थान है, खासकर संत कवि सूरदास, तुलसीदास और मीरा बाई के भक्ति गीतों का मारवाड़ी संस्करण बहुत लोकप्रिय हुआ है।

जोधपुर और आसपास के क्षेत्रों में राजस्थानी साहित्य, लोककथाएँ और मारवाड़ी भाषा का सांस्कृतिक योगदान अत्यधिक महत्वपूर्ण है। इन सभी साहित्यिक और सांस्कृतिक रूपों ने राजस्थान के शाही इतिहास, वीरता, प्रेम और संस्कृति को एक समृद्ध रूप में प्रस्तुत किया है। जोधपुर के साहित्यकारों और लोककथाकारों ने जोधपुर की शौर्य गाथाओं और राजपूत संस्कृति को अपनी रचनाओं के माध्यम से संरक्षित किया है। साथ ही, मारवाड़ी भाषा ने राजस्थान की संस्कृति को राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रस्तुत करने में अहम भूमिका निभाई है। इस प्रकार, जोधपुर का साहित्य और लोककथा समृद्ध विरासत का प्रतीक बनकर आज भी जीवित है।

## 7. पर्यटन का प्रभाव

1. पर्यटन का बढ़ता प्रभाव

जोधपुर, जिसे 'ब्लू सिटी' के नाम से भी जाना जाता है, में पर्यटन के बढ़ते प्रभाव ने कला, संस्कृति और इतिहास के क्षेत्र में महत्वपूर्ण बदलाव किए हैं। ऐतिहासिक धरोहरों, जैसे कि मेहरानगढ़ किला, उम्मेद भवन पैलेस, और जसवंत थड़ा, के कारण जोधपुर में पर्यटन आकर्षण लगातार बढ़ रहा है। यह बढ़ता हुआ पर्यटन न केवल शहर की ऐतिहासिक और सांस्कृतिक धरोहर को जीवित रखता है, बल्कि कला और हस्तशिल्प को भी प्रोत्साहित करता है।

जोधपुर में बढ़ते पर्यटकों की संख्या ने स्थानीय कला रूपों, जैसे कि पेंटिंग, शिल्पकला, कशीदाकारी, और जोधपुरी ब्लू पॉटरी को एक नई पहचान दी है। इन कला रूपों को अधिक मंच मिले हैं और स्थानीय कारीगरों के लिए वैश्विक बाजार भी खुल गए हैं। इसके अलावा, जोधपुर की लोक कला, जैसे की "कालबेलिया" नृत्य और "कच्छी घोड़ी" नृत्य, ने भी पर्यटकों के बीच अपनी पहचान बनाई है।

2. सांस्कृतिक धरोहर की रक्षा

पर्यटन ने न केवल जोधपुर की सांस्कृतिक धरोहर को नई पहचान दी है, बल्कि इसके संरक्षण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। पर्यटन विभाग और सरकार द्वारा कई योजनाएँ और परियोजनाएँ शुरू की गई हैं, ताकि ऐतिहासिक स्थलों और सांस्कृतिक धरोहरों को संरक्षित किया जा सके। उदाहरण के लिए, मेहरानगढ़ किले और उम्मेद भवन पैलेस जैसे स्थल UNESCO द्वारा विश्व धरोहर के रूप में मान्यता प्राप्त हैं, और इनके संरक्षण के लिए आवश्यक कदम उठाए गए हैं।

इसके अलावा, जोधपुर के आसपास के ऐतिहासिक किलों और महलों के संरक्षण के लिए स्थानीय समुदाय और कारीगरों को शामिल किया गया है। जैसे जसवंत थड़ा का निर्माण सफेद संगमरमर से किया गया था, और आज भी इसे स्थानीय कारीगरों द्वारा बनाए रखा जाता है। पर्यटन के माध्यम से, इन स्थलों की देखरेख और पुनर्निर्माण कार्यों में वित्तीय मदद मिलती है, जिससे धरोहर संरक्षित रहती है।

3. सामाजिक और आर्थिक प्रभाव

पर्यटन ने जोधपुर की सामाजिक और आर्थिक स्थिति में भी उल्लेखनीय बदलाव किए हैं। आर्थिक दृष्टि से, पर्यटन उद्योग ने शहर में रोजगार के अवसर पैदा किए हैं। होटल, रेस्टोरेंट, ट्रांसपोर्ट, गाइड, शिल्पकला, और स्थानीय हस्तशिल्प उद्योग में बड़े पैमाने पर रोजगार की स्थिति उत्पन्न हुई है। जोधपुर के स्थानीय कारीगरों, जैसे कि ब्लू पॉटरी के कारीगर, लोक कलाकार, और सिलाई कारीगर, को वैश्विक बाजारों से मांग मिलने लगी है, जिससे उनके जीवन स्तर में सुधार हुआ है।

इसके अलावा, जोधपुर के लोगों में एक सांस्कृतिक जागरूकता भी आई है। पहले, जोधपुर के कुछ पुराने इलाकों में रह रहे लोग अपनी सांस्कृतिक धरोहर और परंपराओं से अधिक जुड़ने लगे हैं। वे पारंपरिक कला रूपों और लोक कथाओं को जीवित रखने के प्रयास कर रहे हैं। वहीं, सामाजिक दृष्टिकोण से, जोधपुर में पर्यटन ने अंतरराष्ट्रीय सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ावा दिया है, जिससे न केवल स्थानीय संस्कृति को वैश्विक पहचान मिली है, बल्कि यहां के निवासियों के जीवन दृष्टिकोण में भी बदलाव आया है।

आर्थिक दृष्टि से, जोधपुर में पर्यटन से सरकारी राजस्व में भी वृद्धि हुई है। पर्यटन शुल्क, प्रवेश शुल्क, होटल टैक्स और अन्य पर्यटन संबंधित शुल्कों से जोधपुर सरकार को आय होती है, जिसका उपयोग शहर के विकास और संरक्षेत्र में किया जाता है।

कुल मिलाकर, जोधपुर में पर्यटन के बढ़ते प्रभाव ने कला, संस्कृति, और इतिहास के संरक्षण में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। सांस्कृतिक धरोहर की रक्षा और सामाजिक-आर्थिक लाभ पर्यटन के प्रमुख परिणाम रहे हैं। हालांकि, इसके साथ-साथ, यह भी सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि पर्यटन की बढ़ती संख्या से स्थानीय जीवनशैली, पारंपरिक कला रूपों और सांस्कृतिक धरोहर पर कोई नकारात्मक प्रभाव न पड़े। पर्यटन के

लिए एक संतुलित दृष्टिकोण आवश्यक है, ताकि यह न केवल जोधपुर की सांस्कृतिक और ऐतिहासिक धरोहर को संरक्षित करे, बल्कि स्थानीय समुदायों के लिए स्थिर रोजगार और आर्थिक अवसर भी उत्पन्न करे।

**8. समकालीन सांस्कृतिक परिदृश्य**

1. आधुनिक कला और संस्कृति

जोधपुर में समकालीन कला का परिदृश्य निरंतर विकसित हो रहा है, और यह शहर पारंपरिक और आधुनिक कला के मिलाजुले रूपों का केंद्र बनता जा रहा है। जोधपुर के समकालीन कलाकार न केवल राजस्थानी सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षित करने के लिए काम कर रहे हैं, बल्कि उन्हें एक नया स्वरूप भी दे रहे हैं, जिससे वैश्विक स्तर पर कला की एक नई पहचान बन रही है।

समकालीन कला में जोधपुर के कलाकारों ने मूर्तिकला, चित्रकला, और डिजिटल कला में नई तकनीकों का इस्तेमाल करना शुरू किया है। विशेष रूप से युवा कलाकार अपनी कृतियों में नए प्रयोग करते हैं, जिससे जोधपुर को भारतीय कला परिदृश्य में एक महत्वपूर्ण स्थान मिला है। शहर के कई गैलरी और कला केंद्र, जैसे कि "अमर कला केंद्र" और "आर्टिस्ट्स गैलरी", जोधपुर के समकालीन कला आंदोलन का हिस्सा बन चुके हैं। यहाँ के कलाकार पारंपरिक कला रूपों को आधुनिक दृष्टिकोण से प्रस्तुत करते हैं, और यह कला के शौक़ीन लोगों के लिए एक आकर्षण का केंद्र है। इसके अलावा, यहाँ पर रचनात्मकता और कल्पना के नए क्षेत्र खोले गए हैं, जिससे स्थानीय कलाकारों को अपनी पहचान बनाने का अवसर मिला है।

2. सांस्कृतिक कार्यशालाएँ और महोत्सव

जोधपुर में कला कार्यशालाएँ, संगीत महोत्सव और सांस्कृतिक कार्यक्रमों की एक लंबी परंपरा है, जो इस शहर को एक सांस्कृतिक गंतव्य के रूप में प्रस्तुत करती है। यहाँ पर आयोजित होने वाले प्रमुख महोत्सवों में "मारवाड़ महोत्सव" और "जोधपुर रेत महोत्सव" शामिल हैं, जो न केवल स्थानीय कला और संस्कृति को प्रदर्शित करते हैं, बल्कि इन कार्यक्रमों में भाग लेने वाले कलाकारों और पर्यटकों को भी आकर्षित करते हैं।

मारवाड़ महोत्सव जोधपुर की सांस्कृतिक धरोहर को जीवित रखने और प्रचारित करने का एक महत्वपूर्ण मंच है, जहाँ पारंपरिक लोक संगीत, नृत्य, और कला रूपों का प्रदर्शन होता है। इन कार्यक्रमों में भारत और विदेशों से आने वाले कलाकार अपने हुनर का प्रदर्शन करते हैं। इसके अतिरिक्त, जोधपुर में कला कार्यशालाएँ भी नियमित रूप से आयोजित होती हैं, जहां राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर के कलाकार और क्यूरेटर अपने अनुभव साझा करते हैं, जिससे स्थानीय कला दृश्य को एक नई दिशा मिलती है।

3. नवीनतम सांस्कृतिक रुझान

जोधपुर के युवा कलाकार और सांस्कृतिक नेता नए-नए पहल करते हुए समकालीन सांस्कृतिक परिदृश्य को आकार दे रहे हैं। सोशल मीडिया और डिजिटल कला के माध्यम से इन कलाकारों ने अपनी कला को वैश्विक

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

मंच पर पहुँचाया है। यहाँ के कलाकार न केवल पारंपरिक कला रूपों को पुनर्जीवित कर रहे हैं, बल्कि इनका समकालीन रूपांतरण भी कर रहे हैं। युवा चित्रकार, मूर्तिकार और शिल्पकला कलाकार स्थानीय कला को वैश्विक दर्शकों के बीच प्रस्तुत करने के लिए कला प्रदर्शनी और कार्यक्रमों का आयोजन करते हैं।

इसके अलावा, जोधपुर में नए सांस्कृतिक रुझान भी सामने आए हैं। विभिन्न युवा कलाकारों ने पारंपरिक कारीगरी को मॉडर्न तकनीकों के साथ मिलाकर नए रूप में प्रस्तुत किया है। जैसे कि ब्लू पॉटरी को आधुनिक डिज़ाइनों के साथ पुनः प्रस्तुत करना, या फिर लोक संगीत को समकालीन धुनों के साथ जोड़कर उसे एक नया जीवन देना। इस प्रकार, जोधपुर में कला के विभिन्न रूपों का समागम हो रहा है, जिससे एक नई सांस्कृतिक दिशा मिल रही है।

साथ ही, जोधपुर में सशक्त महिला कलाकारों की संख्या भी बढ़ रही है, जो अपने रचनात्मक कार्यों के माध्यम से सांस्कृतिक बदलाव ला रही हैं। वे पारंपरिक कृतियों को आधुनिक दृष्टिकोण से चित्रित करती हैं और समाज में जागरूकता फैलाने के लिए कला का उपयोग करती हैं।

कुल मिलाकर, जोधपुर में समकालीन कला और संस्कृति एक नई दिशा में बढ़ रही है। यहाँ के कलाकार अपने पारंपरिक कला रूपों को आधुनिक तकनीकों और विचारधाराओं से जोड़कर एक नया सांस्कृतिक परिदृश्य बना रहे हैं। सांस्कृतिक महोत्सव और कार्यशालाएँ न केवल स्थानीय कलाकारों को वैश्विक मंच पर प्रस्तुत करती हैं, बल्कि पर्यटन को भी बढ़ावा देती हैं। युवा कलाकारों की पहल और नवीनतम सांस्कृतिक रुझान जोधपुर को भारतीय कला की एक प्रमुख नगरी बना रहे हैं, और इस शहर का सांस्कृतिक परिदृश्य भविष्य में और भी अधिक समृद्ध होने की संभावना रखता है।

**9. निष्कर्ष**

जोधपुर, राजस्थान का एक प्रमुख सांस्कृतिक और ऐतिहासिक केंद्र है, जहाँ कला, संस्कृति और इतिहास का अद्वितीय संगम देखने को मिलता है। जोधपुर के ऐतिहासिक किले, महल, मंदिर और हवेलियाँ न केवल इसकी समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर का प्रतीक हैं, बल्कि यह शहर कला और वास्तुकला के विभिन्न रूपों के संरक्षण में भी एक अग्रणी स्थान रखता है। मेहरानगढ़ किला, उम्मेद भवन, जसवंत थड़ा और अन्य सांस्कृतिक स्थल जोधपुर को एक वैश्विक सांस्कृतिक हब के रूप में प्रस्तुत करते हैं। यहाँ के पारंपरिक कला रूप, जैसे पिचवाई चित्रकला, ब्लू पॉटरी और राजस्थानी मिनिएचर आर्ट, जोधपुर के सांस्कृतिक इतिहास को जीवित रखने के साथ-साथ यह कला रूप वैश्विक स्तर पर पहचान बना रहे हैं। जोधपुर में लोक संगीत और नृत्य शैलियाँ, जैसे "कच्छी घोड़ी" और "कालबेलिया", भी यहाँ की जीवंत सांस्कृतिक पहचान का हिस्सा हैं, जो न केवल स्थानीय बल्कि अंतरराष्ट्रीय दर्शकों को भी आकर्षित करती हैं।

जोधपुर की सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षित करने के लिए कई सरकारी और गैर-सरकारी प्रयास किए जा रहे हैं। इन प्रयासों में सांस्कृतिक धरोहर स्थलों के संरक्षण, पारंपरिक कला रूपों को बढ़ावा देने के साथ-साथ

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

इनसे जुड़े सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्य को बनाए रखना शामिल है। राज्य सरकार द्वारा संचालित विभिन्न कला कार्यशालाएँ और महोत्सव, जैसे "मारवाड़ महोत्सव", और "जोधपुर रेत महोत्सव", सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण के साथ-साथ इन्हें वैश्विक स्तर पर प्रस्तुत करने का महत्वपूर्ण मंच प्रदान करते हैं। जोधपुर के ऐतिहासिक किलों, महलों और मंदिरों के पुनर्निर्माण और संरक्षण के लिए निरंतर प्रयास किए जा रहे हैं, ताकि आने वाली पीढ़ियाँ इन्हें देख सकें और इन्हें संजो कर रख सकें।

जोधपुर की कला, संस्कृति और इतिहास से संबंधित भविष्य के अध्ययन की संभावनाएँ काफी व्यापक हैं। एक ओर जहां जोधपुर की सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण की दिशा में कार्य हो रहा है, वहीं दूसरी ओर, इन परंपराओं और कला रूपों का समकालीन संदर्भ में विश्लेषण करने की आवश्यकता है। भविष्य के अनुसंधान में यह महत्वपूर्ण होगा कि कैसे जोधपुर की पारंपरिक कला और सांस्कृतिक पहचान को आधुनिक कला और वैश्विक सांस्कृतिक प्रवृत्तियों के साथ जोड़ा जा सकता है। इसके अलावा, जोधपुर के सांस्कृतिक प्रभाव और इसकी कारीगरी के विकास पर भी अध्ययन किए जा सकते हैं, जो विभिन्न वैश्विक सांस्कृतिक परिवर्तनों से प्रभावित हुए हैं।

जोधपुर के लोक संगीत, नृत्य और शिल्पकला पर अनुसंधान के क्षेत्र में भी नए रास्ते खोले जा सकते हैं, विशेष रूप से उन पहलुओं पर जो इन कला रूपों की वैश्विक पहचान को बढ़ावा देने में सहायक हो सकते हैं। साथ ही, जोधपुर के कला और संस्कृति के विकास में युवाओं और समकालीन कलाकारों की भूमिका पर भी अधिक गहराई से अध्ययन किया जा सकता है, जिससे इस क्षेत्र में उभरते हुए रुझानों और भविष्य की दिशा का बेहतर समझ प्राप्त किया जा सके।

जोधपुर, अपनी सांस्कृतिक धरोहर, कला, और इतिहास के माध्यम से न केवल राजस्थान बल्कि भारत की सांस्कृतिक पहचान का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। यहाँ की वास्तुकला, कला, संगीत और नृत्य की विशेषताएँ इस शहर को एक अनूठा सांस्कृतिक परिदृश्य प्रदान करती हैं। भविष्य में जोधपुर की कला और संस्कृति के विभिन्न पहलुओं पर गहरे अध्ययन और अनुसंधान से इस क्षेत्र को एक और नई दिशा मिल सकती है, और इसकी सांस्कृतिक धरोहर को दुनिया भर में एक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त हो सकता है।

## संदर्भ

1. "Jodhpur.nic.in"। 19 फरवरी 2012 को मूल से संग्रहित। 3 जून 2015 को प्राप्त।
2. "जोठपुर राज्य सैन्य प्रणाली: संरचना और स्वरूप (1453 से 1818)", महेश कुमार दम्या, ISSN: 2456–5474, RNI No.UPBIL/2016/68367, Vol.-5, Issue-11, दिसंबर 2020, पेपर सबमिशन: 15/12/2020, स्वीकृति की तिथि: 26/12/2020, प्रकाशन की तिथि: 27/12/2020।
3. "जोधपुर जिला जनगणना 2011 हैंडबुक: गाँव और शहर के अनुसार प्राथमिक जनगणना सारांश (PCA)" (PDF)। Censusofindia.gov.in। पृष्ठ 33। 28 अप्रैल 2016 को मूल (PDF) से संग्रहित। 19 अप्रैल 2016 को प्राप्त।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

4. "मेहरानगढ़ किले का इतिहास और घूमने की जानकारी - Holidayrider.Com (in अमेरिकी अंग्रेज़ी). 2019-03-31.
5. "राठौड़ राजाओं का समाधि स्थल जसवंत थड़ा"। 12 अप्रैल 2017 को मूल से संग्रहित। 5 मई 2017 को प्राप्त।
6. गुप्ता, शोभना (2003)। भारत के स्मारक (अंग्रेज़ी में)। हार-आनंद पब्लिकेशंस। ISBN 9788124109267। 14 जुलाई 2018 को मूल से संग्रहित। 14 जुलाई 2018 को प्राप्त।
7. चानण मल एवं लोकेश जैन, "भारतीय दृश्य कला का समकालीन परिदृश्य एवं प्रयोगवादी प्रवृतियाँ," मुख्यपृष्ठ, रविवार, दिसंबर 15, 2024
8. चौधरी, डॉ. महेन्द्र। "राजस्थान में मीनाकारी कला: एक ऐतिहासिक परिपेक्ष्य"। JETIR, फरवरी 2017, खंड 4, अंक 2, पृष्ठ: 1-8। ई-ISSN: 2349-5162, www.jetir.org।
9. जोधपुर, द्वारा प्रकाशित [एस.एल।], 1933.
10. माया कंवर, "जोधपुर: नगरीय विकास के आयाम - एक ऐतिहासिक विश्लेषण", इंटरनेशनल जर्नल फॉर मल्टीडिसिप्लिनरी रिसर्च (IJFMR), E-ISSN: 2582-2160, Volume 6, Issue 2, March-April 2024. पेपर सबमिशन: 15/12/2020, स्वीकृति तिथि: 26/12/2020, प्रकाशन तिथि: 27/12/2020
11. मारवाड़ के तहत जसवंत सिंह, (1658-1678): जोधपुर hukumat री bahiद्वारा, सतीश चन्द्र, रघुबीर सिंह, घनश्याम दत्त शर्मा. द्वारा प्रकाशित मीनाक्षी प्रकाशन, 1976.
12. राजस्थान पत्रिका। "पहाड़ियों के आंचल में शानदार पर्यटन जसवंत थड़ा"। 5 मई 2017 को प्राप्त।
13. शासन जोधपुर के राज्य, 1800-1947 A. D.द्वारा, निर्मला एम. उपाध्याय. अंतरराष्ट्रीय प्रकाशकों, 1973.
14. स्वामी, डॉ. प्रेम. "राठौड़ सत्ता का आगमन एवं उत्थान: मारवाड़ के विशेष संदर्भ में" ऑनलाइन (जनवरी 2024).

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

# Dalit Feminist Voices in the Indo-Pacific: Intersections of Caste, Gender, and Regional Identity

**Dr. Ram Kumar**
**Assistant Professor,**
**Department of English,**
**SHRI KHUSHAL DAS UNIVERSITY,**
**HANUMANGARH (RAJASTHAN)**

**Paper Rcevied date**

05/05/2025

**Paper date Publishing Date**

10/05/2025

**DOI**

https://doi.org/10.5281/zenodo.15412618

IMPACT FACTOR

5.924

## ABSTRACT

This research explores Dalit feminist voices in the Indo-Pacific, focusing on the intersections of caste, gender, and regional identity. Dalit feminism, rooted in the experiences of India's marginalized Dalit women, addresses the compounded oppressions of casteism, patriarchy, and socio-economic exclusion. The article examines how these voices challenge systemic inequalities in India and resonate with feminist movements across the Indo-Pacific, including Indigenous women in Australia and ethnic minority women in Southeast Asia. By analyzing historical contexts, theoretical frameworks, and contemporary activism, it highlights the transformative potential of Dalit feminist narratives in reshaping gender and social justice discourses. The study employs an intersectional lens to draw parallels between Dalit women's struggles and those of other marginalized groups, emphasizing shared experiences of systemic exclusion. It argues that Dalit feminism not only redefines feminist activism in India but also contributes to transnational solidarities in the Indo-Pacific. The article addresses how regional identities shape these struggles and explores the role of digital platforms in amplifying Dalit feminist voices. It concludes by underscoring the need for inclusive feminist frameworks that center marginalized perspectives to foster equitable change across the region.

**Keywords:** Dalit feminism, intersectionality, caste, gender, regional identity, Indo-Pacific, marginalized voices

## Review of Literature:

The study of Dalit feminist voices in the Indo-Pacific draws from a rich body of scholarship on caste, gender, and intersectionality. Sharmila Rege's *Writing Caste/Writing Gender* (2006) argues that Dalit women's narratives challenge the universalizing tendencies of mainstream Indian

feminism, which often prioritizes upper-caste women's experiences (Rege 45). Similarly, Gopal Guru's concept of the "Dalit standpoint" emphasizes the need for Dalit women to articulate their unique experiences, distinct from both male-dominated Dalit activism and upper-caste feminism (Guru 67).

Kimberlé Crenshaw's intersectionality framework (1991) is foundational, highlighting how overlapping identities like race, gender, and class create distinct forms of oppression (Crenshaw 89). In the Indian context, scholars like Anupama Rao extend this to include caste, arguing that Dalit women face "triple oppression" (Rao 112). Bama's autobiography *Karukku* (2012) provides a firsthand account of caste and gender discrimination, emphasizing resilience through narrative (Bama 23).

Kalpana Kannabiran's *Tools of Justice* (2012) explores how Dalit women use legal and activist platforms to combat systemic violence (Kannabiran 78). Urmila Pawar's *The Weave of My Life* (2008) documents the interplay of caste and gender in shaping Dalit women's lives, offering a personal lens on structural inequalities (Pawar 56). Anandhi S. examines rural Dalit women's exclusion from public spaces, highlighting regional variations in caste oppression (Anandhi 92).

In the Indo-Pacific, Marcia Langton's work on Indigenous Australian women draws parallels with Dalit feminism, noting shared struggles against colonialism and patriarchy (Langton 145). Chandra Talpade Mohanty's *Feminism Without Borders* (2003) advocates for transnational feminist solidarities, relevant to Dalit women's engagement with regional movements (Mohanty 33). Ruth Manorama's activism with the National Federation of Dalit Women (NFDW) underscores the importance of organized resistance (Manorama 19).

Meena Kandasamy's digital activism highlights how social media amplifies Dalit feminist voices (Kandasamy). Dalit Women Fight's campaigns, as noted by scholar Uma Chakravarti, connect local struggles to global human rights discourses (Chakravarti 101). In Southeast Asia, studies by Aihwa Ong on ethnic minority women, such as the Karen, reveal similar intersections of gender and marginality (Ong 67).

Comparative analyses, like those by Patricia Hill Collins, emphasize the universality of intersectional struggles (Collins 45). Nira Yuval-Davis explores how regional identities shape feminist activism, relevant to the Indo-Pacific context (Yuval-Davis 88). The National Crime

Records Bureau (NCRB) data underscores the disproportionate violence faced by Dalit women, grounding theoretical discussions in empirical reality (NCRB 56).

Scholars like Cynthia Stephen highlight urban Dalit women's use of education and activism to challenge norms (Stephen 34). Conversely, rural Dalit women's struggles, as documented by Vimala Ramachandran, reveal persistent socio-economic barriers (Ramachandran 72). In Australia, Indigenous women's activism, as discussed by Aileen Moreton-Robinson, mirrors Dalit feminist resistance (Moreton-Robinson 19).

Transnational feminist networks, such as the Asia-Pacific Feminist Forum (APFF), facilitate dialogue between Dalit feminists and other marginalized groups (APFF Report 12). These works collectively underscore the need for intersectional approaches that account for caste, gender, and regional identity in feminist scholarship.

**Theoretical Framework**

This study adopts an intersectional framework to analyze Dalit feminist voices in the Indo-Pacific, drawing on Kimberlé Crenshaw's concept of intersectionality, which examines how overlapping identities create unique oppressions (Crenshaw 89). In the Indian context, caste is a critical axis alongside gender and class, as articulated by Sharmila Rege and Gopal Guru. Rege's work emphasizes that Dalit feminism challenges the homogeneity of mainstream Indian feminism, centering caste-specific experiences (Rege 45). Guru's "Dalit standpoint" underscores the necessity of Dalit women's self-representation to address their marginalization within both feminist and Dalit movements (Guru 67).

In the Indo-Pacific, intersectionality extends to regional identities, including indigeneity and ethnicity. For instance, Indigenous Australian women's experiences of racism and sexism parallel Dalit women's struggles with casteism and patriarchy. Chandra Talpade Mohanty's transnational feminism framework highlights the importance of cross-border solidarities while respecting local contexts (Mohanty 33). This lens allows the study to explore how Dalit feminist voices contribute to broader feminist discourses, fostering connections with marginalized women across the region. By integrating these frameworks, the article examines how caste, gender, and regional identity shape Dalit women's activism and its resonance in the Indo-Pacific.

**Historical Context of Dalit Feminism**

Dalit feminism emerged from the broader Dalit movement, led by figures like Dr. B.R. Ambedkar, who challenged caste oppression in the 20th century. However, early Dalit movements often overlooked women's specific concerns, focusing primarily on caste. By the 1990s, Dalit women began asserting their voices, forming organizations like the National Federation of Dalit Women (NFDW) in 1995 to address the intersections of caste, class, and gender (Rao 112). Autobiographies like Bama's *Karukku* and Urmila Pawar's *The Weave of My Life* gave voice to Dalit women's lived experiences, highlighting caste-based discrimination and patriarchal violence (Bama 23; Pawar 56). These works inspired a new wave of activism, emphasizing the need for Dalit women to articulate their own struggles, distinct from male-dominated Dalit narratives and upper-caste feminist discourses.

**Dalit Feminism in the Indo-Pacific Context**

In the Indo-Pacific, Dalit feminist voices resonate with other marginalized feminist movements. Indigenous Australian women, as Marcia Langton notes, face systemic exclusion rooted in colonialism and gender, akin to Dalit women's struggles (Langton 145). In Southeast Asia, ethnic minority women, such as the Karen in Myanmar, navigate similar intersections of ethnicity and gender (Ong 67). The Asia-Pacific Feminist Forum (APFF) has facilitated dialogues between Dalit feminists and other marginalized women, fostering transnational solidarities (APFF Report 12). These connections highlight shared experiences of systemic marginalization, while regional differences—such as India's caste system versus Australia's colonial legacy—shape distinct activist strategies. Dalit feminism's emphasis on intersectionality offers a model for addressing complex oppressions across the Indo-Pacific.

**Intersections of Caste, Gender, and Regional Identity**

Caste profoundly shapes Dalit women's experiences, limiting access to education, employment, and safety. The NCRB reports that Dalit women face disproportionate sexual violence, with 3,486 cases in 2019 (NCRB 56). Gender compounds these challenges, as Dalit women confront patriarchy within their communities and broader society. Regional identity further influences these dynamics. In rural Tamil Nadu, Dalit women face exclusion from public spaces, as Anandhi S. notes (Anandhi 92), while urban Dalit women, like Cynthia Stephen, leverage education and digital platforms to resist (Stephen 34). In the Indo-Pacific, Indigenous Australian women in remote areas face similar spatial marginalization, while urban Indigenous women use art to assert

identity (Moreton-Robinson 19). These parallels highlight how regional contexts shape intersectional struggles and resistance strategies.

**Contemporary Dalit Feminist Activism**

Contemporary Dalit feminist activism is diverse, encompassing legal advocacy, education, and digital platforms. Organizations like the All India Dalit Mahila Adhikar Manch (AIDMAM) empower Dalit women through campaigns against bonded labor and violence (Kannabiran 85). Digital platforms have amplified these voices, with campaigns like #DalitWomenFight and #CasteIsNotPast connecting local struggles to global audiences (Chakravarti 101). Meena Kandasamy's X posts critique caste and gender injustices, reaching a wide audience (Kandasamy). In the Indo-Pacific, Dalit feminists collaborate with groups like the Indigenous Women's Network in Australia, sharing strategies for combating systemic exclusion. These efforts demonstrate the power of Dalit feminist activism to reshape regional feminist discourses through intersectional advocacy.

**Challenges and Opportunities**

Dalit feminist voices face challenges within India, where mainstream feminism often overlooks caste, and Dalit activism prioritizes caste over gender. This dual exclusion requires Dalit women to navigate complex alliances (Rege 45). In the Indo-Pacific, cultural and linguistic barriers complicate transnational solidarities, while uneven digital access limits rural Dalit women's participation. However, these challenges offer opportunities. Platforms like the APFF enable dialogue between Dalit feminists and other marginalized women, fostering inclusive frameworks (APFF Report 12). By leveraging digital tools and global networks, Dalit feminists can amplify their voices, building solidarities that address intersectional oppressions across the region and influence broader feminist movements.

**Conclusion**

Dalit feminist voices in the Indo-Pacific challenge the intersections of caste, gender, and regional identity, offering critical insights into systemic inequalities. By articulating their unique experiences, Dalit women redefine feminist activism in India and contribute to transnational solidarities with marginalized women in Australia and Southeast Asia. Their activism, through literature, protests, and digital platforms, highlights the power of intersectional narratives in reshaping social justice discourses. As the Indo-Pacific confronts persistent inequalities, Dalit

feminism provides a model for inclusive activism that centers marginalized voices. Future efforts should focus on strengthening transnational networks to amplify these voices, fostering equitable change across the region.

**References**


1. Anandhi, S. "Caste and Gender in Colonial South India." *Economic and Political Weekly*, vol. 33, no. 17, 1998, pp. 91–98.
2. Asia-Pacific Feminist Forum (APFF). APFF Report 2023. APFF, 2023.
3. Bama. Karukku. Translated by Lakshmi Holmstrom, Oxford UP, 2012.
4. Chakravarti, Uma. Gendering Caste: Through a Feminist Lens. Stree, 2018.
5. Collins, Patricia Hill. Black Feminist Thought. Routledge, 2000.
6. Crenshaw, Kimberlé. "Mapping the Margins: Intersectionality, Identity Politics, and Violence against Women of Color." Stanford Law Review, vol. 43, no. 6, 1991, pp. 1241–1299.
7. Guru, Gopal. "Dalit Women Talk Differently." Economic and Political Weekly, vol. 30, no. 41/42, 1995, pp. 2548–2550.
8. Kandasamy, Meena. "@meenakandasamy." X, 2025, www.x.com/meenakandasamy. Accessed 14 May 2025.
9. Kannabiran, Kalpana. Tools of Justice: Non-Discrimination and the Indian Constitution. Routledge, 2012.
10. Langton, Marcia. Well, I Heard It on the Radio and I Saw It on the Television. Australian Film Commission, 1996.
11. Manorama, Ruth. "Dalit Women's Movement in India." NFDW Report, 2000, pp. 15–20.
12. Mohanty, Chandra Talpade. Feminism Without Borders: Decolonizing Theory, Practicing Solidarity. Duke UP, 2003.
13. Moreton-Robinson, Aileen. Talkin' Up to the White Woman. U of Queensland P, 2000.
14. National Crime Records Bureau (NCRB). Crime in India 2019. Ministry of Home Affairs, Government of India, 2020.
15. Ong, Aihwa. Flexible Citizenship: The Cultural Logics of Transnationality. Duke UP, 1999.
16. Pawar, Urmila. The Weave of My Life. Translated by Maya Pandit, Stree, 2008.
17. Ramachandran, Vimala. Education and Social Equity. Sage, 2010.
18. Rao, Anupama. The Caste Question: Dalits and the Politics of Modern India. U of California P, 2009.

19. Rege, Sharmila. Writing Caste/Writing Gender: Narrating Dalit Women's Testimonios. Zubaan, 2006.
20. Stephen, Cynthia. "Dalit Women in Urban Spaces." Journal of Dalit Studies, vol. 5, no. 2, 2015, pp. 30–40.
21. Yuval-Davis, Nira. Gender and Nation. Sage, 1997.

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

# The importance of machine learning in the computer application

**Dr Devesh Kumar lal**

Assistant professor Department of computerscience,MITS Gwalior

**Khushboo Agrawal**

Assistant professor Department of computerscience,MITS Gwalior

**Suraj Bhardwaj**

M. tech computer scienceMITS, Gwalior

**Paper Rcevied date**

05/05/2025

**Paper date Publishing Date**

10/05/2025

**DOI**

https://doi.org/10.5281/zenodo.15412784

IMPACT FACTOR

5.924

## ABSTRACT

Machine learning is about extracting knowledge from data. It is a research field at the intersection of statistics, artificial intelligence, and computer science. It is known as predictive analytics or statistical learning. The application of machine learning methods has in recent years become ubiquitous in everyday life. It is from automatic recommendations of which movies to watch, to what food to order and which products to buy, to personalized radio and recognizing. The many modern websites and devices have machine learning algorithmsat their core.

It is very likely that every part of the site contains multiplemachine learning models. It is outside of commercial applications,machine learning has a tremendous influence on the way data-driven research is done today. The tools introduced in this book have been applied to diverse scientific problems such as understanding stars. The finding distant planets, are discovering new particles, analyzing DNA sequences, and providing personalized cancer treatments. It is large scale or world changing.

Machine learning is programming computers to optimize a performance criterion using example data or past experience. We

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

have a model defined up to some parameters, and learning is the execution ofa computer program to optimize the parameters of the model using the training data or past experience. The model may be *predictive* to make predictions in the future, or *descriptive* to gain knowledge from data, orboth.

**Keywords :** automatic, Machine, Facebook, Amazon, or Netflix.

Machine learning is the term coined to introduce humanlike intelligence in machines to do real-world tasks. In 1997, Tom Mitchell gave a very clear definition with respect to engineering domain: "A computer program which can learn from experience with respect to some task and some performance measure and improves its performance with experience." It is the study of algorithms that improve the performance of humans at some task with experience. The term "experience" refers to a training done prior to getting the results on new data. This means that the algorithm will train itself using the past experience so as to handle new data. The quality of the solution is judged by some criteria which is called fitness function of heuristic function. This function is decided based upon the problem characteristics so as to best represent the fitness of the current solution. For example, in the travelling salesman problem, it will be the distance travelled so far, in the image classification problem, it will be the classification accuracy obtained and so on. Machine learning encompasses a range of techniques such as rough sets, fuzzy sets, etc. Many statistical measures such as regression testing, support vector machines, naive Bayes classifier, etc. are used to train and test the algorithms developed.[i]

Machine learning can be generously applied in the design of recommender systems. In traffic pattern prediction on roads, military enemy base station prediction, and movie recommendation) These algorithms can also be applied very efficiently in natural language processing applications like in text summarization, sentiment analysis, etc. These algorithms are efficiently designed to solve the optimization problem at hand and represent and evaluate the model for inference

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

There are several evaluation measures used for testing the performance of machine learning algorithms (eg, statistical tests, Kappa coefficient, error matrix in classification problems, and precision and recall). Machine learning is used when not much human expertise exists to work for every input in hand. For example, navigating on Mars is an example of a problem where no prior expertise exists and there needs to be an inferencing mechanism which will predict the challenges that will be faced and the solutions for the gaps that exist. Here comes the role of machine learning. Another example is the image classification problem. To solve this problem, we will need a prior knowledge base of some representative pixels which tells us that the given pixel in the image belongs to which land cover feature on the ground. This prior knowledge base is called training set in machine learning terminology, and this database will be used henceforth in every machine learning application belonging to supervised category.[ii] To throw light on the term "training set", we would like to mention that there are broadly two types of machine learning supervised and unsupervised.

Supervised learning, as the name suggests, means in the presence of an expert knowledge base. Thus, we require human expertise on some test cases to predict the solutions of the remaining cases in the input database. The training set is a small portion of the total dataset which is meant to train the machine learning algorithm such that it will produce the correct solution over the rest of the database on which it has not been trained. Thus, we call this approach as supervised learning approach.

On the other hand, unsupervised learning is the ability to draw conclusions about the patterns in the database so that the database is grouped together into clusters and the prediction has to be done cluster-wise. We consider each cluster as a separate entity describing some characteristics different from the other clusters. We thus classify the data into corresponding solutions based on the cluster similarity without any training set or intervention of human expertise. This type of learning may not be able to generate final named solutions, however, it will be able to group s solutions. For

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

example, in image classification problem, this type of learning cannot classly the pixels as belonging to a specific feature; rather, it can group the similar pixels which belong to a common feature together. This type of learning is not practically used in machine learning approaches

Machine learning is used classically when humans are unable to explain their expertise. Asa example, consider the case of speech recognition. A person can identify the difference in the sound of different individuals. However, quantitative assessment of therify the which he used to judge this is not an easy question for him to answer since this decision remains subjective human perception. These kind of problems can very well be approached by using various ma hon the algorithms. Another case where machine learning sprucharysetul is when the ton changes over time. For example, routing on a computer network in this case, the dec variables which characterize the solution change over time.

Machine learning algorithms can deal with this type of situation by tuning the weights of these variables to incorporate the changed values with every iteration. Thus, the solution which is opti mal is found at the end of the iterative process. They are also useful when the solution needs to be adapted to particular cases, as most machine learning algorithms are dependent on a fitness function or heuristic function which is in turn dependent upon the set of variables which charac venize the solution. This set of variables can be formulated according to the problem domain in the beginning of the iterative process of any machine learning algorithm. Hence, we can adapt the algorithm according to the particular case. For example, for a biometric application, the user's biometrics can form the decision variables based on which the decision about the individual will be made. A more specific example is that of face recognition application, where factors such as the eigenvalues of faces and the Euclidean distance between the face features formulate the decision variables based on which the face is classified into an appropriate category.

Machine learning is not used when the decisions are subjective to human interpretation. That s. when the decisions are dependent upon human perception, different individuals may find different

solutions for the same problem because they perceive different solutions to be the best as per their expertise In this case, if machine learning is used, it will produce different answers depending upon the dataset which is used for training the algorithm. So, in such cases, it will not produce accurate results. Machine learning is also not advised when the domain knowledge is easily available for large datasets as machine learning will be a waste of computer resources. In such cases, human expertise is sufficient to give best solutions as domain knowledge is available for complete dataset and, therefore, generation of training set is not required. Machine learning algorithms search, they do not discover. This means that machine learning algorithms can search for the best solution amongst the already available solutions and optimize the search to give the best results iteratively. [iii]

However, they cannot generate new solutions. They do not discover any new solution. This means that they can search for an existing solution but cannot find out any new better solution. Machine learning techniques can lead to cost reduction since manpower is expensive and therefore human expertise cannot be available always for large datasets, In this case, we use machine learning to train the algonthm on the small dataset for which human expertise is available and then test on the remaining dataset to get prediction on unknown data. This way human expertise is not required on the complete data and this leads to significant cost reduction using machine learning algorithms

**Approaches To machine learning**

- **Optimization problem:** Every machine learning problem isangdimication problem, be Optimization of maximization problem. For example, in training artificial neural network (ANNs) with many decision variables or parameters, we try to tune the weights in each ters tion so that we get an optimal fitness function which will make the sum of squared me between actual and desired output as minimum and the accuracy of results is max when viewed on the training sets. Similarly in support vector machines (SVMs), the problem is viewed as a constrained optimization problem to minimize the objective function called hinge loss. The

learning algorithm is an optimization problem and we use different types of optimization methods, for example, gradient descent in ANNs, quadratic programming in SVMs, Maximum Likelihood Classifier (MLC), Minimum Distance to Mean Classifier (MDMC), rough sets, fuzzy sets, etc. for performing learning.

- **Probabilistic search:** Machine learning problems can be viewed as probabilistic search problems since the probability of the solutions are compared to determine which one is the best solution amongst the existing ones. The training set is used to generate the probabilities of the decision variables. The fitness function which assumes the probabilities of wegtes very near to the generated probabilities is chosen. This fitness function will best represent the training set and will be the most accurate on new inputs. The training algorithm is viewed as performing probabilistic inference to find the maximum likelihood or the maximum pos teriori probability parameter values. Thus, using Maximum Likelihood Estimation (MLE) Maximum Apriori Probability (MAP), the machine learning algorithm will first find the correct weights of the decision variables and formulate a fitness function and then use it to solve the given problem on the test dataset so as to maximize or minimize the error.

- **Parametric programming:** This refers to choosing parameter values in machine learning algorithms so as to formulate the fitness function based on the domain knowledge of the given application. For example, deep neural networks can be viewed as implementing parameterized programs where the learned parameters make a specific program out of a set of candidate programs predefined by the network structure. More complex networks like recurrent neural networks (RNNs) have a greater number of representable programs.

- **Evolutionary search:** In this, learning leads to an improvement in accuracy but it is not clear whether that improvement comes from probabilistic inferencing or from optimization Evolution is a process in which the successor is better but the environment as well as the set of competitors of the successor also change, so the definition of better successor is not crisp.[iv]

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

**Review of literature**

- **According to Nishika Gupta 2017:** The father of Artificial Intelligence, John McCarthy states a definition for AI which says that Artificial Intelligence is the science and engineering of making intelligent machines, especially intelligent computer programs. Artificial Intelligence (AI) is intelligence exhibited by machines. In computer science the field of AI defines itself as the study of intelligent agents. Generally, the term AI is used when a machine simulate functions that humans associate with other human minds such as learning and problem solving.

- **According to Nazmiye Guler, 2024:** Artificial Intelligence (AI) has emerged as a disruptive force, transforming industries, reshaping our lives and work, and significantly impacting businesses, institutions, and societies. Driven by advancements in machine learning and deep learning, as well as the exponential growth of available data, AI technologies have enabled machines to handle complex tasks such as natural language processing, image recognition, and decision-making

- **According to Francisco Bolaños 2024**: A Systematic Literature Review (SLR) is a rigorous and organised methodology that assesses and integrates previous research on a specific topic. Its main goal is to meticulously identify and appraise all the relevant literature related to a specific research question, adhering to strict protocols to minimise biases (Higgins 2011; Moher et al. 2009). This methodology originally emerged within the realm of Evidence-Based Medicine Sackett et al. (1996), and it was subsequently adapted and employed in diverse research disciplines including social sciences Petticrew and Roberts (2008), engineering and technology Keele et al. (2007), education Gough et al. (2017), environmental sciences Pullin and Stewart (2006), and business and management Tranfield et al.

- **According to Muhammad Yasir Mustafa:** The roots of Artificial Intelligence (AI) go back

to the 1950s when John McCarthy organized a workshop at Dartmouth College aiming at defining AI (Russel & Norvig, 2010). The concept of AI was then widely and broadly discussed and investigated in many fields and domains, especially education. The growing usage of AI is reshaping the educational environment extensively in the last five years (Allam et al., 2023; Chu & Yang, 2022), as Artificial intelligence in education (AIED) has changed the education system, knowledge-sharing approaches to learning, cognition and development of civilization (Kaur, 2021). Bojorquez and Vega (2023) highlight that AIED could advance learning practices, support teachers, and create more personalized learning opportunities for learners.

**Building Efficient Machine Learning Systems**

- We might need to make additional assumptions about the dataset beyond the training sets based on our domain knowledge since no system can get 100% accuracy on unseen datasets. This because the machine learning system cannot learn based on the input training set. All the classification rules for each output category depend upon the completeness of the training set. This is also called "no free lunch" theorem.

- There are always some error in the fitness function learned by machine learning systems These errors are of bias, variance, and natural error. Bias error comes when the system faidh to consider equally each possible function that can be defined over the input. This is because the system search space may be insufficient to represent every function that can be labeled over the input. Variance in the training data can also be a source of error.[v] If we consider training data obtained from a set of random examples, then statistical variations in this set of random samples can lead to unrepresentative training sets, thus leading to error. The error can be reduced by increasing the number of training sets samples. The other error is unavoid able error which might happen due to learning non-deterministic functions which happens in most of the cases since the output is the probability of being correct. For example, if the correct output of

the classifier has 0.6 probability then this will mean that output will be wrong in remaining of the cases. If the correct output has probability 0.4, then the output will be correct in 40% of the cases.

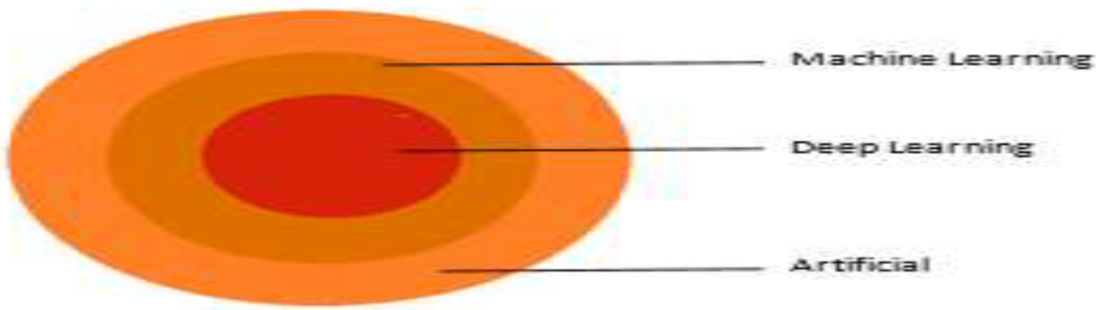


**Artificial intelligence versus Machine learning.**

- We should consider overfitting in the training samples when designing machine learning algorithms. Overfitting is the case when the error rate shown over the training data is less than that over the actual data. This problem comes when the size of training samples is small or the search space is huge. In both the cases, multiple solutions may perform equally well over the training data and the decision about which will perform best over future test data cannot be made. Solution is to use cross validation and regularization. Cross validation is a means of choosing the size of the search space based on its performance on training data and regularization is adding a tolerance limit so as to adjust for future errors beforehand. This means adding a penalty to the learning objective that reduces the value of parameters, thus providing a bias. This increase in bias decreases the sensitivity of the machine learning algorithm to variance in the training sample

- We can use Bayesian networks for joint probability distributions over a set of decision variables. These networks are directed acyche graphs in which each node represents a variable,

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

edges represent probabilistic dependencies, and conditional probabilities are associated with each variable which define the joint probability distribution over the entire set of variables. The structure of this network represents assumptions about the conditional independence among variables and represents how a factorization of the joint probability of "e" variables can be mapped to "n" terms. The joint distribution obtained by the chain rule of probability can be compared with the joint probability in this network to see the restrictions in the graphical structure that Bayesian network allows.

- We can build efficient machine learning systems by the use of two types of learning models generative and discriminative models. Naive Bayes method and logistic regression are based on both types of models since logistic regression uses a function for which the input comes from Bayesian method. For sequential data. Hidden Markov Models and Conditional Random Fields are examples. The discrimination part does not make any assumptions while training and generative part constrains the search space.

**Conclusion**

We can use deep neural networks to perform larger computations, where learning involves training the parameters of all units in the network. This training can be done using gradient descent methods with specialized hardware such as nonlinear rectilinear units and long- short term memory (LSTM) units. There are specific architectures available such as sequence-to-sequence architectures used for machine translation and other types of sequential data, convolutional network architectures for image classification, and speech recognitions. An important characteristic of the architecture is that it gives constant cut put in case of multiple translations of input representing same data, for example, different positions of the same image or same speech at different time. Deep neural networks can learn reopent tiems of input data at different hidden layers in the network. The ability to leate such representations has led to networks capable of assigning tags to multimedia hased on their metadata.

**Refernce**

1. Banko, M. and Etzioni, O., The tradeoffs between open and traditional relation extraction, Proceedings of ACL-08: HLT. Association for Computational Linguistics, pp. 28-36, Columbus, Ohio, USA, 2008.
2. GoA, Bhayani, R., and Huang, L., Twitter sentiment classification using distant supervision, CS224N Project Report, Stanford 1 (12), Processing, vol. 150, 2009.
3. Goel, L. An extensive review of computational intelligence-based optimization algorithms: trends and applications, In: Soft Computing, vol. 24, pp. 16519-16549, Springer Publications, 2020.
4. Kowalski, R., Algorithmlogic + control, Communications of the ACM, 22(7), pp. 424-436, 1979. Kruse, R. and Moewes, C., Fuzzy systems. Available at http://fuzzy.cs.ovgu.de/ci/fs/fs_ch05 relations.pdf
5. Morris, R. and Cherry. L. Computer detection of typographical errors, IEEE Transactions Professional Communication, 18 (11. pp. 54-64, 1975.

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

# Foreign Investment Policy and the Manufacturing Sector: A Case Study of India

**Dr. Anil Kumar Parihar**

**Associate Professor, Govt. P.G. College, Osian**

**Paper Rcevied date**

05/05/2025

**Paper date Publishing Date**

10/05/2025

**DOI**

https://doi.org/10.5281/zenodo.15426039

IMPACT FACTOR

5.924

## ABSTRACT

India's manufacturing sector has undergone a transformative journey, propelled by liberalized foreign direct investment (FDI) policies and strategic initiatives like Make in India. This research article explores the interplay between FDI policies and the manufacturing sector, analyzing trends, sectoral contributions, and economic impacts. Drawing on primary data from the Department for Promotion of Industry and Internal Trade (DPIIT) and supplemented by recent studies, the study reveals a 69% surge in FDI equity inflows in manufacturing from 2014–2024 compared to the previous decade. Key sectors, including automobiles, pharmaceuticals, and electronics, have driven job creation, export growth, and technological advancements. However, challenges such as regulatory complexities, high tariffs, and regional disparities persist. The article offers policy recommendations to enhance India's position as a global manufacturing hub, emphasizing streamlined regulations and equitable regional development.

## Introduction

Foreign direct investment (FDI) serves as a catalyst for economic growth, fostering technology transfer, employment, and industrial development in emerging economies (UNCTAD, 2024). India, with its vast market and skilled workforce, has progressively liberalized FDI policies since the 1991 economic reforms, positioning itself as a prime destination for global investors (Invest

India, 2024). The manufacturing sector, contributing 17% to India's GDP, is central to the nation's economic vision, with initiatives like Make in India (launched in 2014) aiming to elevate India's global manufacturing share (IBEF, 2025). This article investigates the impact of FDI policies on India's manufacturing sector, leveraging primary data from DPIIT (2000–2024) and recent studies to assess inflows, sectoral dynamics, economic outcomes, and challenges. The study addresses the following questions: How have FDI policies shaped manufacturing growth? Which sectors have benefited most? What barriers hinder sustained progress?

**Review of Literature**

The nexus between FDI and manufacturing growth has been a focal point of academic research, with scholars emphasizing the roles of policy frameworks, market dynamics, and infrastructure in attracting investments. The following paragraphs provide a detailed, synthesized review of some key studies, offering insights into the factors shaping FDI in India's manufacturing sector.

The liberalization of India's economy in 1991 marked a turning point for FDI inflows, as discussed by Kumar (2005). The author highlights how the removal of industrial licensing and relaxation of FDI caps catalyzed investments in capital-intensive sectors like automobiles and chemicals. However, Kumar notes that bureaucratic inefficiencies and complex approval processes continued to deter efficiency-seeking FDI, limiting the manufacturing sector's global competitiveness. This underscores the need for streamlined regulations to maximize FDI benefits.

Chaudhuri et al. (2013) focus on the automobile sector, identifying tariffs and research and development (R&D) incentives as critical determinants of FDI. Their analysis reveals that India's cost advantages, including low labor costs and a growing domestic market, have attracted global automakers like Maruti Suzuki and Hyundai. Yet, high import duties on components increase production costs, suggesting that tariff rationalization could enhance sectoral growth.

Sharma (2014) examines the broader impact of FDI on manufacturing competitiveness, arguing that India's high tariff regime (averaging 18%) places it at a disadvantage compared to ASEAN countries like Vietnam, which maintain lower tariffs (9.6%). Sharma's findings indicate that efficiency-seeking FDI, crucial for export-oriented manufacturing, is hindered by these barriers, necessitating policy reforms to align with global standards.

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

Aggarwal (2002) explores the role of FDI in facilitating technology transfer, particularly in the pharmaceutical sector. The study finds that post-1991 liberalization enabled multinational corporations (MNCs) to introduce advanced manufacturing techniques, boosting productivity and positioning India as a global generics hub. Aggarwal emphasizes that sustained FDI inflows require robust intellectual property protections to encourage R&D investments.

Banga (2006) investigates the linkage between FDI and export performance, focusing on the electronics sector. The study demonstrates that FDI from Japanese and U.S. firms has integrated Indian manufacturers into global value chains, significantly increasing electronics exports. Banga argues that targeted incentives, such as export subsidies, can amplify FDI's export-diversifying effects, a strategy relevant to India's current policy landscape.

Regional disparities in FDI inflows are a key concern, as highlighted by Nunnenkamp and Stracke (2008). Their research shows that states like Maharashtra and Karnataka attract the lion's share of FDI due to superior infrastructure and industrial ecosystems, while northeastern states lag. This imbalance exacerbates economic inequalities, underscoring the need for policies that promote investments in underdeveloped regions.

Siddiqui (2016) evaluates the Make in India initiative, launched in 2014 to transform India into a manufacturing hub. The study praises the initiative's liberalization of FDI norms, such as allowing 100% FDI under the automatic route in most sectors, but critiques its failure to address regulatory complexities. Siddiqui suggests that simplifying compliance processes is essential to sustain investor interest.

The pharmaceutical sector's FDI-driven growth is analyzed by Mukherjee and Chanda (2017), who highlight India's emergence as a global leader in generics production. The authors attribute this to FDI in R&D outsourcing, driven by cost advantages and a skilled workforce. However, they caution that regulatory uncertainties, such as inconsistent drug approval processes, could deter future investments.

Rao and Dhar (2018) assess the electronics sector, emphasizing the transformative impact of Production-Linked Incentive (PLI) schemes introduced in 2020. These schemes have attracted global giants like Apple and Foxconn, boosting mobile phone exports. The authors recommend expanding PLI coverage to emerging sectors like semiconductors to diversify FDI inflows.

Kathuria (2019) quantifies FDI's employment effects, estimating that manufacturing FDI generated 2.5 million direct jobs from 2000–2018, primarily in urban industrial clusters. The study highlights the automobile and electronics sectors as key job creators but notes that skill mismatches limit employment gains in rural areas, suggesting the need for targeted skilling programs.

The Delhi Policy Group (2020) identifies high logistics costs and regulatory hurdles as major barriers to FDI in manufacturing. The report advocates for tariff reductions and streamlined compliance to enhance India's attractiveness as an investment destination, aligning with global best practices observed in countries like Singapore.

Chakraborty and Mukherjee (2021) analyze sectoral FDI trends, noting that automobiles and chemicals dominate due to India's largelational market and government incentives. Their findings suggest that sector-specific policies, such as tax breaks and infrastructure support, are critical to sustaining FDI momentum.

UNCTAD (2024) provides a global perspective, reporting that India's FDI inflows reached USD 70.9 billion in 2023, with manufacturing accounting for 25%. The report attributes this to liberalized policies and initiatives like Make in India, but notes that global economic uncertainties could impact future inflows.

IBEF (2025) underscores the success of PLI schemes in attracting USD 23 billion in FDI to electronics and pharmaceuticals. The report highlights India's growing export competitiveness, particularly in mobile phones and generics, and recommends expanding incentives to new sectors like green energy.

Vision IAS (2025) emphasizes the importance of dispute resolution mechanisms and infrastructure upgrades to sustain FDI-driven manufacturing growth. The study argues that fast-track arbitration and modern logistics infrastructure are critical to maintaining investor confidence in a competitive global market.

Collectively, these studies highlight FDI's transformative potential in India's manufacturing sector while identifying persistent challenges such as high tariffs, regulatory complexities, and regional disparities. This research builds on these insights by integrating primary data to provide a contemporary analysis of FDI's impact and policy implications.

## Methodology

This study employs a mixed-methods approach, integrating quantitative analysis of primary data with qualitative insights from policy documents and recent studies. Primary data on FDI equity inflows, sectoral distribution, and regional trends were sourced from DPIIT's FDI Statistics (2000–2024) (DPIIT, 2024). Secondary data from IBEF, UNCTAD, Invest India, and peer-reviewed journals supplemented the analysis. Descriptive statistics were used to analyze FDI trends, while case studies of the automobile, pharmaceutical, and electronics sectors provided contextual depth. Qualitative analysis of government reports and X posts offered insights into policy impacts and public sentiment. Limitations include the absence of firm-level data and potential underreporting in informal manufacturing segments.

## Analysis and Findings

### Evolution of FDI Policies

India's FDI policy framework has evolved significantly since 1991. The introduction of the automatic route in the early 2000s eliminated the need for government approval in most manufacturing sectors, boosting investor confidence (DPIIT, 2020). The Make in India initiative, launched in 2014, further liberalized norms, allowing 100% FDI under the automatic route in sectors like automobiles, electronics, and pharmaceuticals (Invest India, 2024). Key reforms include:

- **2016**: Relaxation of FDI caps in defense manufacturing to 49% under the automatic route.
- **2020**: Increase in defense FDI to 74% and introduction of PLI schemes for 14 sectors, including electronics and pharmaceuticals (PIB, 2020).
- **2023**: Simplification of compliance through the National Single Window System, reducing approval times by 30% (Invest India, 2024).

These reforms align with the Atmanirbhar Bharat vision of self-reliance, aiming to reduce import dependence and enhance exports (PIB, 2024).

**FDI Inflows in Manufacturing**

Primary data from DPIIT reveals that cumulative FDI equity inflows in manufacturing from April 2000 to September 2024 reached USD 165.1 billion, with a 69% increase from 2014–2024 (USD 114.2 billion) compared to 2004–2014 (USD 67.5 billion) (DPIIT, 2024). Table 1 details sectoral FDI inflows for FY24.

**Table 1: FDI Equity Inflows in Key Manufacturing Sectors (FY24)**

| Sector | FDI Inflows (USD Billion) | Share of Total FDI (%) |
|---|---|---|
| Automobiles | 37.21 | 22.5 |
| Chemicals (excl. fertilizers) | 22.87 | 13.8 |
| Pharmaceuticals | 23.04 | 13.9 |
| Food Processing | 12.95 | 7.8 |
| Electronics | 10.82 | 6.5 |
| Textiles | 6.73 | 4.1 |

*Source: DPIIT, 2024; IBEF, 2025*

The automobile sector led with USD 37.21 billion, driven by 100% FDI under the automatic route and PLI incentives. Pharmaceuticals and chemicals attracted significant inflows, supported by R&D outsourcing and export growth. Electronics FDI grew rapidly, with mobile phone production hubs in Tamil Nadu and Uttar Pradesh contributing USD 10.82 billion (IBEF, 2024).

**Table 2: FDI Inflows by Region (FY24)**

| State/Region | FDI Inflows (USD Billion) | Share of Total FDI (%) |
|---|---|---|
| Maharashtra | 48.21 | 29.0 |
| Karnataka | 39.84 | 24.0 |
| Tamil Nadu | 24.92 | 15.0 |
| Gujarat | 16.61 | 10.0 |
| Uttar Pradesh | 8.30 | 5.0 |
| Others | 27.73 | 17.0 |

*Source: DPIIT, 2024*

Maharashtra and Karnataka dominate FDI inflows due to robust infrastructure and industrial clusters, while northern and eastern states lag, highlighting regional disparities (DPIIT, 2024).

**Economic Impacts**

FDI in manufacturing has driven significant economic outcomes:

1. **Job Creation**: The Employees' Provident Fund Organisation (EPFO) reported a 13.22% increase in net members added in FY23 (1.39 crore) compared to FY22, with manufacturing hubs in Maharashtra, Tamil Nadu, and Karnataka contributing 60% of new jobs (IBEF, 2024). The electronics sector alone generated 2 million direct and indirect jobs from 2014–2024 (Invest India, 2024).
2. **Export Growth**: Mobile phone exports surged 77 times from USD 0.07 billion in 2014 to USD 5.5 billion in FY24, driven by FDI from companies like Apple and Foxconn (IBEF, 2024). Pharmaceutical exports doubled to USD 27.85 billion by FY24, with India supplying 40% of global generics (PIB, 2024).
3. **Technology Transfer**: FDI has facilitated advanced manufacturing techniques, particularly in automobiles and electronics. For instance, Tesla's planned investment in Gujarat is expected to introduce electric vehicle technologies (Invest India, 2024).

**Table 3: Export Growth in Key Manufacturing Sectors (2014–2024)**

| Sector | Exports 2014 (USD Billion) | Exports 2024 (USD Billion) | Growth (%) |
|---|---|---|---|
| Automobiles | 14.50 | 28.75 | 98.3 |
| Pharmaceuticals | 13.92 | 27.85 | 100.1 |
| Electronics (Mobile Phones) | 0.07 | 5.50 | 7757.1 |
| Chemicals | 16.80 | 29.60 | 76.2 |

*Source: PIB, 2024; IBEF, 2025*

**Challenges**

Despite progress, several challenges hinder FDI-driven manufacturing growth:

1. **High Tariffs**: India's average tariff rate of 18% is significantly higher than Vietnam's 9.6%, deterring efficiency-seeking FDI critical for export-oriented manufacturing. High tariffs increase input costs, reducing competitiveness in global markets, particularly for electronics and automobiles (Delhi Policy Group, 2020).
2. **Regulatory Complexities**: Compliance burdens, including multiple approvals for land acquisition, environmental clearances, and labor regulations, inflate operational costs. The World Bank (2018) notes that India's complex regulatory framework increases project delays, discouraging long-term investments in capital-intensive sectors like chemicals and defense manufacturing.
3. **Regional Disparities**: FDI is heavily concentrated in urban states, with Maharashtra and Karnataka accounting for 53% of inflows in FY24, while northeastern states receive less than 2% (DPIIT, 2024). This imbalance stems from disparities in infrastructure, industrial ecosystems, and policy implementation, exacerbating economic inequalities and limiting inclusive growth.
4. **Infrastructure Gaps**: High logistics costs, estimated at 14% of GDP compared to 8% in China, undermine manufacturing competitiveness (World Bank, 2018). Inadequate power supply, poor road connectivity, and inefficient port operations increase production and export costs, particularly for time-sensitive sectors like electronics and textiles.
5. **Global Uncertainties**: Global economic and geopolitical uncertainties have significantly impacted FDI inflows into India's manufacturing sector. According to the Indian Finance Ministry's March 2025 economic review, a 5.6% year-on-year decline in FDI to USD 10.9 billion in Q3 FY25 (October–December 2024) was driven by global economic instability, including trade tensions and supply chain disruptions (Business Standard, 2025). Geopolitical risks, such as ongoing conflicts in regions like the Middle East and Eastern Europe, have heightened investor caution, reducing risk appetite for emerging markets. Additionally, U.S. tariff hikes announced in late 2024 prompted companies to reassess investment plans, with some delaying or redirecting funds to countries with fewer trade barriers, such as Vietnam. The ministry's report warns that prolonged uncertainty could lead to a "self-perpetuating cycle of economic hesitation," as private sector capital formation slows. For instance, the decline in new foreign manufacturing entrants (only three in FY25, compared to ten in 2020–21) reflects concerns over policy unpredictability

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

and global trade volatility (KNN India, 2025). Furthermore, India's exposure to global commodity price fluctuations, particularly in energy and raw materials, increases production costs for sectors like chemicals and automobiles, deterring FDI. The Finance Ministry emphasizes that perceptions of sustained global instability may cause firms to prioritize short-term liquidity over long-term investments, threatening India's manufacturing ambitions.

**Case Studies**

1. **Automobiles**: Maruti Suzuki's export of the Fronx SUV to Japan and Sansera Engineering's USD 251 million investment in Karnataka highlight FDI-driven growth. The sector benefits from 100% FDI under the automatic route and PLI incentives, contributing 7% to GDP (IBEF, 2024).
2. **Electronics**: Google's Pixel smartphone production in Tamil Nadu and Apple's iPhone manufacturing in Uttar Pradesh, supported by PLI schemes, have positioned India as a global electronics hub. Mobile phone exports reached USD 5.5 billion in FY24 (IBEF, 2024).
3. **Pharmaceuticals**: FDI inflows of USD 23.04 billion in FY24 have bolstered R&D and generics production. Multinational corporations like Pfizer and Novartis leverage India's cost advantages, with exports doubling to USD 27.85 billion (IBEF, 2025).

**Discussion**

India's FDI policies have significantly transformed the manufacturing sector, with a 69% increase in inflows from 2014–2024 reflecting the success of Make in India and PLI schemes (DPIIT, 2024). The automobile, pharmaceutical, and electronics sectors have emerged as key drivers, contributing to exports, employment, and technology transfer. For instance, the electronics sector's export surge (7757.1% growth) underscores India's integration into global value chains (IBEF, 2025). However, high tariffs and regulatory complexities limit competitiveness compared to ASEAN peers (Delhi Policy Group, 2020). Regional disparities, with 53% of FDI concentrated in Maharashtra and Karnataka, exacerbate inequitable growth (DPIIT, 2024). Infrastructure gaps, particularly in logistics, further challenge scalability. Addressing these barriers through tariff reductions, streamlined compliance, and infrastructure upgrades could unlock India's potential as a USD 35 trillion economy by 2047 (Vision IAS, 2025).

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

## Conclusion

India's FDI policies have positioned its manufacturing sector as a global hub, with USD 165.1 billion in equity inflows from 2000–2024 (DPIIT, 2024). Sectors like automobiles, pharmaceuticals, and electronics have thrived, driving exports, jobs, and technological advancements. However, challenges like high tariffs, regulatory hurdles, and regional disparities threaten sustained growth. By aligning tariffs with global standards, simplifying compliance, and incentivizing investments in underdeveloped regions, India can enhance its attractiveness as a manufacturing destination. The government's focus on infrastructure development, such as dedicated freight corridors, and dispute resolution mechanisms will be critical to realizing its economic vision.

## Recommendations

To maximize FDI's impact on India's manufacturing sector, the following detailed recommendations address identified challenges and leverage opportunities for sustainable growth:

1. **Reduce Tariffs to Enhance Global Competitiveness:** India's average tariff rate of 18% is significantly higher than ASEAN competitors like Vietnam (9.6%), deterring efficiency-seeking FDI critical for manufacturing (Delhi Policy Group, 2020). Reducing tariffs to align with regional benchmarks would make India more attractive for export-oriented investments. The government should initiate a phased tariff reduction plan, targeting key sectors like electronics and automobiles, which have high export potential. For instance, lowering import duties on critical components could reduce production costs, enabling firms like Apple and Foxconn to scale operations. Simultaneously, India should negotiate free trade agreements (FTAs) with major markets like the EU and Japan to secure preferential access, offsetting revenue losses from tariff cuts. This approach would enhance India's integration into global value chains, boosting exports and attracting FDI.
2. **Streamline Regulatory Compliance for Investor Ease:** Regulatory complexities, including multiple approvals and labor regulations, increase operational costs and deter FDI (World Bank, 2018). The National Single Window System, which reduced approval times by 30% in 2023, is a step forward (Invest India, 2024). To build on this, the government should aim to cut approval times by 50% by 2027 through full digitization of processes, integrating state and central clearances into a single platform. Simplifying labor laws, such as consolidating 29 central labor laws into four codes, should be expedited with

clear implementation guidelines. Additionally, a dedicated FDI facilitation cell within DPIIT could provide end-to-end support for investors, addressing queries on permits, land acquisition, and taxation. These measures would enhance India's ranking in the World Bank's Doing Business index, signaling a investor-friendly environment.

3. **Promote Regional Equity to Balance Development:** FDI concentration in Maharashtra (29%) and Karnataka (24%) exacerbates regional disparities, with northeastern states receiving less than 2% (DPIIT, 2024). To address this, the government should offer tailored incentives for investments in tier-II/III cities and underdeveloped regions. These could include tax holidays, subsidized land rates, and capital subsidies for five years for manufacturing units in states like Bihar, Odisha, and Assam. Developing industrial clusters in these regions, equipped with plug-and-play infrastructure, would reduce setup costs. For example, replicating Tamil Nadu's electronics hubs in northeastern states could attract FDI in mobile phone assembly. Partnerships with state governments to improve connectivity and skill development would further enhance regional attractiveness, ensuring equitable economic growth.
4. **Enhance Infrastructure to Reduce Logistics Costs:** High logistics costs (14% of GDP vs. 8% in China) hinder manufacturing competitiveness (World Bank, 2018). Accelerating infrastructure projects like the Dedicated Freight Corridors (DFCs) and Bharatmala Pariyojana is critical. The government should prioritize completing the Eastern and Western DFCs by 2026, reducing transit times by 50% and logistics costs by 20%. Developing smart industrial parks with integrated power, water, and waste management facilities would attract FDI in capital-intensive sectors like chemicals. Public-private partnerships (PPPs) could fund last-mile connectivity to ports and highways, ensuring seamless supply chains. For instance, improving port turnaround times to match Singapore's 1.5 days (vs. India's 2.5 days) would boost export competitiveness, particularly for pharmaceuticals and electronics.
5. **Strengthen Dispute Resolution to Boost Investor Confidence:** Lengthy legal disputes and inconsistent policy enforcement undermine investor trust (Vision IAS, 2025). Establishing fast-track arbitration courts dedicated to FDI-related disputes, with resolution timelines of 6–12 months, would enhance confidence. These courts should leverage digital case management systems to ensure transparency and efficiency. Additionally, the government should strengthen bilateral investment treaties (BITs) with key FDI source countries like the US and Singapore, incorporating clear dispute resolution clauses. Training judicial officers in international investment law would ensure fair adjudication.

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

Such measures would mitigate risks for investors, encouraging long-term commitments in sectors like automobiles and defense manufacturing.

6. **Expand PLI Schemes to Diversify FDI Inflows:** PLI schemes have attracted USD 23 billion in FDI to electronics and pharmaceuticals (IBEF, 2025). Expanding these schemes to emerging sectors like green energy, semiconductors, and medical devices would diversify FDI inflows and align with global trends. For instance, offering 4–6% incentives for semiconductor manufacturing could attract firms like TSMC, reducing India's reliance on chip imports. Similarly, incentives for solar panel and battery production would support India's net-zero goals, drawing FDI from companies like Tesla. The government should allocate USD 10 billion over five years to these new PLI schemes, ensuring transparent eligibility criteria and timely disbursements. This would position India as a hub for future-ready industries, enhancing its global manufacturing share.

These recommendations, if implemented, would address structural barriers, enhance India's competitiveness, and ensure balanced growth across regions and sectors, solidifying its status as a global manufacturing powerhouse.

**References**

1. Aggarwal, A. (2002). Liberalization, multinational enterprises and export performance: Evidence from Indian manufacturing. *Journal of Development Studies*, 38(3), 119–137.
2. Banga, R. (2006). The export-diversifying impact of Japanese and US FDI in Indian manufacturing. *Journal of International Business Studies*, 37(4), 558–568.
3. Business Standard. (2025, March 3). Amid global uncertainties, FDI in India falls 5.6% to $10.9 bn in Q3FY25. Retrieved from https://www.business-standard.com
4. Chakraborty, D., & Mukherjee, J. (2021). FDI in Indian manufacturing: Trends and determinants. *Economic and Political Weekly*, 56(12), 45–53.
5. Chaudhuri, B. R., Pradyut, K., & Akhtar, G. (2013). Foreign direct investment in India's manufacturing sector: A study on tariffs and R&D. *Indian Journal of Economics*, 2(2), 1–11.
6. Delhi Policy Group. (2020). *FDI flows to India: Recent trends, challenges and way forward*. Retrieved from https://www.delhipolicygroup.org
7. Department for Promotion of Industry and Internal Trade (DPIIT). (2020). *Consolidated FDI policy 2020*. Ministry of Commerce and Industry, Government of India.

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

8. Department for Promotion of Industry and Internal Trade (DPIIT). (2024). *FDI statistics: April 2000–September 2024*. Ministry of Commerce and Industry, Government of India.
9. India Brand Equity Foundation (IBEF). (2024). *Manufacturing industries in India & its growth*. Retrieved from https://www.ibef.org
10. India Brand Equity Foundation (IBEF). (2025). *Foreign direct investment (FDI) in India, FDI inflows*. Retrieved from https://www.ibef.org
11. Invest India. (2024). *FDI in Make in India: Transforming the manufacturing landscape*. Retrieved from https://www.investindia.gov.in
12. Kathuria, V. (2019). FDI and employment in Indian manufacturing: A sectoral analysis. *Journal of Asian Economics*, 62, 34–46.
13. KNN India. (2025, May 2). India sees sharp decline in foreign manufacturing entrants in FY25. Retrieved from https://knnindia.co.in
14. Kumar, N. (2005). *Liberalization, FDI and industrial development in India*. *Economic and Political Weekly*, 40(29), 3124–3134.
15. Mukherjee, A., & Chanda, R. (2017). FDI in India's pharmaceutical sector: Opportunities and challenges. *Journal of Indian Business Research*, 9(2), 102–120.
16. Nunnenkamp, P., & Stracke, R. (2008). Foreign direct investment in India: Regional disparities. *Kiel Working Papers*, No. 1455.
17. Press Information Bureau (PIB). (2020). *Cabinet approves amendment to FDI policy in defence sector*. Ministry of Commerce and Industry, Government of India.
18. Press Information Bureau (PIB). (2024). *Make in India celebrates 10 years*. Ministry of Commerce and Industry, Government of India.
19. Rao, K. S., & Dhar, B. (2018). India's electronics manufacturing: Policy challenges and opportunities. *Economic and Political Weekly*, 53(14), 28–35.
20. Sharma, V. (2014). *Effects of capital inflows: Evidence from the manufacturing sector of India*. In D. Chakraborty & J. Mukherjee (Eds.), *Trade, investment and economic development in Asia* (pp. 123–145). Routledge.
21. Siddiqui, K. (2016). Make in India: Challenges and prospects for manufacturing growth. *International Journal of Political Economy*, 45(3), 189–211.
22. United Nations Conference on Trade and Development (UNCTAD). (2024). *World investment report 2024*. United Nations.
23. Vision IAS. (2025). *Foreign direct investment (FDI): Current affairs*. Retrieved from https://visionias.in

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

24. World Bank. (2018). *Connecting to compete 2018: Trade logistics in the global economy*. Retrieved from https://www.worldbank.org

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

# भारत की साइबर सुरक्षा व रणनीति

डॉ. कुलदीप सिंह

राजनीति विज्ञान

Paper Rcevied date

05/05/2025

Paper date Publishing Date

10/05/2025

DOI

https://doi.org/10.5281/zenodo.15453396

IMPACT FACTOR

5.924

## ABSTRACT

इन्टरनेट के युग में संगठन साइबर हमलों से खुद को सुरक्षित रखने के लिये आईटी इनहास्ट्रक्चर पर बहुत अधिक निर्भर हैं। जैसे-जैसे अधिक से अधिक संगठन डिजिटल परिवर्तन को अपना रहे हैं, साइबर अपराध का जोखिम तेजी से बढ़ रहा है इसलिए साइवर सुरक्षा का महत्व नी वह रहा है। साइबर सुरक्षा एक ऐसा कवच बन गई है जो हमेशा चमकता रहता है। मजबूत साइबर सुरक्षा नीति और बुनियादी ढाँचा मिलकर कंप्यूटर सिस्टम और नेटवर्क को अनधिकृत इमले या पहुँच से सुरक्षित रखता है। व्यवसाय, व्यक्ति और सरकारें टैकर्स के खिलाफ अपनी संपत्तियों और डेटा की सुरक्षा में साइबर सुरक्षा के लाभों को प्राप्त करने के लिए भारी निवेश कर रही हैं। आज की प्रतिस्पर्धी दुनिया में किसी भी व्यवसाय को जीवित रहने के लिए, उसे सही उपकरण और साइवर सुरक्षा रणनीति की आवश्यकता होती है।

### साइबर सुरक्षा व उसका उद्देश्य

साइबर सुरक्षा, सूचना जोखिमों और कमजोरियों को कम करके कंप्यूटर सिस्टम और नेटवर्क को अनधिकृत पहुँच या अन्यथा क्षतिग्रस्त होने या दुर्गम होने से बचाने का अभ्यास है। सूचना जोखिमों में अनधिकृत पहुँच अवरोधन, उपयोग, प्रकटीकरण या डेटा विनाश शामिल हैं। साइबर सुरक्षा का उद्देश्य डेकर्स, स्पैमर्स और साइबर अपराधियों द्वारा किए गए।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

दुर्भावनापूर्ण हमलों से उपकरणों और सेवाओं की सुरक्षा के लिए एक बाल के रूप में कार्य करता है। संगठन फिटिंग योजनाओं, रॅनसमवेयर हमलों पहचान की चोरी, डेटा उल्लंघनों और संभावित वित्तीय नुकसान सहित विभिन्न खतरों से छुद को बचाने के लिऐ इस महत्वपूर्ण अभ्यास को अपनाते हैं। साइबर हमले का उद्देश्य संवेदनशील डेटा तक अनधिकृत पहुंच प्राप्त करना है। डेकर सिस्टम में घुसपैठ करने के लिए विभिन्न तकनीकों का उपयोग करते हैं, या तो महत्वपूर्ण डेटा को नष्ट करने या उसमें हेरफेर करने की कोशिश करते हैं। इस तरह की घुसपैठ के पीछे का मकसद अराजकता पैदा करने से लेकर रणनीतिक लाभ के लिए किसी साइबर सुरक्षा, सूचना जोखिमों और कमजोरियों को कम करके कंप्यूटर सिस्टम और नेटवर्क को अनधिकृत पहुँच या अन्यथा क्षतिग्रस्त होने या दुर्गम होने से बचाने का अभ्यास है। सूचना जोखिमों में अनधिकृत पहुँच अवरोधन, उपयोग, प्रकटीकरण या डेटा विनाशा शामिल हैं। साइबर सुरक्षा का उद्देश्य डेकर्स, स्पैमर्स और साइबर अपराधियों द्वारा किए गए कमजोरी का फायदा उठाना तक हो सकता है। कमी-कनी, साइबर अपराधी अवैध रूप से संवेदनशील जानकारी प्राप्त करके और पीड़ित को धमकाकर जबरन वसूली की रणनीति अपना सकते हैं। ये खतरे सूचना के प्रकटीकरण से लेकर फिरौती के बदले में डेटा डेरपोर तक हो सकते हैं। यह इमला संगठनों को अनिश्चित स्थिति में डालता है, जिससे इस तरह की बलपूर्वक कार्रवाई को रोकने के लिए मजबूत साइबर सुरक्षा उपायों की आवश्यकता पर बल मिलता है।

व्यवसाय तथा संस्थानों को नुकसान पहुंचानाः

डेकर्स व्यापार रहस्यों और बौद्धिक संपदा जैसी मूल्यवान जानकारी को निशाना बनाते हैं। उनका उद्देश्य वाली संपत्तियों को चुराकर और उजागर करके किसी प्रतिस्पर्धी के व्यवसाय को महत्वपूर्ण नुकसान पहुंचाना है। व्यापार रहस्यों को उजागर करने से प्रतिस्पर्धात्मक बढ़त खो सकती है, जिससे लाभप्रदता और बाजार की स्थिति प्रभावित हो सकती है। कुछ साइबर हमले किसी संगठन के नियमित संचालन को बाधित करने पर केंद्रित होते हैं। इसमें डिस्ट्रिब्यूटेड डेनियल ऑफ सर्विस इमले जैसी रणनीतियां शामिल हो सकती हैं, जिनका उद्देश्य सिस्टम और नेटवर्क को प्रभावित करना है। इसका उद्देश्य अराजकता पैदा करना, व्यावसायिक गतिविधियों में बाधा डालना और संभावित रूप से वित्तीय नुकसान पहुंचाना है। ऐसे विघटनकारी खतरों को कम करने के लिए साइबर सुरक्षा उपाय आवश्यक है। उल्लंघनों के कारण संगठन के ग्राहक आधार के बीच विश्वास की हानि होती है। आज के डिजिटल युग में साइबर सुरक्षा के महत्व को कम करके नहीं आंका जा

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

सकता। आज की आपस में जुड़ी दुनिया में एक नी सुरक्षा उल्लंघन के गंभीर परिणाम होते हैं, जिसके परिणामस्वरूप नारी वित्तीय नुकसान और डेटा हानि होती है, साथ ही इसकी प्रतिष्ठा को भी नुकसान पहुंचता है। साइवर सुरक्षा का महत्व एवं विशेषताऐं साइबर सुरक्षा महत्वपूर्ण है क्योंकि यह संगठनात्मक परिसंपत्तियों और सेवाओं को दुर्भावनापूर्ण हमलों से बचाती है और सभी प्रकार के डेटा की सुरक्षा करती है, जिसमें संवेदनशील डेटा संरक्षित स्वास्थ्य सूचना (पीएचआई) और व्यक्तिगत रूप से पहचान योग्य जानकारी (पीआईआई) शामिल है, लेकिन यह चोरी और हानि तक सीमित नहीं है। साइबर सुरक्षा प्रमाणन प्राप्त करने से आपको घोखाघड़ी और ऑनलाइन हमलों से खुद को बचाने में मदद मिल सकती है! साइबर हमलों के कारण विनियामकों की ओर से जुर्माना लगाया जाता है और ग्राढक दावा करते हैं, जिसके परिणामस्वरूप बिक्री और राजस्य में कमी आती है, जिससे निरंतरता के महत्वपूर्ण पहलू प्रभावित होते हैं। इसके अतिरिक्त, साइबर अपराधा दैनिक संचालन को रोक सकते हैं। प्रौद्योगिकी के विकास के साथ, परिष्कृत हैकिंग पद्धतियां विकसित हुई हैं। आईटी टीम को साइबरस्पेस में तेजी से हो रहे बदलावों के साथ अपडेट रहना चाहिए। उपकरणों, तकनीकों और सहायता के साथ-साथ व्यापक ज्ञान से सुसज्जित एक कुशल आईटी टीम सबसे उन्नत साइबर अपराध को भी कुशलतापूर्वक संभाल सकती है। व्यक्तिगत डेटा व्यक्तियों और व्यवसाय मालिकों के लिए सबसे मूल्यवान संपत्तियों में से एक है। हालाँकि, मैलवेयर और वायरस आपकी व्यक्तिगत जानकारी तक पहुँच सकते हैं और कर्मचारियों, ग्राहकों या संगठनों की गोपनीयता को खतरे में डाल सकते हैं। साइबर सुरक्षा आंतरिक और बाहरी खतरों से डेटा की सुरक्षा करती है, चाहे ये आकस्मिक डों या दुर्भावनापूर्ण इरादे से, और कर्मचारियों को साइबर हमलों के खतरों के बिना आवश्यकतानुसार इंटरनेट तक पहुंचने में मदद करती है। जैसे-जैसे प्रौद्योगिकी विकसित हो रही है, साइबर अपराधी डेटा चोरी करने के लिए परिष्कृत तरीके अपना रहे हैं। वायरस नेटवर्क, वर्कपलो और कामकाज को प्रभावित करके उत्पादकता पर नकारात्मक प्रभाव डालते हैं। फर्म के डाउनटाइम के कारण संगठन टप्प पड़ सकता है। स्वचालित बैकअप और बेहतर फायरवॉल जैसे उपायों से फर्म अपनी उत्पादकता में सुधार कर सकती हैं, जो इसे साइबर सुरक्षा के सबसे आशाजनक लामों में से एक बनाता है। किसी भी गठन के लिएदक प्रतिवारण और ब्रांड निष्ठा बनाने में वर्षों लग जाते हैं। डेटा उल्लंघनों से व्यवसाय की प्रतिष्ठा को बहुत नुकसान पहुंचता है साइवर सुरक्षा प्रणाली के साथ संगठन अप्रत्याशित उल्लंघनों को कम कर सकते हैं। नेटवर्क सुरक्षा और क्लाउड सुरक्षा जैसी तकनीकें पहुँच और प्रमाणीकरण को मजबूत कर सकती हैं। इससे

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

भविष्य की संस्तुतियों, उपक्रमों और विस्तारों के लिए मार्ग खुल सकता है। रिमोट वर्किंग मॉडल ने अलग-अलग स्थानों से काम करने वाले कर्मचारियों को अपने वर्कफलो के लिए कई रिमोट मॉडल तक पहुँचने के लिए प्रेरित किया है। संगठनों के लिए अपने संवेदनशील डेटा को दुनिया भर में प्रसारित करना परेशान करने वाला हो सकता है, जहाँ साइबर और सूचना सुरक्षा के खिलाफ अपराध व्यक्तिगत उपकरणों, उपकरणों, ब्लूटूथ, ४४ आदि जैसे चैनलों के माध्यम से हो सकते हैं। संवेदनशील डेटा, रणनीति और विश्लेषण हमेशा एक होने और लीक होने के प्रति संवेदनशील होते हैं। हालाँकि, साइवर सुरक्षा डेटा को संग्रहीत करने के लिए एक सुरक्षित केंद्र के रूप में कार्य करती है और घर के वाई-फाई को उपयोगकर्ताओं के डेटा को ट्रैक करने से भी बचा सकती है।

साइबर हमले व सुरक्षा नीति पहल

डाल के वर्षों में, कई व्यवसाय और व्यक्ति विनाशकारी परिणामों के साथ हाई प्रोफाइल साइबर हमलों का लक्ष्य रहे हैं। इनके परिणामस्वरूप सामाजिक सुरक्षा नंबर क्रेडिट कार्ड की जानकारी, बैंक खाते के विवरण और संवेदनशील डेटा लीक की चोरी हो सकती है। इन हमलों ने संगठनों को मजबूत साइबर सुरक्षा उपायों के महत्व को समझने में मदद की है। निम्नलिखित साइबर हमलों के सबसे आम प्रकार हैं जिनका शिकार व्यक्ति और संगठन होते हैं मैलवेयर यह वायरस, ट्रोजन और वर्म्स जैसे सभी हानिकारक सॉफ्टवेयर को संदर्भित करता है जो कंप्यूटर सिस्टम को नुकसान पहुंचाने के इरादे से लिखा गया कोड या प्रोग्राम है। मैलवेयर कई प्रकार के होते हैं जैसे वायरस, वर्म्स, रैनसमवेयर, स्पाइवेयर एडवेयर और ट्रोजन।

वायरस : अपने जैविक समकक्षों की तरह, वे खुद को पुनः उत्पन करते हैं और उन्हें अन्य कंप्यूटरों में फैलाते हैं। ये फाइलों को दूषित कर सकते हैं, डेटा चुरा सकते हैं, या आपके कंप्यूटर को निष्क्रिय नी कर सकते हैं।

वस : वायरस की तरह, ये एक मशीन से दूसरी मशीन में फैल सकते हैं, लेकिन उन्हें खुद को दूसरी फाइलों से जोड़ने की जरूरत नहीं होती। तेजी से फैलने का कारण सॉफ्टवेयर से जुड़ी कमजोरियाँ हो सकती हैं।

ट्रोजन: असली होने का दिखाया करने वाले इन एप्लिकेशन को इंस्टॉल करने के बाद, ये आगे बढ़कर आपका डेटा चुरा लेंगे और अन्य मैलवेयर इंस्टॉल कर देंगे या आपकी मशीन को खराब कर देंगे।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

रैनसमवेयर: यह आपके दस्तावेजों को एन्क्रिप्ट कर देता है ताकि आप उन्हें दोबारा न देख सकें। इसके बाद हमलावर डिक्रिप्शन में इस्तेमाल की गई कुंजियों के बदले में फिरौती की मांग करते हैं।

स्पायवेयर इस प्रकार का सॉफ्टवेयर आपकी व्यक्तिगत जानकारी चुरा लेता है, जिसमें ब्राउजिंग इतिहास, लॉगिन क्रेडेंशियल और वित्तीय डेटा शामिल हैं। फिशिंगः इस तरह के सोशल इंजीनियरिंग हमलों में अवसर पीड़ितों को घोखा देकर उनकी निजी जानकारी का खुलासा किया जाता है। ये आम तौर पर ईमेल या टेक्स्ट संदेश भेजते हैं जो किसी शांत स्रोत से आए प्रतीत होते हैं, जैसे कि आप जिस बैंक से बैंकिंग कर रहे हैं या आपका कार्ड जारीकर्ता। ईमेल या टेक्स्ट में एक लिंक हो सकता है जो क्लिक करने पर एक प्रामाणिक वेबसाइट जैसा दिखता है। जब आप नकलीसाइट पर अपना विवरण दर्ज करते हैं, तो ये अपराधियों द्वारा चुरा लिए जाते हैं। इस तरह के हमले के दौरान, अपराधी आपके बैंक जैसे किसी अन्य व्यक्ति के साथ आपके संचार को सुन सकता है। इसके अलावा, यह आपकी व्यक्तिगत जानकारी भी चुरा सकता है।

सुरक्षा सायबर की पहल

· सायबर सुरक्षा नीति- इस निति का उददेश्य नगरिको व्यवसायों और

सरकार के लिए सुरक्षित और लचिला सायबर स्पेस बनाना यद सायवर

स्पेश की जानकारी और बुनियादी ढांचे की सुरक्षा सायबर हमलों को रोकने और उनका जवाब देने की क्षमता बनाने और संस्थागत संरचनाओं की रणनिति की रूपरेखा तैयार करता है।

· सायबर सुरक्षित भारत पहल- यह पहल सायबर अपराधों के बारे में जागरूकता बढ़ने और सभी सरकारी विभागों में मुख्य सूचना सुरक्षा अधिकारियों और अग्रीम पंवती के आईटी कर्मचारियों के लिए सुरक्षा उपाय बनाने के लिए शुरू की गई थी।

· कम्प्यूटर आपातकारी प्रतिक्रिया टीमः- यह इलेक्ट्रोनिक सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय का एक संगठन है जो सायवर घटनाओं पर सूचना एकत्रित विश्लेषण और प्रसार करता है सायबर सुरक्षा घटनाओं पर अलर्ट भी जारी करता है।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

**निष्कर्ष**

**भारत को सरकारी और निजी क्षेत्र के प्रतिभागियों के साथ एक सायबर सुरक्षा बोर्ड की सुरक्षा करनी चाहिए जिसके पास किसी महत्वपूर्ण सायबर घटना के बाद बैठक आयोजित करने घटित घटना का विश्लेषण करने और सायबर सुरक्षा सुधार के लिए दोस सिफारिस करने का अधिकार हो ।**

**सायबर सुरक्षा की चुनौतियों का सामना करने में भारत अकेला नहीं क्योकि सायबर हमले राष्ट्रीय सीमा को पार करते है और वैश्विक समुदाय को प्रभावित करते हैं। भारत को क्षेत्रीय और द्विपक्षीय वार्ताओं और पहलूओं में अधिक सक्रियता से भाग लेने की आवश्यकता है जैसे कि आसियान क्षेत्रीय मंच, ब्रिक्स और भारत अमेरिका सायबर सुरक्षा मंच जैसे द्विपीक्षय मंच ताकि विश्वास और आत्मविश्वास का निर्माण हो सके।**

**संदर्भ**:-

1. **टाइम्स ऑफ इण्डिया**

2. **सायबर सिक्योरिटी** (**बी.सिंह**)

3. **ईन्टरनेट विधि एवं सायबर अपराध** (**तलत फातिमा**)

4. **भारत में सायबर अपराध** (**डॉ. ललित कुमार**)

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

# रूस - यक्रेन युद्ध व भारतीय अर्थव्यवस्था पर प्रभाव

**डॉ. कुलदीप सिंह**

**राजनीति विज्ञान**

**Paper Rcevied date**
05/05/2025

**Paper date Publishing Date**
10/05/2025

**DOI**
https://doi.org/10.5281/zenodo.15453408

IMPACT FACTOR
5.924

## परिचय

रूस-यूक्रेन संकट का वैश्विक अर्थव्यवस्था पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा है, और भारतीय व्यवसाय भी इसके प्रभावों से अछूते नहीं रहे हैं। इस संघर्ष के कारण आपूर्ति श्रृंखलाओं में व्यवधान उत्पन्न हुआ है, इनपुट लागत में वृद्धि हुई है, और निर्यात की मांग में कमी आई है। इसके कारण वैश्विक अर्थव्यवस्था में निश्चितता और अस्थिरता भी बढ़ी है, जिससे भारतीय व्यवसायों के लिए भविष्य की योजना बनाना और भी मुश्किल हो गया है। 24 फरवरी 2022 को शुरू हुआ यूक्रेन पर रूस का पूर्ण आक्रमण कोई अलग-थलग घटना नहीं थी। एक अर्थ में इसे स्वतंत्र यूक्रेन और मास्कों में उसके पूर्व शासकों के बीच तनाव की परिणति के रूप में देखा जा सकता है। दोनों देशों के इतिहास सदियों से एक दूसरे से जुड़े हुये हैं।

**यूक्रेन और रूस के बीच मतभेदों के मूल क्या हैं?**

यूक्रेन और रूस दोनों ही अपनी उत्पत्ति कीवियन रस से मानते हैं, नौवीं शताब्दी एक प्रारंम्भिक मव्ययुगीन राज्य था। उस क्षेत्र में रहने वाले लोग जटिल सामाजिक राजनैतिक और ऐतिहासिक प्रक्रियाओं के परिणामस्वरूप बहुत बाद में खुद को रूसी या यूक्रेनी मानने लगे।

**रूस - यूक्रेन युद्ध कैसे शुरू हुआ**

**रूस-यूक्रेन संकट** 2014 **में शुरू हुआ, जब यूक्रेन के रूस समर्थक राष्ट्रपति विवटर यानुकोविच को कई विरोध प्रदर्शनों के बाद सत्ता से हटा दिया गया था। रूस ने यूक्रेन से क्रीमिया प्रायद्वीप को अपने में मिला लिया और पूर्वी डोनवास क्षेत्र में रूस समर्थक अलगाववादियों का समर्थन किया। इस संकट की शुरुआत में कई कारक शामिल हैं, जिनमें शामिल है**

**यूक्रेन की रणनीतिक स्थिति: यूक्रेन रूस और पश्चिम के बीच स्थित है, और दोनों पक्ष इसे रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण देश के रूप में देखते हैं।**

**यूक्रेन की नाटो में शामिल होने की इच्छा यूक्रेन ने नाटो ने शामिल होने की इच्छा व्यक्त की है, जो एक पश्चिमी सैन्य गठबंधन है जिसे रूस अपनी सुरक्षा के लिए खतरा मानता है।**

**रुस द्वारा यूक्रेन के पश्चिम के साथ एकीकरण का विरोध: रूस ने यूक्रेन के**

**पश्चिम के साथ एकीकरण के प्रयासों का विरोध किया है, तथा उसने यूक्रेन की संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता को कमजोर करने के लिए कदम उठाए हैं। रूस - यूक्रेन संकट के कारण यूक्रेन में मानवीय संकट पैदा हो गया है, जिसके कारण लाखों लोग अपने घरों से विस्थापित हो गए हैं। इसका वैश्विक अर्थव्यवस्था और सुरक्षा परिदृश्य पर भी महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा है।**

**भारतीय व्यवसायों पर प्रभाव**

**कमजोर रुपयाः यूक्रेन पर रूती आक्रमण के कारण भारतीय संपत्तियों की बिक्री हुई है और रुपये का अवमूल्यन हुआ है। इससे भारतीय व्यवसायों के लिए वस्तुओं और सेवाओं का आयात करना अधिक महंगा हो गया है और वैश्विक बाजार में उनकी प्रतिस्पर्धात्मकता भी कम हो गई है।**

**वैश्विक अर्थव्यवस्था में अनिश्चितता और अस्थिरता बढ़ी:**

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

इस संकट के कारण वैश्विक अर्थव्यवस्था में अनिश्चितता और अस्थिरता भी बढ़ी है। इससे भारतीय व्यवसायों के लिए भविष्य की योजना बनाना और निवेश संबंधी

निर्णय लेना अधिक कठिन हो गया है।

निर्यात की मांग में कमी:

युद्ध के कारण भारत समेत कई देशों से निर्यात की मांग में भी कमी आई है। इसके कई कारण हैं, जिनमें कमजोर वैश्विक अर्थव्यवस्था, आपूर्ति श्रृंखलाओं में व्ययवान और रूस और बेलारूस पर प्रतिबंध लगाना शामिल है। भारतीय व्यवसाय इन चुनौतियों का कई तरह से जवाब दे रहे हैं। कुछ व्यवसाय घरेलू स्तर पर ज्यादा इनपुट खरीदकर आयात पर

अपनी निर्भरता कम करने की कोशिश कर रहे हैं। अन्य रूस और यूक्रेन पर अपनी निर्भरता कम करने के लिए अपने निर्यात बाजारों में विविधता लाने की कोशिश कर रहे हैं। फिर भी, अन्य उच्च इनपुट लागत के प्रभाव को कम करने के लिए लागत में कटौती के उपाय लागू कर रहे हैं।

वैश्विक अर्थव्यवस्था में परिवर्तन

विवैश्वीकरण: युद्ध से विवैश्वीकरण की प्रवृत्ति में तेजी आने की संभावना है, क्योंकि देश जायात और अंतर्राष्ट्रीय आपूर्ति श्रृंखलाओं पर अपनी निर्भरता कम करना चाहते हैं। इससे भारतीय व्यवसायों के लिए वैश्विक बाजार में काम करना और भी मुश्किल हो सकता है।

आत्मनिर्भरता पर अधिक ध्यान युद्ध के कारण आत्मनिर्भरता पर अधिक व्यान देने की संभावना है, क्योंकि देश महत्वपूर्ण वस्तुओं और सेवाओं के आयात पर अपनी निर्भरता कम करना चाहते हैं। इससे भारतीय व्यवसायों के लिए उन वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन और निर्यात करने के अवसर पैदा हो सकते हैं जिनका वर्तमान में आयात किया जाता है।

कुछ भारतीय व्यवसाय अधिक प्रभावित-

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

**यूजन में**

**युद्ध के कारण तेल और गैस की कीमतों में भारी वृद्धि हुई है। इसका उन व्यवसायों पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा है जो इन वस्तुओं पर निर्भर हैं, जैसे**

**एयरलाइंस, शिपिंग कंपनियाँ और पेट्रोकेमिकल कंपनियाँ । विनिर्माणरू युद्ध ने आपूर्ति श्रृंखलाओं को भी यावित किया है, जिससे निर्माताओं के लिए आवश्यक कच्चे माल और घटकों को प्राप्त करना मुश्किल और महंगा हो गया है। इसका ऑटोमोटिव इलेक्ट्रॉनिक्स और मशीनरी सहित कई उद्योगों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा है। कृषि: इस संकट ने वैश्विक खाद्य आपूर्ति को भी वावित किया है। युद्ध के कारण खाद्य पदार्थों की कीमतें बढ़ गई हैं और कुछ वस्तुओं की कमी हो गई है। इसका खाद्य और पेय उद्योग के साथ-साथ उपभोक्ताओं पर भी नकारात्मक प्रभाव पड़ा है पर्यटन: दोनों देशों के बीच संघर्ष और उसके बाद रूस पर लगे प्रतिबंधों के कारण दोनों देशों में पर्यटन में गिरावट आई है। इसका पर्यटन और आतिथ्य उद्योग के कारोवार पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा है।**

**भारतीय व्यवसायों को निम्नलिखित पर**

**ध्यान केंद्रित करना चाहिए:**

**आयात पर अपनी निर्भरता कम करें व्यवसायों को घरेलू स्तर पर या अन्य देशों से अधिक इनपुट प्राप्त करने के तरीके तलाशने चाहिए। इससे आपूर्ति श्रृंखला में व्यवधान और मुद्रा में उतार-चढ़ाव के प्रति उनके जोखिम को कम करने में मदद मिलेगी। नवाचार में निवेश करें व्यवसायों को नए उत्पादों और प्रक्रियाओं को विकसित करने के लिए अनुसंधान और विकास में निवेश करना चाहिए। इससे उन्हें वैश्विक बाजार में प्रतिस्पर्धी बने रहने और अपने ग्राहकों की बदलती जरूरतों को पूरा करने में मदद मिलेगी।**

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

**निष्कर्ष**

**रूस-यूक्रेन संकट ने निस्संदेह भारतीय व्यवसायों पर अपनी छाप छोड़ी है, जिससे अभूतपूर्व चुनौतियों और अनिश्चितताओं का दौर शुरू हो गया है। ये प्रभाव विभिन्न तरीकों से प्रकट होते हैं, जैसे इनपुट जगत में वृद्धि और आपूर्ति श्रृंखला में व्ययवान से लेकर कमजोर रुपया और वैश्विक अस्थिरता में वृद्धि ।**

**भारतीय व्यवसाय अनुकूलनशीलता के साथ प्रतिक्रिया दे रहे हैं, आपूर्ति श्रृंखलाओं में विधिवता ला रहे हैं, नए निर्यात बाजारों की खोज कर रहे हैं, तथा लागत में कटौती के उपाय अपना रहे हैं। हालांकि इस संकट के दीर्घकालिक परिणाम अनिश्चित बने रह सकते हैं, लेकिन यह स्पष्ट है कि यह विवैश्वीकरण और आत्मनिर्भरता की ओर बदलाव को तेज करेगा। भारतीय व्यवसायों को इन परिवर्तनों द्वारा प्रस्तुत अवसरों का लाभ उठाना चाहिए। भारतीय व्यवसायों को आयात पर निर्भरता कम करने, निर्यात बाजारों में विधिवता लाने और अनुसंधान एवं विकास में निवेश करने को प्राथमिकता देनी चाहिए। इसके अलावा, जोखिम प्रबंधन क्षमताओं को मजबूत करना, आपूर्तिकर्ताओं और ग्राहकों के साथ मजबूत संबंध बनाना, संचालन को अंतर्राष्ट्रीय बनाना और अन्य व्यवसायों के साथ सहयोग को बढ़ावा देना अप्रत्याशित वैश्विक परिदृश्य को नेविगेट करने में महत्वपूर्ण होगा जो उभरने की संभावना है।**

**संदर्भ**-

1. **टाइम्स ऑफ इंडिया**

2. **आनन्द जे.सी.** (**रूस यूक्रेन क्राइसस इफेक्ट ऑन इंडिया**)

3. **जी. डी. यवती** (**दा रूस यूक्रेन वार**)